# सेवास्तोपोल का घेरा

# सेवास्तोपोल का घेरा

लेखक :

**तालस्ताय**



अनुवादक :

**राजनाथ, एम. ए.**

प्र भा त  प्र का श न

प्रकाशक :

**प्रभात प्रकाशन**

**मथुरा**

❊

१९५७

❊



❊

मूल्य :

तीन रुपया

❊

मुद्रक :

**आगरा फाइन आर्ट प्रेस**

**आगरा**

# भूमिका
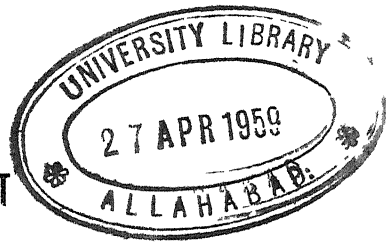
लियो तोल्स्तोय संसार के अन्यतम कथाकारों में हैं। यद्यपि उनका जन्म अभिजातवर्ग में हुआ था, फिर भी अपने उपन्यासों में उन्होंने इस वर्ग के अत्याचारों और उसकी दुरंगी संस्कृति का सजीव चित्रण किया है। भारतीय लेखक प्रेमचन्द की तरह उनका दृष्टिकोण जन-साधारण का दृष्टिकोण है। उनके हृदय में गहरी सहानुभूति है जिससे वह मनुष्य के दुखों और पीड़ाओं के अद्वितीय चित्रकार बन सके हैं। रूसी जनता के विकास और उसकी संस्कृति को समझने के लिए गोर्की के साथ तोल्स्तोय का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है।

सेवास्तोपोल की कहानियों में वह पाठक को युद्धभूमि में ले जाते हैं। युद्ध का चित्रण बहुत से लेखकों ने किया है लेकिन उन्नीसवीं सदी में बहुत कम ऐसे लेखक थे जिन्होंने काल्पनिक चित्रों के बदले युद्ध की वास्तविक वीभत्सता का चित्रण किया हो। तोल्स्तोय उस यथार्थवाद की प्रशस्त धारा के प्रतिनिधि हैं जिसने रूसी साहित्य की भूमि को विशेष रूप से सींचा था। जैसा कि उन्होंने इस पुस्तक में स्वयं लिखा है, "यहाँ तुम भयानक और हृदय को चूर-चूर कर देने वाले दृश्य देखोगे: तुम युद्ध को सजी सजाई करीने से खड़ी सेना, फौजी संगीत, ढोलों का तीव्र निनाद, लहराते झंडे और नाचते घोड़ों पर सवार सेनापतियों के भव्य रूप में न देख कर युद्ध को अपने असली रूप में देखोगे—खून, हाहाकार और मृत्यु के रूप में।" तोल्स्तोय की यह

उक्ति कितनी सत्य है, यह इस पुस्तक को पढ़कर आप अच्छी तरह समझ सकेंगे।

तोल्स्तोय की वर्णन शक्ति अद्भुत है। उनकी दृष्टि से छोटी-बड़ी बातें, ोई भी ओझल नहीं होने पातीं। सभी को एक विशाल चित्रपट पर सजाकर वह मन पर एक झकझोरने वाले प्रभाव छोड़ जाते हैं। हर पात्र के साथ वह ऐसे तन्मय होकर आगे बढ़ते हैं कि लगता है कि हर किसी ने उन्हें अपने मन की बात बताई होगी और उन्होंने उसे कल्पना का सहारा लिए बिना यहाँ दोहरा भर दिया है। तोल्स्तोय को हत्या और नरसंहार से घृणा थी। उन्हें मानव जीवन से असीम स्नेह था। साथ ही अपने देशवासियों की वीरता पर आस्था और गर्व भी था। आज का युद्ध कौशल और नर संहार के साधन बदल गये हैं। युद्ध की वीभत्सता पहले से कहीं अधिक बढ़ गयी है। तोल्स्तोय की कृतियाँ इस युग में भी मानव-चेतना का संस्कार करके, मनुष्य को युद्ध की विभीषिका के प्रति सचेत करके और उसे मानवता की सुधि दिलाकर शान्ति के लिए सङ्गठित होने की प्रेरणा देती हैं। उनकी कला युद्ध और हिंसा के युग से उबर कर नयी मानव-मूर्ति गढ़ने के लिए चिरंतन प्रेरणा है।

श्री राजनाथ शर्मा रूसी लेखकों की अनेक कृतियों का सफल अनुवाद कर चुके हैं। उनकी भाषा सरल और मूलकृति के भावों की रक्षा करने में समर्थ होती है। आशा है, हिन्दी पाठकों को यह पुस्तक भी रुचिकर प्रतीत होगी।

आगरा
१५-२-५७

**रामविलास शर्मा**
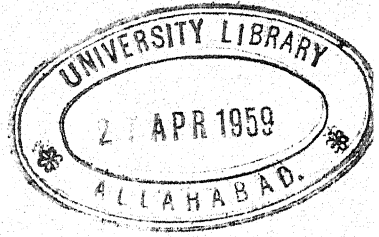
## तॉल्स्ताय की अन्य कृतियाँ

| | |
|---|---|
| युद्ध और शान्ति | ६) |
| पुनर्जीवन | ६) |
| अन्ना करेनिना | ३) |
| श्रेष्ठ कहानियाँ | ३) |

# सेवास्तोपोल

## दिसम्बर

सापुन पहाड़ी के ऊपर आसमान को उषा की लालिमा ने अभी-अभी हल्के रंगों से रंगना प्रारम्भ किया है। समुद्र ने अपनी गहरी नीली सतह से रात्रि के अन्धकार को उतार फेंका है और सूर्य की पहली किरण की प्रतीक्षा कर रहा है जिसे देख प्रसन्नता से खिल उठे। खाड़ी में से ठंडा हल्का कुहरा धीरे-धीरे ऊपर उठता चला आ रहा है। बर्फ का कहीं नाम निशान भी नहीं है—चारों तरफ अंधेरा छा रहा है मगर सुबह का फुसफुसा पाला गालों में चिकोटी सी काट रहा है और पैरों नीचे जमीन कुरमुरा उठती है। केवल दूर से निरन्तर आती हुई समुद्र की मर्मर ध्वनि प्रभात की शान्ति को भंग कर रही है जो कभी-कभी सेवास्तोपोल में चलने वाली तोपों की प्रतिध्वनि में डूब जाती है। दूर खड़े जहाजों पर से आठ बजने के गजर की आवाज आती है।

उत्तरी मोर्चे पर दिन की चहल-पहल धीरे-धीरे रात्रि की शान्ति का स्थान लेती जा रही है। कहीं

बन्दूकों को खड़खड़ाती हुई सिपाहियों की एक टुकड़ी पहरा बदलने के लिए जा रही है; दूसरी तरफ एक डाक्टर तेजी से अस्पताल की तरफ लपका चला जा रहा है; कहीं एक सिपाही अपनी खाई में से बाहर निकल कर बर्फीले पानी से अपना साँवला मुँह धोता है और पूरब दिशा की तरफ मुँह कर, जो अब उषा की लालिमा से गुलाबी हो उठी है, प्रार्थना करता है, और बारबार तेजी से अपने ऊपर सलीब का निशान बनाता है। एक विशाल, भारी ऊँट गाड़ी, खून से लथपथ लाशों से ऊपर तक लदी, कब्रिस्तान की तरफ उन्हें दफनाने के लिए लिए जा रही है। तुम घाट के पास पहुँचते हो—कोयले, गोबर, सीलन और गोश्त की मिली-जुली सी एक विचित्र गन्ध तुम्हारे नथुनों में भर जाती है। यहाँ हजारों, तरह-तरह की चीजें—जलाने की लकड़ी, गोश्त, मोर्चेबन्दी के लिए मिट्टी की टोकरियाँ, आटे के बोरे, लोहा लक्कड़ आदि के अम्बार लगे हुए हैं। विभिन्न पल्टनों के सिपाही, कुछ बोरियाँ और बन्दूकें लादे तथा कुछ बिल्कुल खाली, तम्बाखू का धुंआ उड़ाते, गालियाँ बकते वहाँ भीड़ लगाए हुए हैं और चिमनी से धुंआ उगलते घाट पर खड़े एक स्टीमर पर सामान चढ़ा रहे हैं। तरह-तरह के व्यक्तियों—सिपाहियों, मल्लाहों, व्यापारियों और औरतों से भरी हुई नावें आ जा रही हैं।

"आप्सकाया जा रहे हैं, हुजूर ? मैं आपको ले चलूँगा !" दो या तीन अवकाश प्राप्त मल्लाह अपनी-अपनी नावों पर खड़े हुए, आपकी सेवा करने को उद्यत, आवाज लगाते हैं।

तुम अपने सबसे पास वाली नाव चुनते हो, नाव के पास ही पड़े हुए आधे गले घोड़े के एक ढाँचे पर चढ़ते हो और नाव के एक कौने में पतवार की घिरनी के पास जा बैठते हो। तुम्हारी नाव किनारा छोड़ कर चल पड़ी है। तुम्हारे चारों तरफ समुद्र ही समुद्र है जो अब सुबह की

किरणों में चमक रहा है। तुम्हारी तरफ मुंह किए ऊँट के बालों वाला कोट पहने एक बुड्ढा मल्लाह तथा लम्बे सिर वाला एक नौजवान लड़का जोर लगाकर चुपचाप पतवार चला रहे हैं। तुम खाड़ी में दूर-दूर तक फैले हुए रस्सियों से भरे हुए जहाजों को तथा उस चमकीले नीले समुद्र के पानी पर काले धब्बों की तरह चलने वाली नावों को, सुबह की किरणों से गुलाबी हो गईं शहर की सुन्दर इमारतों को जो दूसरे किनारे पर दिखाई दे रही हैं, समुद्र के जल से बाहर निकले डूबे हुए जहाजों के एकाकी खड़े मस्तूलों एवं पाल के डंडों के चारों तरफ उठने वाले झागों की सफेद कतारों को, चमकते हुए क्षितिज के पास, दूर क्षितिज के पास खड़े दुश्मन के जहाजी बेड़े की धुँधली शक्लों को और झाग से भरे भंवरों और पतवारों से उठे हुए खारी जल के नाचते बुलबुलों की तरफ गौर से देखने लगते हो। तुम पतवारों के पानी के गिरने की तालस्वरमय ध्वनि को, दूर किनारे से आती हुई आवाजों को और तोपों की उस शानदार गरज को सुनते हो, जो तुम्हें सेवास्तोपोल में बराबर बढ़ती जा रही प्रतीत होती है।

केवल यही विचार कि तुम सेवास्तोपोल में हो तुम्हारे हृदय में साहस और गर्व की भावना भर देता है और तुम्हारी नसें उत्साह से फड़कने लगती हैं।

"किन्स्टेनटिन[1] के बगल में होकर मोड़िये, सरकार," मल्लाह तुमसे कहता है और फिर मुड़ कर यह देखता है कि नाव को तुमने ठीक दिशा में दाहिनी ओर मोड़ा है या नहीं।

"इसकी सारी तोपें अब भी सही सलामत हैं!" वह लम्बे सिर वाला लड़का एक जहाज के बगल में से गुजरते हुए उसकी तरफ देख कर कहता है।

---

१—कोन्स्टेन्टाइन का अपभ्रंश नाम।

"हाँ, सब हैं ! नया जहाज है। इस पर कोर्नीलोव रहा था," वह बुड्ढा मल्लाह भी जहाज की तरफ देख कर कहता है।

"वह देखो ! उधर ! जहाँ वह फटा है !" काफी देर की चुप्पी के बाद वह लड़का एक नन्हे से सफेद घुलते हुए धुंए के बादल की तरफ देखकर कहता है जो एकाएक दक्षिणी मोर्चे पर उठ आया है और जिसके साथ ही एक तोप के गोले के फटने की तेज आवाज आती है।

"यह 'वही' नए तोपखाने से गोलावरी कर रहा है," बुड्ढा मल्लाह अपने हाथों पर लापरवाही से थूकते हुए कहता। "अच्छा मिश्का ! अब जोर से खेओ ! हमें उस बजरे से आगे निकल जाना है।" और खाड़ी की विस्तृत सतह पर तुम्हारी नाव तेजी से दौड़ने लगती है और सचमुच उस भारी ब को जा पकड़ती है जो गाँठों से लदा हुआ है तथा जिसे सुस्त सिपाही अनाड़ी हाथों से चला रहे हैं। तुम्हारी नाव ग्राफ्सकाया घाट पर चलने वाली तरह-तरह की नावों के बीच में से मार्ग बनाती हुई आगे बढ़ता है।

घाट शोर मचाते हुए खाकी वर्दी पहने सिपाहियों, काले कपड़े पहने मल्लाहों और रंग ि गे वस्त्र पहने औरतों की भीड़ से भर रहा है। औरतें तम्बाखू की फेद टिकियाँ बेच रहीं हैं और रूसी किसान भाप छोड़ते हुए समोवार लगाये चिल्ला रहे हैं—"गरम मसालेदार हलुवा।" घाट के बिल्कुल पास जंग लगे तोप के गोले, गोलियाँ और लोहे की तोपें इधर उधर छितरी पड़ी हैं। इससे कुछ दूर हट कर एक लम्बा चौड़ा खुला मैदान है जिसमें लम्बी बल्लियाँ, तोप ढोने वाली गाड़ियाँ और नीद में गाफिल सिपाही पड़े हैं। घोड़े, गाड़ियाँ, तोपों के हिस्से और हरे रंग की गोला बारूद ढोने वाली गाड़ियाँ और बन्दूकों की कतारें खड़ी हैं। सिपाही, मल्लाह, अफसर, औरतें, बच्चे और

व्यापारी आ जा रहे हैं। घास से लदी हुई गाड़ियाँ, बोरे और पीपे खड़खड़ा रहे हैं। जब-तब एक कज्जाक या कोई अफसर घोड़े पर सवार या टमटम में बैठा हुआ कोई जनरल गुजर जाता है। दाहिनी तरफ वाली सड़क बाढ़ बाँध कर रोक दी गई है जिसके छेदों में से तोपों की नालियाँ चमक रही हैं और पाइप पीता हुआ एक मल्लाह उनके पास बैठा है। बायीं तरफ एक सुन्दर इमारत खड़ी है जिसकी बरसाती पर रोमन लिपि में अंक खुदे हुए हैं और इसके बाहर खून से सने हुए स्ट्रेचर लिए सिपाही इन्तजार कर रहे हैं। चारों तरफ फौजी छावनी के अरुचिकर दृश्य दिखाई पड़ते हैं। तुम्हारे हृदय में प्रथम उठने वाली भावनायें निश्चित रूप से बड़ी दुखद होगीं। तुम सोचोगे कि यहाँ फौजी और नागरिक जीवन का, एक सुन्दर नगर और एक गन्दी छावनी का विचित्र मिश्रण है जो सुन्दर होना तो दूर रहा, अव्यवस्था की लड़खड़ाती हुई अवस्था में दिखाई पड़ता है। ऐसा लगता है मानो हरेक भयभीत है और निरुद्देश्य इधर उधर भागता फिर रहा है। और उसकी समझ में नहीं आ रहा कि वह क्या करे। परन्तु अगर तुम इन लोगों के चेहरों को पास से, और गौर से, देखो तो तुम्हें वहाँ कोई दूजरी ही चीज दिखाई देगी। मिसाल के लिए, इस लद्दू गाड़ी के सिपाही पर निगाह डालो जो तीन घोड़ों का पानी पिलाने के लिए ले जा रहा है और इतनी मस्ती से गुनगुनाता जा रहा है कि तुम्हें पूर्ण विश्वास हो जाता है कि वह इस रंगबिरंगी भीड़ में, जिसका उसके लिए अस्तित्व तक नहीं प्रतीत होता, केवल अपने साहस को ही स्थिर न रखेगा अपितु अपने हर प्रकार के कर्त्तव्य को, चाहे वह कैसा भी क्या न हो—घोड़ों को पानी पिलाना या तोपें चढ़ाना—इसी तरह शान्ति के साथ, विश्वास के साथ और स्थिरता के साथ पूरा करेगा मानो तुला या सारांस्क नामक नगरों में कर रहा हो। तुम यही भाव उस अफसर के चेहरे पर भी पाओगे जो

बगुले के पंखों के समान सफेद दस्ताने पहने वहाँ से गुजर रहा है। यही भाव तुम बाढ़ के पास तम्बाखू पीते हुए उस मल्लाह के चेहरे पर, पुराने असेम्बली हाल की बरसाती में स्ट्रेचर लिए इन्तजार करते उन सिपाहियों के चेहरे पर, और उस नौजवान लड़की के मुख पर पाओगे जो अपने गुलाबी फ्राक की झालर को गन्दा होने से बचाने के लिए एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूद कर नफासत के साथ चलता हुई सड़क को पार कर रही है।

हाँ, यह सच है कि सेवास्तोपोल में पहली बार आने पर तुम्हें निराशा ही होगी। तुम व्यर्थ ही लोगों के चेहरों पर बेचैनी, दृढ़ता या उत्साह, मौत के मुँह में कूदने या भयानक निश्चय की भावना ढूंढने का प्रयत्न करोगे परन्तु तुम्हें वहाँ इस तरह का कोई भाव नहीं दिखाई पड़ेगा। तुम अपने चारों तरफ साधारण व्यक्तियों को अपने साधारण कार्यों में व्यस्त आते जाते देखोगे और अपने आप को इस बात के लिए लताड़ने लगोगे कि व्यर्थ ही इतने अधिक उत्साहित हो रहे थे। और तुम्हें सेवास्तोपोल की रक्षा करने वालों के उस चित्र की पूर्णता के विषय में सन्देह होने लगेगा जिसे तुमने उत्तरी मोर्चे पर सुनी हुई कहानियों, दृश्यों और उस भयानक शोरगुल को देख सुनकर अपने दिमाग में खींच रखा था। मगर इससे पहले कि ऐसा सन्देह तुम्हारे दिमाग में घर करे तुम उन किलों के पास जाओ, सेवास्तोपोल के रक्षकों को उन स्थानों पर जाकर देखो जहाँ वे इसकी रक्षा कर रहे हैं और इससे भी बेहतर यह होगा कि तुम सड़क के उस पार, उस इमारत में जाओ जो किसी समय असेम्बली हाल थी—और जहाँ सिपाही स्टेचर लिए प्रतीक्षा में खड़े हैं। वहाँ तुम सेवास्तोपोल की रक्षा करने वालों को देखोगे, वहाँ तुम भयानक और दुखद, भव्य और मनोरंजक ऐसे दृश्य देखोगे जो आश्चर्यजनक और साथ ही महान भी होंगे।

तुम असेम्बली हाल के बड़े कमरे में घुसते हो। दरवाजा खोलते ही तुम्हें चालीस या पचास रोगियों के दृश्य और गन्ध का सामना करना पड़ता है। इन रोगियों में से कुछ के अङ्ग काट दिए गए हैं तथा कुछ बुरी तरह घायल हैं। कुछ चारपाइयों पर लेटे हैं मगर ज्यादा संख्या फर्श पर लेटने वालों की ही है। उस भावना की तरफ ध्यान मत दो जो तुम्हें दरवाजे पर ही जड़वत् खड़ा रहने को बाध्य करती है—यह एक बुरी भावना है—सीधे आगे बढ़ो और इस बात से लज्जित मत हो कि तुम इन मरीजों को सिर्फ देखने के लिए ही आए हो, उनके पास जाकर उनसे बातें करने में संकोच मत करो क्योंकि वे अभागे मनुष्य सहृदय व्यक्तियों को देखना पसन्द करते हैं, वे अपनी तकलीफों के बारे में बातें करना और हमदर्दी और रहम की बातें सुनना पसन्द करते हैं। तुम बिस्तरों के बीच में जाकर खड़े हो जाओ और ऐसे चेहरे की खोज करो जिस पर वेदना और कठोरता के भाव कम मात्रा में हों, जिसके पास जाकर तुम बातें कर सको।

"तुम्हारे चोट कहाँ लगी है?" तुम हिचकिचाते हुए और संकोच के साथ एक दुबले-पतले बुड्ढे सिपाही से पूछते हो जो अपनी खाट पर से तुम्हारी तरफ, अपने पास आकर बात करने का निमंत्रण देने वाली उत्सुक एवं कोमल दृष्टि से देख रहा है। मैंने कहा कि "संकोच के साथ पूछो," क्योंकि पीड़ा और दुख का दृश्य हृदय में केवल गहरी सहानुभूति की ही भावना उत्पन्न नहीं करता बल्कि इस बात का भी भय रहता है कि तुम्हारी बात से कहीं उस पीड़ित व्यक्ति की भावना को चोट न पहुँचे। साथ ही यह दृश्य रोगी के प्रति एक गहरे सम्मान का भाव भी उत्पन्न करता है।

"टांग में।" वह जवाब देता है। मगर तुम उसके कम्बल की सिकुड़नों से यह जान लेते हो कि उसकी एक टाँग जाँघ तक काट दी गई

है। "अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ, भगवान को धन्यवाद है," वह आगे कहता है, "मैं इन्तजार कर रहा हूँ कि कब छुट्टी मिले।"

"क्या तुम्हारे चोट लगे बहुत दिन हो गए ?"

"करीब छः हफ्ते हो गए, सरकार।"

"क्या इसमें अब भी दर्द होता है ?"

"नहीं, अब तो दर्द नहीं होता। अब बिल्कुल ठीक है। सिर्फ जब मौसम खराब होता है तब जांघ में दर्द जरूर होता है, वर्ना वैसे बिल्कुल ठीक हो गया है।"

"तुम्हारे चोट कैसे लगी थी ?"

"पाँचवें बुर्ज पर, सरकार ! जब वहाँ पहली बार गोलाबारी हुई थी। मैं अपनी तोप को निशाने पर लगा कर दूसरी दरार के पास जा रहा था कि मेरे पैर में आकर गोला लगा। मुझे ऐसा महसूस हुआ मानो किसी गढ़े में गिर गया हूं। किन्तु जब देखा तो पाया कि मेरी टांग ही गायब थी।"

"चोट लगते ही तुम्हारे दर्द नहीं हुआ था ?"

"नहीं। मुझे सिर्फ ऐसा लगा कि कोई गर्म चीज मेरे पैर से लिपट गई हो।"

"फिर क्या हुआ ?"

"बाद में भी कोई खास तकलीफ नहीं हुई। तकलीफ उस समय हुई जब वे चमड़ी को ऊपर चढ़ाने लगे। उस समय बड़ा दर्द हुआ था। सबसे बड़ी बात तो यह है सरकार कि ज्यादा सोचना नहीं चाहिए। न सोचे तो सब ठीक रहता है। ज्यादातर मुसीबतें इसीलिए आती हैं कि आदमी सोचता ज्यादा है।"

इसी समय धारीदार भूरी पोशाक पहने और काला रूमाल बांधे एक औरत तुम्हारे पास आती है और बातचीत में हिस्सा लेने लगती है। वह तुम्हें उस मल्लाह के बारे में, उसकी तकलीफ के बारे में, और उस स्थिति के बारे में जिसमें कि वह चार हफ्तों तक पड़ा छटपटाता रहा है, बतलाती है। साथ ही यह भी बतलाती है कि कब और कैसे उसके चोट लगी थी, किस तरह उसने अपना स्ट्रेचर उठाने वालों को इसलिए रुक जाने को कहा था कि वह अपने तोपखाने को एकबार और गोलाबारी करते हुए देखना चाहता था, किस तरह ग्रान्ड ड्यूक ने उससे बातें की थीं और उसे पच्चीस रूबल दिए थे, और किस तरह उसने उन लोगों से कहा था कि वह मोर्चे पर इसलिए वापस जाना चाहता है कि मौका पड़ने पर, खुद कुछ भी न कर सकने का हालत में भी, नौजवानों को सलाह तो दे ही सकेगा। वह औरत यह सब बातें एक सांस में कह जाती है और कहते समय पहले तुम्हारी तरफ और फिर उस मल्लाह की तरफ देखती है जो मुँह फेर लेता है और ऐसा भाव प्रकट करता है मानो उसकी बातों की तरफ ध्यान न दे रहा हो और अपने तकिए में से एक टुकड़ा फाड़ लेता है, । उस औरत की आँखें खुशी से चमक उठती हैं।

"यह मेरी औरत है, सरकार!" मल्लाह क्षमा-प्रार्थना सी करते हुए कहता है मानो कर रहा हो: "इसे क्षमा कर दीजिए। आप तो जानते ही हैं कि औरतें बेवकूफी की बातें किया करती हैं।"

तुम सेवास्तोपोल के रक्षकों को अब समझने लगते हो और किसी अज्ञात कारण वश, इस व्यक्ति की उपस्थिति में, तुम्हारी आत्मा तुम्हें कचोटने लगती है। तुम अनुभव करते हो कि अपनी सहानुभूति और श्रद्धा प्रकट करने के लिए तुम बहुत कुछ कहना चाह रहे हो मगर तुम्हें शब्द नहीं मिल पाते या जो शब्द तुम्हारे दिमाग में आते

हैं उन्हें तुम उचित नहीं समझते । और इससे पहले कि वह व्यक्ति अपने इन गुणों के प्रति अपना क्षोभ प्रकट करे तुम उसकी उस मूक, अज्ञात महावता और साहस के सामने चुपचाप श्रद्धा से शीश झुका देते हो ।

"भगवान तुम्हें जल्दी अच्छा करे," तुम उससे कहते हो और दूसरे मरीज के पास चले जाते हो जो फर्श पर लेटा हुआ है और भयानक दर्द से छटपटाता हुआ मौत का इन्तजार कर रहा है ।

उसके बाल सुन्दर हैं, चेहरा सूजा हुआ और पीला है । वह पीठ के बल लेटा है । उसका बाँया हाथ इस तरह पीछे की तरफ खिंच सा गया है जिससे उसकी भयानक पीड़ा व्यक्त हो रही है । उसके सूखे खुले मुँह से सांस मुश्किल से और सीटी सी बजाती हुई निकल रही है; उसकी निस्तेज नीली आँखों की पुतलियाँ ऊपर नीचे को हो रही हैं । उसका पट्टी बंधा कटा हुआ दाहिना हाथ कम्बल के बाहर निकल रहा है । सड़ते हुए गोश्त की दुर्गन्ध तुम्हारा सांस बन्द किए दे रही है और उसके जोड़ जोड़ में व्याप्त प्राणघातक ज्वर तुम्हें तुम्हारे अपने शरीर में प्रविष्ट होता हुआ सा लग रहा है ।

"क्या यह बेहोश है ?" तुम उस औरत से पूछते हो जो तुम्हारी तरफ इस तरह कोमलता के साथ देखती हुई पीछे पीछे वहाँ चली आई है मानो तुम उसके परम आत्मीय हो ।

"नहीं, यह अब भी सुन सकता है," वह जबाब देती है और फिर फुसफुसाती हुई धीरे से कहती है : "मगर इसकी हालत बहुत खराब है । आज मैंने इसे थोड़ी सी चाय दी थी—मनुष्य को हरेक पर रहम करना चाहिए भले ही वह अजनबी क्यों न हो—मगर वह बड़ी मुश्किल से पी सका ।"

"कैसा लग रहा है ?" तुम उस मरीज से पूछते हो ।

तुम्हारी आवाज सुन कर उस घायल मनुष्य की आँखें फिरने लगती हैं मगर वह तुम्हारी बात न तो समझ ही सकता है और न तुम्हें देख सकता है।

"मेरा हृदय जल रहा है।"

कुछ आगे तुम एक बुड्ढे सिपाही को देखते हो जो अपनी कमीज बदल रहा है। उसके शरीर और चेहरे का रग कुछ कुछ भूरा सा है और वह सूख कर पिजर हो रहा है। उसकी एक बांह गायब है जो कन्धे पर से काट दी गई है। वह ठीक तरह से बैठ लेता है; उसकी बीमारी ठीक हो गई है मगर उसकी निर्जीव, निस्तेज आँखें और भयानक रूप से दुबला पतला शरीर तथा चेहरे की गहरी झुर्रियाँ बतलाती हैं कि इस अभागे के जीवन का सबसे अच्छा भाग तकलीफों में कटा है।

दूसरी तरफ एक खाट पर तुम एक औरत का पाड़ा से व्याकुल दीन चेहरा देखते हो जिस पर मौत का पीलापन छा रहा है और गाल बुखार से लाल हो रहे हैं।

"यह हमारे एक मल्लाह की औरत है," तुम्हारा मार्गदर्शक तुम्हें बतलाता है। "पाँचवे बुर्ज पर इसकी टांग में एक गोला लगा था जब यह अपने पति का खाना लेकर किले पर जा रही थी।"

"क्या टांग काट दी गई है?"

"हाँ, घुटने पर से।"

और अब अगर तुम अधिक साहसी हो तो अपनी बांई तरफ वाले दरवाजे में होकर उस कमरे में घुसो जहाँ घावों की मलहम पट्टी होती है और ऑपरेशन किए जाते है। वहाँ तुम चीरफाड़ करने वाले शल्य चिकित्सको को देखते हो जिनके हाथ कुहनियों तक

खून से सने हैं, चेहरे पीले और कठोर हैं। वे लोग एक चारपाई पर झुके हुए व्यस्त हैं जिस पर क्लोरोफार्म से बेहोश एक घायल व्यक्ति पड़ा हुआ है। उसकी आँखें पूरी खुली है और वह असम्बद्ध प्रलाप कर रहा है जैसे सन्निपात में हो। वह कभी कभी प्रेम के शब्दों का उच्चारण कर उठता है। शल्य चिकित्सक एक अंग को काटने के भयानक परन्तु लाभदायक कार्य में व्यस्त हैं। तुम देखते हो कि तेज मुड़ा हुआ चाकू सफेद स्वस्थ मांस में घुसता है; तुम उस घायल व्यक्ति को एकाएक भयानक और खून जमा देने वाले स्वर में चीखते और गालियों की बौछार करते हुए सुनते हो और देखते हो कि कटी हुई बांह को चिकित्सक एक कौने में फेंक देता है। तुम कमरे के दूसरे कौने में स्ट्रेचर पर लेटे हुए एक दूसरे अभागे प्राणी को देखते हो। वह अपने साथी के ऑपरेशन को देखकर छटपटाता और कराहता है--शारीरिक कष्ट से इतना नहीं जितना कि आगे आने वाले सङ्कट की कल्पना कर मानसिक वेदना से। यहाँ तुम भयानक और हृदय को .चूर-चूर कर देने वाले दृश्य देखोगे : तुम युद्ध को, सजी सजाई करीने से खड़ी सेना, फौजी संगीत, ढोलों का तीव्र निनाद, लहराते झंडे और नाचते घोड़ों पर सवार सेनापतियों के भव्य रूप में न देखकर युद्ध को अपने असली रूप में देखोगे—खून, हाहाकार और मृत्यु के रूप में।

कष्ट और वेदना के इस वातावरण से बाहर निकलने पर तुम जरूर मुक्ति का सांस लोगे, ताजी हवा में खूब गहरी गहरी सांस खींचोगे और यह अनुभव कर प्रसन्न होगे कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक है। मगर उन कष्टों की स्मृति तुम्हें यह चेतावनी देगी कि तुम्हारा अपना महत्व कितना नगण्य है। और तुम चुपचाप धीरे धीरे किले की तरफ चल पड़ोगे।

"इन इतनी मौतों और तकलीफों की तुलना में मुझ जैसे एक तुच्छ और नाचीज कीड़े की मौत और तकलीफ क्या कीमत रखती है?"

मगर स्वच्छ निर्मल आकाश का दृश्य, चमकता हुआ सूरज, सुन्दर नगर, खुले में बना हुआ गिरजा और चारों तरफ आते जाते हुए फौजियों के झुण्ड देखकर तुम्हारा हृदय हल्का हो जायगा। तुम साधारण चिन्ताओं और वर्तमान की ही समस्यायें सुलझाने में व्यस्त हो जाओगे।

रास्ते में तुम्हारी मुलाकात चर्च से निकलते हुए मुर्दनी के जलूस से हो सकती है जो एक गुलाबी कफन में लपेटे हुए एक अफसर को झंडे फहराते, गाजे बाजे के साथ लिए जा रहा है; और शायद किलों पर से होने वाली गोलावारी की आवाज तुम्हारे कानों में पड़े; मगर यह सब तुम्हें तुम्हारे पहले विचारों की तरफ नहीं ले जा सकेंगे। मुर्दनी का वह जलूस तुम्हें एक सुन्दर फौजी तमाशा जैसा लगेगा, गोलावारी की आवाज फौजी संगीत की तरह सुन्दर लगेगी और उस फौजी प्रदर्शन या उस आवाज से तुम्हारे उन कष्ट और मृत्यु के विभिन्न विचारों का कोई मेल नहीं होगा जिनका तुमने उस चीर-फाड़ वाले कमरे में स्वयं को उस स्थिति में रखकर अनुभव किया था।

चर्च और उस फौजी आड़ को पार कर तुम शहर के सबसे सुन्दर हिस्से में घुसते हो। सड़क के दोनों तरफ दूकानों और होटलों के साइनबोर्ड, व्यापारी, रूमाल बांधे और टोपी लगाए औरतें और साफ-सुथरे चुस्त अफसर सब इस बात की गवाही दे रहे हैं कि यहाँ के निवासियों में सुरक्षा, दृढ़ता और आत्म-विश्वास की कोई कमी नहीं है।

अगर तुम यह सुनना चाहते हो कि मल्लाह और अफसर लोग क्या कह रहे हैं तो दाहिनी तरफ वाले होटल में घुस जाओ। निस्संदेह वे लोग पहले से ही गुजरी हुई रात की घटनाओं के बारे में, नवयुवती फेनिया के बारे में, चौबीसवें बुर्ज पर होने वाली लड़ाई के बारे में

कहानियाँ सुना रहे हैं। साथ ही यह बातें भी हो रही है कि गोश्त कितना मंहगा और कितना गन्दा खाने को मिलता है, अमुक साथी किस तरह मारा गया था, आदि।

"शैतान का बुरा हो। आज हमारे मोर्चे पर हालत बड़ी खराब थी!" एक सुन्दर बाल और बिना दाढ़ी वाला छोटा सा सामुद्रिक सेना का अफसर, बुना हुआ हरा रूमाल बाँधे भारी आवाज में कह उठता है।

"तुम्हारा मोर्चा कहाँ है?" दूसरा उससे पूछता है।

"चौथे बुर्ज पर," वह नौजवान अफसर उत्तर देता है और "चौथे बुर्ज" का नाम सुनते ही तुम उस सुन्दर बालो वाले छोटे से अफसर को बड़ी रुचि और यहाँ तक कि थोड़ा सा आतंकित सा होकर देखने लगते हो। उसकी बनावटी सी लगने वाली शान्ति, उसकी भाव भंगिमा, उसकी ऊँची आवाज और हँसी जो तुम्हें एक डींग हाँकने वाले आदमी की सी लगी थी, वही अब तुम्हें उस दुस्साहसी भावना के समान लगने लगती है जो आजकल कम उमर के ही नौजवानों में पाई जाती है जबकि वे खतरों का सामना कर चुकते हैं। फिर भी, तुम आशा करते हो कि वह यह कहेगा कि चौथे बुर्ज पर हालत खराब होने की वजह गोला बारूद थी; मगर ऐसी कोई बात नहीं। यह खराब इसलिए थी कि वहाँ कीचड़ थी। "तोपखाने तक पहुँचना मुश्किल पड़ जाता है," वह अपने बूटों की तरफ इशारा करते हुए कहता है जो घुटनों तक कीचड़ से सने हुए हैं। "आज मेरा एक सबसे अच्छा तोपची मारा गया—उसका भेजा साफ उड़ गया," दूसरा कहता है। "वह कौन था? मित्यूखिन तो नही?" "नहीं···कैनेली, तुम आज मेरे लिए बछड़े के गोश्त के कटलेट लाओगे!"—यह बात वेटर से कही गई है······"नहीं, मित्यूखिन नहीं, अब्रोसीमोव था। बड़ा बहादुर था। उसने छः हमलों मे हिस्सा लिया था।"

मेज के दूसरे कौने पर अपने सामने गोश्त और मटर की रकाबियाँ और 'बोर्डो' नामक क्रीमिया की खट्टी शराब की एक बोतल रखे पैदल सेना के दो अफसर बैठे हुए हैं। इनमें से एक नौजवान है जिसके ओवरकोट का कालर लाल रंग का है और कन्धे पर दो स्टार लगे हुए हैं। वह दूसरे को, जो काले कालर और बिना स्टार वाला अधेड़ उम्र का व्यक्ति है, आल्मा के युद्ध के बारे में बता रहा है। पहले वाला कुछ कुछ नशे में है। अपनी कहानी कहते समय उसके बार बार अटक जाने से, उसकी आँखों में भरी हुई अविश्वास की भावना से कि उसका विश्वास किया जा रहा है या नहीं, और विशेष रूप से इस बात से कि उसने उस सारे युद्ध में जो हिस्सा लिया है वह इतना महत्वपूर्ण है और वह जिन दृश्यों का वर्णन कर रहा है वे इतने भयानक हैं कि तुम यह विश्वास करने लगते हो कि जो कुछ वह कह रहा है वह सचाई से बहुत दूर की बातें हैं अर्थात् वह झूठ बोल रहा है। मगर तुम इन कहानियों में रुचि नहीं ले रहे जिन्हें तुम भविष्य में बहुत दिनों तक रूस के हर हिस्से में सुनोगे। तुम बुर्जों पर जाने के मिए उत्सुक हो, विशेष रूप से चौथे बुर्ज पर, जिसके बारे में तुम्हें अलग अलग इतनी बातें बताईं गईं हैं। जब कोई कहता हैं कि वह चौथे बुर्ज पर था तो वह इस बात को अद्भुत प्रसन्नता और गर्व के साथ कहता है। जब कोई कहता है—"मैं चौथे बुर्ज पर जा रहा हूँ", तो यह बात निश्चित है कि तुम उसकी आवाज में एक हल्की सी उत्तेजना या अत्यधिक उदासीनता की ध्वनि पाओगे। अगर कोई किसी दूसरे को धमकाना चाहता है तो कहता है," "तुम्हें तो चौथे बुर्ज पर भेज देना चाहिए।" और जब तुम्हारी मुलाकात स्ट्रेचर पर लदे हुए एक व्यक्ति से होती है और तुम उससे पूछते हो : "कहाँ से ?" तो बहुत करके यही उत्तर मिलेगा कि—"चौथे बुर्ज पर से।" सचमुच इस भयानक बुर्ज के विषय

में दो नितान्त भिन्न धारणायें बन गई हैं। एक धारणा उन लोगों की है जो वहाँ कभी नहीं गए और जिन्हें यह विश्वास है कि चौथा बुर्ज, जो कोई वहाँ जाता है, उसे खा जाता है और दूसरी धारणा उन लोगों की है जो वहाँ रहते हैं जैसे कि वह सुन्दर बालों वाला जहाजी अफसर और जो चौथे बुर्ज की बातें करते समय तुम्हें सिर्फ यही बतलायेगा कि वहाँ कीचड़ है या सूखी जमीन, खाइयों मे गर्माहट रहती या ठंड आदि।

होटल में बिताये गए उस आधे घण्टे में ही मौसम बदल गया है। समुद्र पर छाया हुआ कोहरा भूरे, ठंडे और नम बादलों की चादर में बदल गया है और उसने सूरज को ढक लिया है। पानी और ओले की हल्की बौछारें पड़ रही हैं। छतें, पगडंडियाँ और सिपाहियों के ओवरकोट गीले हो गए हैं।

एक और फौजी आड़ से आगे चलकर तुम एक फाटक में से गुजरते हो, और दाहिनी तरफ मुड़ कर एक चौड़ी सड़क पर चलने लगते हो। इस आड़ से आगे, सड़क के दोनों तरफ बने मकानों में कोई भी नहीं रहता। वहाँ नाम की तख्तियाँ नहीं लगी हैं; दरवाजों पर तख्ते लगा कर उन्हें बन्द कर दिया गया है; खिड़कियाँ टूटी हुई हैं। एक मकान का एक कौना उड़ा दिया गया है, दूसरे की छत गिर गई है। ये इमारतें अधिक अवस्था वाले उन वृद्ध पुरुषों के समान लगती हैं जिन्होंने मुसीवतों और अभावों का सामना किया है और वे तुम्हारी तरफ गर्व और कुछ कुछ घृणा से देखती हुई सी प्रतीत होती हैं। यहाँ रास्ता चलते हुए तुम छितरे हुए तोप के गोलों और फटने वाले गोलों से उस पहाड़ी प्रदेश में बने हुए पानी से भरे गढ़ों में गिरते पड़ते चलते हो। रास्ते में तुम्हारी मुलाकात सिपाहियों की टुकड़ियों, कज्जाकों और अफसरों से होती है। कभी-

कभी तुम्हारी मुलाकात एके औरत या बच्चे से हो जाती है मगर औरत के सिर पर टोपी नहीं होती। वह एक मल्लाह की स्त्री है जो एक पुराना गर्म कोट और मल्लाहों के बूट पहने हुए है। सड़क पर और आगे बढ़ने और फिर एक ढाल को पार करने के बाद मकान दिखाई देने बन्द हो जाते हैं। मकानों के बजाय वहाँ अनगढ़ पत्थरों, तख्तों, मिट्टी, लट्ठों और ईंटों आदि के अजीब से ढेर लगे दिखाई पड़ते हैं। कुछ और आगे एक सीधी खड़ी पहाड़ी पर एक काला और कीचड़ भरा मैदान सा दिखाई पड़ता है जो बीच-बीच में खाइयों से काट सा दिया गया है। और यही वह 'चौथा बुर्ज' है। यहाँ तुम्हें कम ही आदमी मिलेंगे; औरत तो एक भी नहीं दिखाई देगी। सिपाही तेजी से तुम्हारी बगल में से निकल जायँगे; सड़क पर जैसे खून का छिड़काव सा कर दिया गया है। इस सड़क पर तुम्हें स्ट्रेचर लेकर जाते हुए चार सिपाही जरूर मिलेंगे, जिस पर एक सूजे हुए मुँह का घायल और खून से सना फौजी कोट पड़ा होगा। अगर तुम पूछो : "इसे कहाँ चोट लगी थ। ?" तो स्ट्रेचर ले जाने वाले अगर घाव मामूली होगा तो गुस्से के साथ, बिना तुम्हारी तरफ देखे जबाब देंगे कि उसकी टाँग या हाथ में गोली लगी है; या अगर स्ट्रेचर पर सिर नहीं दिखाई दे रहा है तो वे चुपचाप कठोर मुद्रा बनाये आगे निकल जायँगे क्योंकि स्ट्रेचर पर लेटा हुआ व्यक्ति या तो मर गया है या बुरी तरह घायल है।

जब तुम पहाड़ी पर चढ़ोगे तो तोप के गोले या गोली की सनसनाहट तुम्हारे हृदय में अजीब सी सनसनी पैदा कर देगी। तुम शहर में सुनी हुई गोलावारी की आवाज को अचानक समझ जाओगे और इस बार उसे नितान्त भिन्न रूप में समझोगे। कोई सुखद और मधुर स्मृति तुम्हारे हृदय पटल पर छा जायेगी। तुम अन्य विचार करने की अपेक्षा स्वयं अपने विषय में अधिक सोचने

लगोगे। अपनी चारों तरफ की परिस्थिति से तुम्हारा ध्यान हट जायेगा और बेचैनी की एक मनहूस भावना तुम्हारे हृदय में छा जायेगी। मगर उस घिनौनी आवाज के उठते हुए भी, जो तुम अचानक अपने भीतर सुनते हो, खतरे को देखकर और विशेष रूप से उस समय जब तुम एक सिपाही को अपनी बाँह हिलाते, पहाड़ी पर नीचे कीचड़ में से गुजरते और हँसते हुए अपनी बगल में से निकलते हुए देखते हो तो अपनी उस आवाज को चुप रहने के लिए कहते हो और प्रेरणावश अपना सीना तान, अपना सिर ऊँचा उठा लेते हो तथा उस चिकनी, फिसलनी पहाड़ी पर चढ़ने लगते हो। तुम अभी किसी तरह थोड़ा सा ही रास्ता तय कर पाए हो कि तुम्हारे चारों तरफ गोलियाँ सनसना उठती हैं और तुम मन में सोचते हो कि क्या यह अच्छा नहीं होगा कि तुम उस खाई में होकर आगे बढ़ो जो इस रास्ते के साथ-साथ चल रही है। मगर उस खाई में घुटनों घुटनों पतली, पीली, बदबूदार कीचड़ भरी हुई है और इसलिए तुम सड़क पर ही चलना पसन्द करते हो। इसलिए और भी कि हरेक उस सड़क पर होकर ही जा रहा है। लगभग दो सौ कदम चलने के बाद तुम एक ऐसी जगह पहुँचते हो जो तोप के गोलों से बने गढ़ों और कीचड़ से भरी हुई है। जिसके चारों तरफ मिट्टी के ढेर, उभरे हुए किनारे, गोला बारूद की चौकियाँ, प्लेटफार्म और गुफाएँ फैली हुई हैं। इन गुफाओं की छतों पर कच्चे लोहे की ढली बड़ी बड़ी तोपें और गोलों की कतारें लगी हुई हैं। वे बिना किसी क्रम या व्यवस्था के यों ही बिखरी पड़ी हैं। मल्लाहों की एक टुकड़ी तोपखाने के पास आराम कर रही है। इस मैदान के बीचोंबीच एक टूटी हुई तोप कीचड़ में आधी धंसी हुई पड़ी है। एक फौजी, बन्दूक लटकाए कीचड़ में होकर मुश्किल से कदम उठाता हुआ तोपखाने के पास से गुजर रहा है। सारी जगह पत्थर के टुकड़ों,

बिना फटे हुए बमों, तोप के गोलों और छावनी की गन्दगी से भरी पड़ी है और यह सब कीचड़ के एक समुद्र में डूबी हुई सीं लगती हैं। बिल्कुल तुम्हारे पास तोप के गोले का धमाका होता है। गोलियाँ तरह-तरह की आवाजें करती हुई चारों तरफ सनसना रहीं हैं—कोई मक्खियों की तरह भनभना रही हैं, दूसरी, ज्यादा तेज चलने वाली, सीटी सी बजाती हुई उड़ी जा रहीं हैं या 'पिंग' की सी आवाज दे रही हैं जैसी सितार के तार छेड़ने पर पैदा होती है। तुम तोप के गोले की गरज सुनते हो जिसे सुनकर सब स्तब्ध रह जाते हैं और जो तुम्हें बड़ी भयानक लगती है।

"तो यही है वह चौथा बुर्ज ! यह सचमुच भयानक स्थान है !" मन ही मन तुम सोचते हो। तुम अपने हृदय में उठने वाली गर्व की एक हल्की सी और भय को दबाने वाली एक भारी सी भावना का अनुभव करते हो। मगर तुम्हें निराशा होगी। तुम अभी चौथे बुर्ज पर नहीं पहुँचे हो। यह याजोनोव्स्की नामक कोट है—एक अधिक सुरक्षित स्थान और भयानक तो बिल्कुल भी नहीं है। चौथे बुर्ज पर जाने के लिए तुम्हें दाहिनी तरफ मुड़ना चाहिए और उस कम गहरी खाई के साथ साथ चलना चाहिए जिसमें होकर एक फौजी नीचे झुका हुआ अभी अभी गया है। इस खाई पर तुम्हें और अधिक स्ट्रेचर, एक मल्लाह और फावड़े लिए सिपाही मिलेंगे। तुम्हें सुरंगों के पलीते, कीचड़ से भरी हुई गुफाएँ जिनमें सिर्फ दो आदमी रेंग कर घुस सकते हैं, मिलेंगीं। और वहाँ तुम 'ब्लैक सी बटालियन' के स्काउटों को जूते मौजे बदलते, खाना खाते, पाइप पीते और तरह तरह के काम करते देखोगे। चारों तरफ वही बदबूदार कीचड़, गन्दगी और लोहे के तरह तरह के टुकड़े फैले होंगे। तीन सौ कदम और आगे चलकर तुम एक दूसरे तोपखाने पर पहुँचोगे

जो एक छोटा सा, तोप के बम्बों से बने गढों से छलनी सा बना चौकोर मैदान होगा जिसमें चारों तरफ मिट्टी के ढेर, चर्खियों पर चढी तोपें बिखरी होंगी तथा जो दीवालों से घिरा होगा । तुम वहाँ चार या पाँच मल्लाहों को साये के नीचे बैठे ताश खेलते देखोगे। एक जहाजी अफसर, यह जान कर कि तुम एक जिज्ञासु नवागन्तुक हो, तुम्हें खुशी के साथ चारों तरफ घुमाकर सारी चीजें समझायेगा । यह अफसर अपना तोप पर बैठकर सिगरेट बनाता है या एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे की तरफ बिल्कुल शान्त मुद्रा से जाता है और तुमसे इतने स्वाभाविक ढंग से बाते करता रहता है कि अपने चारों तरफ गोलियों की बढ़ती हुई सनसनाहट के बावजूद भी तुम अपने आप को शान्त रखते हो, उससे सवाल पूछते हो और उसकी बातों को बड़े गौर के साथ मन लगाकर सुनते हो । यह अफसर तुम्हें यह बतायेगा मगर तभी जब तुम पूछोगे—कि पाँचवी तारीख को किस तरह गोलावारी हुई थी, किस तरह सिर्फ एक तोप और आठ आदमी बच पाए थे मगर यह सब होते हुए भी उसने छठवी तारीख को अपनी सारी तोपों के साथ दुश्मन को जबाव दिया था। वह तुम्हे बतायेगा कि किस तरह पाँच तारीख को एक बम्ब मल्लाहों की गुफा पर गिरा और ग्यारह आदमी मर गए । वह मोर्चे के एक छेद में से दुश्मन की खाइयों को दिखायेगा जो वहाँ से दो या तीन सौ फुट से ज्यादा दूर नहीं होगी। फिर भी मुझे सिर्फ एक बात का डर है : जब तुम उस छेद में होकर अपना सिर दुश्मन को देखने के लिए बढ़ाओगे तो तुम उन सनसनाती हुई गोलियों के कारण कुछ भी नही देख पाओगे; फिर भी अगर तुम कोई चीज देख भी पाओगे तो तुम्हे यह जान कर आश्चर्य होगा कि वह सफेद पहाड़ी दीवाल, जो तुम्हारे इतने नजदीक है और जहाँ से छोटे छोटे धुँए के गुब्बार उठ रहे हैं, दुश्मन है—'वह' जैसा कि सिपाही और मल्लाह उसे कहते हैं ।

बहुत मुमकिन है कि वह जहाजी अफसर अपनी बहादुरी दिखाने के लिए या सिर्फ मनोरंजन के निमित्त अथवा तुम्हारे ज्ञान के लिए थोड़ी सी गोलाबारी करना चाहे। "गोलन्दाज और सिपाहियों को अपनी तोप पर भेजो !" और चौदह मल्लाह खुश होते हुए, कतार बाँधे निकल आएँगे। एक अपना पाइप जेब में ठूँस रहा होगा, दूसरा रोटी का बचा हुआ टुकड़ा अपने मुँह में डाल रहा होगा। वे सब चर्खी पर चढ़, अपने नालदार बूटों को बजाते, तोप को भरना शुरू कर देंगे। इन लोगों के चेहरों को देखो, उनकी मुद्रा और गति विधि पर ध्यान दो। उन साँवले, चौड़े चेहरों की प्रत्येक रेखा, हर मांश पेशी, उन कंधों की चौड़ाई, लम्बे चौड़े बूटों वाले उन पैरों की मजबूती, हरेक कार्य शान्त, निश्चिन्त और चैतन्य होकर करना—ये वे प्रधान गुण हैं जिनमें रूसियों की शक्ति का रहस्य छिपा हुआ है। संक्षेप में ये गुण हैं–सरलता और दृढ़ता। मगर तुम देखोगे कि इन प्रधान गुणों के अतिरिक्त, सङ्कट, क्रोध और युद्ध के कारण होने वाले कष्टों ने प्रत्येक के चेहरे पर अपने स्वयं के महत्व का ज्ञान तथा उच्च विचारों एवं भावनाओं की छाप अंकित कर दी है।

अचानक एक भयंकर गरज सुनाई पड़ती है जो केवल तुम्हारे कानों को ही नहीं बल्कि सिर से लेकर पैर तक सारे शरीर को कंपा देती है। दूसरा शब्द जो तुम सुनोगे वह दूर जाते हुए बम का शोर होगा और बारूद के धुँए का एक गहरा बादल तुम्हें और मचान पर घूमती हुई मल्लाहों की काली आकृतियों को अपने में लपेट लेगा। तुम मल्लाहों को इस बम के विषय में तरह तरह की बातें करते सुनोगे और उनकी उस उत्तेजना को देखोगे जो बदले की उस भावना से भरी हुई है—जिसकी तुमने आशा भी नहीं की थी—एक ऐसे क्रोध और बदले की भावना जिससे हरेक का हृदय उबल रहा है।

"गोला ठील निशाने पर लगा है; मेरा ख्याल है दुश्मन के दो आदमी मार लिए...देखो ! उन्हें उठाकर ले जाया जा रहा है !" वे लोग प्रसन्न होकर कहेंगे। "अब 'वह' पागल हो जायगा। देखना अभी मिनट भर में इधर हमला करता," कोई कह उठेगा और सचमुच कुछ देर बाद तुम्हें बिजली की सी एक चमक और धुंए के बादल उठते हुए दिखाई देंगे। ऊपर खड़ा हुआ संतरी चीख उठेगा : "तो ओ--ओ-प !" और एक गोला तुम्हारे ऊपर होकर गुजरेगा, धमाके के साथ जमीन पर गिरेगा और पत्थरों और कीचड़ का फुब्वारा सा छूट उठेगा। तोपखाने का कमान्डर इससे नाराज हो उठेगा और दूसरी और तीसरी तोप भरने का हुक्म देगा। दुश्मन जबाब देगा और तुम रोमांचक भावनाओं से उद्वेलित हो उठोगे तथा मजेदार बातें देखोगे और सुनोगे। संतरी दुबारा चीखेगा : "तो-ओ-ओ-प !" और तुम फिर एक सनसनाहट और धमाका सुनोगे और कीचड़ का फुब्बारा ऊपर उछलता हुआ देखोगे। संतरी फिर चीख सकता है : "बम !" और तुम एक सुन्दर और निरन्तर होने वाली भनभनाहट सुनोगे जिसे किसी भी रूप में भयानक नहीं कहा जा सकता। यह भनभनाहट तेजी से आते हुए एक बम की आवाज होगी और फिर तुम्हें एक काली गेंद दिखाई देगी। जैसे ही वह जमीन से टकरायेगी कि एक भारी धमाका होगा और बम फटने की भयानक आवाज आयेगी। बम के टुकड़े सनसनाते और सीटी सी बजाते चारों तरफ उड़ेंगे; पत्थरों के टुकड़े हवा में उछलेंगे और तुम कीचड़ से नहा जाओगे। इस पूरे समय तक तुम्हारे हृदय में आतंक और भय की एक मिश्रित भावना भरी रहेगी। उस क्षण, जैसा कि तुम्हें विश्वास हो जायेगा कि वह बम तुम्हारी तरफ आ रहा है, तुम्हें पूर्ण विश्वास होगा कि वह तुम्हें जान से मार देगा; मगर तुम्हारा गर्व तुम्हें शान्त रखता है और उस छुरी को कोई नहीं देख पाता जो तुम्हारे

हृदय को फाड़े डाल रही है। मगर वह बम जब तुम्हें बिना नुकसान पहुँचाये आगे निकल जाता है, तुम फौरन चैतन्य हो उठते हो, और एक सुखद, अवर्णनीय सुन्दर भावना से अभिभूत हो उठते हो, यद्यपि केवल क्षण भर के लिए ही। और तुम इस भयंकर संकट में, जीवन और मृत्यु की इस क्रीड़ा में, एक अद्भुत आकर्षण अनुभव करने लगते हो। तुम चाहते हो कि एक तोप का गोला या बम तुम्हारे और नजदीक आकर गिरे। मगर संतरी एक बार फिर अपनी तेज भारी आवाज में चीख उठता है; "बम !" और वहाँ पुनः एक सनसनाहट भरी चीख, धमाका और विस्फोट सुनाई देता है; परन्तु इस शब्द के साथ एक मनुष्य की कराहट की आवाज सुन कर तुम आश्चर्यचकित हो उठते हो। जैसे ही उस घायल व्यक्ति के पास एक स्ट्रेचर पहुँचता है तुम भी वहाँ पहुँच जाते हो। कीचड़ और रक्त में पड़ा हुआ वह घायल एक अद्भुद, लगभग अमानवीय सा दृश्य उपस्थित करता है। उसके सीने का एक भाग उड़ गया है। कुछ क्षणों के लिए उसके कीचड़ से भरे चेहरे पर भय और एक कृत्रिम सी लगने वाली तथा पीड़ा की अपरिपक्व सी भावना झलकने लगती है जो ऐसी स्थिति में प्रायः मनुष्य के चेहरे पर छा जाती है। लेकिन जब स्ट्रेचर उसके पास आ जाता है और वह अपने आप उठ कर उस पर, बिना चोट लगी हुई करवट के सहारे लेट जाता है तो यह भावना प्रशंसा और अव्यक्त उदात्त विचार का रूप धारण कर लेती है। उसकी आँखें चमकने लगती हैं, दाँत भिंच जाते हैं, वह कोशिश करके अपना सिर उठाता है। और जब उसके स्ट्रेचर को उठाया जाता है तो वह स्ट्रेचर ले जाने वालों को रोकता है और अपने साथियों की तरफ मुड़ कर कष्टभरी और काँपती आवाज में कहता है: "भाइयो, मुझे माफ करना !" वह कुछ और करना चाहता है; तुम देखते हो कि वह अपने कुछ आर्द्र विचारों को व्यक्त करना चाह रहा है परन्तु केवल यही

दुहरा पाता है: "भाइयो, मुझे माफ करना !" उसका एक मल्लाह साथी उसके पास जाता है, अपनी टोपी उसके सिर पर लगाता है—घायल व्यक्ति उसे सहूलियत पहुँचाने के लिए अपना सिर ऊँचा उठा देता है—और हाथ हिलाता, शान्त और स्थिर, अपनी तोप के पास लौट आता है।

तुम्हारे चेहरे पर छाये हुए भय के उत्तर में वह जहाजी अफसर कहता है। "इसी तरह हमारे सात या आठ आदमी रोज कम हो जाते हैं," और जम्हाई लेते हुए वह एक दूसरी पीली सिगरेट बनाने लगता है......

× × × ×

तो तुमने अब सेवास्तोपोल के रक्षको को लड़ते हुए देख लिया और तुम, किसी कारणवश, तोप के उन गोलों और गोलियों की तरफ बिना ध्यान दिए, जो उस ध्वस्त रगमच से लौटते समय तुम्हारे सिर पर सनसनाती रहती हैं, वापस लौट आते हो—शान्त और गर्व के साथ कदम बढाते हुए वहाँ से वापस चले आते हो। सबसे मुख्य वस्तु वह सुखद विश्वास है जो तुम अपने साथ लाते हो—यह विश्वास कि सेवास्तोपोल का पतन नही हो सकेगा और केवल यही नहीं होगा बल्कि यह भी कि रूसी जनता का साहस किसी भी मोर्चे पर नही डगमगायेगा। और इस भावना के दर्शन तुमने सिर्फ उन अगणित मचानों, मोर्चेबन्दियों, चक्करदार खाइयो, सुरंगों और बेतरतीव एक दूसरे के ऊपर पड़ी हुई तोपों, जैसा कि तुम्हे लगा था, में ही नही किए होंगे जो सेवास्तोपोल के रक्षकों का साहस कहलाता है।

वे जो कुछ कर रहे हैं, इतने स्वाभाविक और सरल ढंग से कर रहे हैं कि तुम्हें विश्वास हो जाता है कि उनमें इससे सौ गुना

अधिक करने की शक्ति है...उनके लिये कुछ भी मुश्किल नही है । तुम अनुभव करते हो कि वह भावना जो उन्हें कार्य करने के लिए उकसाती है, निम्नता, महत्वाकांक्षा या विस्मृति की नही है जिसने तुम्हे उकसाया था परन्तु वह एक और ही प्रकार की भावना है, उससे अधिक प्रेरक, जिसने उन्हें ऐसा आदमी बना दिया है जो गोलियो और बम्बो की बौछारों में शान्ति से रह सकते हैं, जहाँ, प्रत्येक के लिए अवश्यम्भावी मृत्यु के शत प्रतिशत अवसर रहते हैं और जहाँ वे लोग इस कठोरता, सावधानी और गन्दगी से निरन्तर भरी हुई परिस्थितियों से संघर्ष करते रहते हैं। मनुष्य ऐसी भयंकर परिस्थिति में किसी क्रॉस या पदवी पाने के लालच से अथवा दंड के भय से नही रह सकता। उन्हें प्रेरणा देने के लिए कोई दूसरा, अधिक उच्च कारण अवश्य होना चाहिए। अभी तो केवल सेवास्तोपोल के घेरे के प्रारम्भिक दिनों की ही कहानियाँ हैं जब वहाँ किलेबन्दी नहीं थी, फौजे नही थी और उसे बचा लिए जाने की तनिक भी सम्भावना नही थी। उस समय भी इस बात में जरा भी शक नही किया जाता था कि सेवास्तोपोल दुश्मन के आगे हथियार नही डालेगा। ये वे दिन थे जब कोर्नीलोव—वह वीर जिसे प्राचीन ग्रीस में उत्पन्न होना चाहिए था—ने अपनी फौज का मुआयना करते हुए कहा था—"साथियो, हम जान दे देंगे मगर सेवास्तोपोल का पतन नहीं होने देंगे।" और हमारे रूसियों ने, जो डींग हाँकने वाले कभी भी नहीं रहे, जबाब दिया था: "हम जान दे देंगे। हुर्रा!"—और अब उन दिनों के सेवास्तोपोल की कहानियाँ, जिन्हें तुम सुन्दर ऐतिहासिक कथायें मात्र समझते हो, प्रामाणिक और सत्य बन गई हैं। कल्पना करो और तुम स्पष्ट रूप से उन व्यक्तियों को जिनको तुमने अभी देखा है, समझ जाओगे, और समझोगे उन वीरों को जिन्होंने उन भयानक दिनों में साहस नही खोया था बल्कि जो केवल एक नगर

के लिए ही नहीं बल्कि अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए एक महान प्रेरणा से भर उठे थे और उसके लिए खुशी से अपने प्राण देने के लिए तैयार हो उठे थे। सेवास्तोपोल की यह ऐतिहासिक घटना, जिसका नेतृत्व रूसी जनता के हाथ में था, रूस के भविष्य पर बहुत समय तक अपनी छाप छोड़ जायेगी...

अंधेरा होने लगा है। डूबता हुआ सूरज आकाश पर छाये हुए भूरे बादलों में से चमक उठता है और अकस्मात् बेंगनी रंग के बादलों को अपनी लाल किरणों से रंग देता है तथा समुद्र की हरी सी सतह को, जिस पर जहाज और नावें धब्बों की तरह हिलती दिखाई दे रही हैं, नगर की सफेद इमारतों को और सड़कों पर घूमते मनुष्यों को लाल रंग से नहला देता है। एक फौजी बैंड की नृत्य की उठती हुई धुनें, जो तट पर बज रही हैं, बुर्जों पर गरजती हुई तोपों की भारी आवाज के साथ मिलकर जल पर तैरने लगती हैं।

सेवास्तोपोल

२५ अप्रैल, १८५५

---

# सेवास्तोपोल

## मई

## १

इस बात को छः महीने हो चुके जब सेवास्तोपोल के किलों पर से तोप का पहला गोला सनसनाता हुआ छूटा था और जिसने दुश्मन की मोर्चेबन्दी को हिला डाला था। और तब से हजारों बम, तोप के गोले और गोलियाँ बराबर बुर्जों पर से खाइयों की तरफ और खाइयों में से बुर्जों की तरफ बिना रुके सनसनाती रही हैं और मौत का फरिश्ता बराबर दोनों जगहों पर मंड़राता रहा है।

इस बीच मनुष्य की सहस्रों आकांक्षायें नष्ट हुई हैं, हजारों पूरी हुईं और बढ़ी हैं और अगणित मृत्यु की गोद में आराम से सो चुकी हैं। न जाने कितनों को तरक्कियाँ मिलीं हैं, कितनों को पदच्युत किया गया है, कितनों को 'अन्ना' और 'ब्लादीमीर' नामक तमगे प्राप्त हुए हैं और न जाने कितने गुलाबी कफन तथा मुर्दों को उढ़ाए जाने वाले लिनन के लबादे बनाये जा चुके हैं। और फिर भी बुर्जों से अभी तक वही गरज उठ रही

है और शान्त एवं निरभ्र संध्या के समय फ्रांसीसी अब भी—उसी अनिच्छित कंपकंपी तथा अन्ध विश्वास से उत्पन्न भय के साथ—अपने पड़ावों में से सेवास्तोपोल के बुर्जों की काली और गोलों से छलनी बनी हुई जमीन को, हमारे मल्लाहों की घूमती हुई काली छायाओं को टकटकी बाँध कर देखते हैं और क्रोध से उबलती हुई तोपों से भरे मोर्चों को गिनते हैं। और निरीक्षण करने वाले बुर्ज पर खड़ा हुआ 'पैटी अफसर' अपनी दूरबीन लगाकर फ्रांसीसियों की धंधली छायाओं को, उनके तोपखानों को, तम्बुओं और 'ग्रीन हिल' पर चढ़ती हुई फौजों को और उनकी खाइयों में से उठते हुए धंए के हल्के गुब्बारों को देख रहा है। विभिन्न जातियों के मिश्रण से बनी आदमियों की भीड़ें, उससे भी अधिक भिन्न प्रकार की भावनाओं से प्रेरित होकर अब भी दुनियाँ के हर कौने से इस भयानक स्थान की तरफ चली आ रहीं हैं।

मगर वह समस्या जिसे राजनीतिज्ञ सुलझाने में असफल रहे हैं, बारूद और खून की सहायता से और भी कम सफलता के साथ सुलझायी जा रही है।

मेरे हृदय में कभी-कभी एक विचित्र सा विचार उठता है : कैसा हो अगर लड़ने वालों में से एक पक्ष दूसरे पक्ष के सामने यह प्रस्ताव रखे कि हरेक अपनी फौज में से एक एक कर सारे सिपाहियों को हटा दे? यह इच्छा अद्‌भुत सी लगेगी मगर इसे आजमाया क्यों न जाय? फिर दूसरा सिपाही हटाया जा सकेगा और फिर कुछ समय बाद तीसरा, फिर चौथा, फिर···, जब तक कि अन्त में जाकर हरेक फौज में सिर्फ एक एक ही सिपाही रह जायेगा (यह ख्याल करते हुए कि दोनों तरफ की फौजों की ताकत बराबर है और यह

कि संख्या योग्यता में बदल दी गई है ) । और तब अगर सचमुच ही पेचीदा राजनीतिक समस्याओं को बुद्धिमान जनता के बुद्धिमान प्रतिनिधि युद्ध द्वारा ही सुलझाना चाहें तो उन दोनों सिपाहियों को आपस में लड़कर इसका फैसला कर लेने दिया जाय—एक नगर का घेरा डाल दे और दूसरा उसकी रक्षा करे ।

यह तर्क अव्यावहारिक सा दिखाई पड़ता है लेकिन फिर भी है सुन्दर । दरअसल, इस बात में क्या फर्क पड़ जायेगा कि एक रूसी सम्पूर्ण मित्रों का प्रतिनिधि बन कर लड़े और कहा जाय कि अस्सी हजार अस्सी हजार से लड़ रहे हैं ? यह क्यों न कहा जाय कि एक लाख पैंतीस हजार, एक लाख पैंतीस हजार से या दो लाख दो लाख से या बीस बीस से लड़ रहे हैं ? एक एक के खिलाफ क्यों न लड़े ? पहला विचार दूसरे विचार से अधिक अव्यावहारिक नहीं है । इसके विपरीत दूसरा विचार अधिक तर्कसंगत है क्योंकि यह अधिक मानवीय है । दो में से एक बात : या तो युद्ध पागलपन है या अगर आदमी इस पागलपन को पैदा करते हैं तो निश्चित रूप से उन्हें बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता जैसा कि हम किसी कारणवश समझ लेते हैं कि वे बुद्धिमान हैं ।

## २

घिरे हुए नगर सेवास्तोपोल के क्रीड़ा-स्थल पर, मंडप के समीप, एक फौजी बैंड बज रहा था और सिपाही और औरतें सड़कों पर छुट्टी की मुद्रा में चहलकदमी कर रहे थे । बसन्त ऋतु का चमकीला सूरज अंग्रेजी मोर्चों के ऊपर उठ आया था, वहाँ से बढ़ कर धूप बुर्जों पर पहुँची, फिर शहर और निकोलाएव्स्की बैरकों पर फैली और इस समय अपनी सुखद किरणें सब पर समान रूप से विकीर्ण कर रही

थी। वहाँ से बढ़ कर वे किरणें सुदूर स्थित नीले सागर पर फैली पड़ी थीं जो हल्की मर्मराहट की ध्वनि में रुपहली आभा के साथ जगमगा रहा था।

एक लम्बा, हल्के से गोल कन्धों वाला अफसर, अपने साफ दस्ताने चढ़ाता हुआ, जो पूरी तरह से सफेद नहीं थे, मोस्कोया स्ट्रीट की बाँई तरफ बनी मल्लाहों की एक झोपड़ी के छोटे खिड़कीनुमा दरवाजे में से निकला और विचारपूर्ण मुद्रा में जमीन की तरफ देखता हुआ पहाड़ी पर चढ़ कर क्रीड़ा स्थल की तरफ बढ़ा। उस अफसर का संकरे माथे वाला साधारण चेहरा यह बता रहा था कि वह मन्द बुद्धि तथा साथ ही समझ बूझ वाला, ईमानदार और व्यवहार कुशल व्यक्ति है। उसकी रूपरेखा भद्दी थी—लम्बी टांगों वाला और चलने में बेढंगा तथा शंकित सा होकर कदम उठाने वाला। वह एक नयी टोपी, अजीव हल्के बैंगनी रंग का पतला फौजी कोट, जिसके नीचे से सुनहरी जंजीर वाली घड़ी झांक रही थी, पैरों पर तस्मों से कसी पतलून, बछड़े के चमड़े के बने चमकदार बूट जिनकी एड़ी घिस गई थी, पहने हुए था। मगर एक अनुभवी फौजी निगाह, उसकी पोशाक से, जो एक फौजी अफसर के लिए विचित्र सी थी, इस बात का उतना पता नहीं लगा सकती थी जितना कि उसकी साधारण चालढाल से कि वह एक साधारण फौजी अफसर न होकर कोई बड़ी हस्ती है। अगर उसकी रूपरेखा शुद्ध रूसी न होती तो उसे या तो एक जर्मन समझ लिया जाता या कोई एडजूटेन्ट या रेजीमेन्टल क्वार्टर मास्टर (मगर तब वह लोहे की एड़ें पहने होता) या घुड़सवार फौज से अस्थायी रूप से भेजा गया कोई पदाधिकारी या 'गार्डों' में से लड़ाई की समाप्ति तक के लिए भेजा गया अफसर समझ लिया जाता। दरअसल उसे घुड़सवार सेना में से बदल कर भेजा गया था। वह क्रीड़ा स्थल की तरफ पहाड़ी पर चढ़ता हुआ एक खत के बारे में सोच रहा था जो उसके एक पुराने, मगर अब

रिटायर्ड हो गए, साथी और उसकी स्त्री ने भेजा था। यह साथी अब त—नामक प्रदेश में एक जमींदार था। उसकी पीले रंग और नीली आँखों वाला पत्नी नताशा उसकी गहरा मित्र थी। उसने पत्र के एक भाग को याद किया जिसमें उसके साथी ने लिखा था :

"जैसे ही डाकिया आता है, पूप्सी (वह अवकाश प्राप्त घुड़सवार अपनी पत्नी को इसी नाम से पुकारता था) सर के बल दौड़ती हुई हॉल में जाती है, कागज को छीन लेती है और कुंज में जाकर 'एस' (S) जैसी बनी सीट पर या ड्राइङ्ग-रूम में जाकर (तुम्हें याद होगा कि हमने, जब तुम्हारी रेजीमेन्ट हमारे शहर में थी, कितनी जाड़ों की संध्यायें वहाँ हंसी खुशी से बिताईं थीं) तुम्हारे समाचारों को इतने उत्साह के साथ पड़ती है कि जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। वह अक्सर तुम्हारी बातें करती है। 'मिखायलोव को ही ले लो,' वह कहती है, 'कितना प्यारा आदमी है—मैं उसे देखकर उसका चुम्बान लेने से स्वयं को नहीं रोक सकूँगी! वह वहाँ मोर्चों पर लड़ रहा है और उसे 'सेन्ट जार्ज क्रास' जरूर मिलेगा और वे उसके बारे में अखबार में लिखेंगे।' आदि, आदि। ये बातें सुन सुन कर मुझे जलन होने लगती है।" दूसरी जगह वह लिखता है : "यहाँ अखबार बहुत देर से पहुँचते हैं। हालाँकि जवानी ही बहुत सी बातें यहाँ तक पहुँच जाती हैं मगर उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। मिसाल के लिए, तुम्हारी परिचित उन गाने वालियों ने कल हमसे कहा था कि हमारे कज्जाकों ने नेपोलियन को गिरफ्तार कर लिया है और यह कि उसे सेन्ट पीतर्स-वर्ग भेज दिया गया है। मगर तुम खुद सोच सकते हो कि मैं इसमें से कितनी बात पर यकीन करूँ। सेन्ट पीतर्सवर्ग से आने वाली एक महिला (मिनिस्टर की विशेष मामलों की सलाहकार तथा एक बड़ी सुन्दर नारी। अब जबकि शहर में मुश्किल से ही कोई रहा हो, तम

कल्पना भी नही कर सकते कि उसने हमें कैसी गप्पे सुनाई थी ) ने हमें एक बिल्कुल पक्की खबर सुनाई कि हम लोगों ने यूपेतोरिया पर कब्जा कर लिया है और इस तरह बालाक्लवा से फ्रांसीसियो का सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया है और यह कि इसमें हमारे दो सौ आदमी मारे गए जबकि फ्रांसीसी लगभग पन्द्रह हजार मरे; और वह कहती है कि उसका विश्वास है कि तुमने इस हमले में हिस्सा लिया था और तुम्हारी प्रशंसा की गई थी…"

ऊपर लिखे गए पत्र के बहुत से शब्दो और वाक्यो को, जिन्हे मैने जानबूझ कर रखा है, और पूरे पत्र के भाव को पूरी तरह न समझ पाकर उतावले पाठक ने शायद अवकाश प्राप्त लेफ्टीनेन्ट-कप्तान मिखायलोव के विषय में सच्ची और सीधी राय कायम कर ली होगी । साथ ही पाठक की ऐसी ही राय उसके साथी के विषय में जो गप्पे हाँकता है और भूगोल के बारे में अजीब राय रखता है तथा उसकी पीले चेहरे वाली '8' जैसे आकर की सीट पर बैठने वाली नारी के बारे में भी बन गई होगी ( पाठक शायद बिना किसी अच्छी भावना के अपने गन्दे नाखूनों से इस नताशा का चित्र भी खीचने लगा होगा ) । और सम्भवतः उसने उस सम्पूर्ण देहाती समाज के विषय में भी, जो काहिल और गन्दा है, और जिसे वह बुरी तरह से घृणा करता है, इसी प्रकार की राय बना ली होगी । इस बात को बिना समझे ही लेफ्टीनेन्ट-कप्तान मिखायलोव ने अद्भुत वेदना मिश्रित आनन्द के साथ अपने उस देहाती मित्र का स्मरण किया । और उसे याद आया कि वह उसके साथ कुन्जों में बैठकर किस तरह भावनाओं पर वाद-विवाद किया करता था । उसने

अपने उस कोमल स्वभाव वाले उल्हान साथी को याद किया और उसे वह घटना याद हो आई जब वह एक पैसा दॉव का खेल खेलते हुए हार गया था और उसकी पत्नी ने इस बात पर उसका कितना मजाक उड़ाया था। उसने उनकी मित्रता को याद किया ( उसने सोचा कि शायद उस पीले चेहरे वाली नारी में मित्रता के अतिरिक्त कुछ और भी था ); ये लोग अपने पूरे वातावरण के साथ अत्यन्त कोमल और सुखद रंगीन चित्रों की तरह उसकी स्मृति में उभर आए और अपनी इन स्मृतियों पर मुस्कराते हुए उसने अपनी वह जेब थपथपाई जिसमें वह सुन्दर पत्र रखा हुआ था। ये स्मृतियाँ उसके लिए इसलिए और भी अधिक मधुर थी क्योंकि अब अपनी रेजीमेन्ट के जिस बंगले में उसे जगह मिली थी वह उससे बहुत खराब था जिसमें वह उस समय रहता था जब घुड़सवार सेना का अफसर था। साथ ही उस समय वह स्त्री-समाज में प्रिय समझा जाता था और नगर के प्रत्येक परिवार में उसका स्वागत किया जाता था।

इस जगह से वह पुरानी जगह इतनी अधिक अच्छी थी कि जब वह मौज में होता तो उसे याद कर पैदल सेना के अपने साथियों को बताता कि उसके पास गाड़ी थी, गवर्नर द्वारा दी गई दावतो मे उसने नृत्य किए थे और एक सिवीलियन जनरल के साथ ताश खेले थे। वे लोग उसकी बातों को सुन कर अविश्वास तो करते मगर न कभी काटते और न बहस करते। उनका ऐसा भाव रहता था कि—"उसे बकने दो।" और अगर वह अपने साथियों की रंगरेलियों के प्रति स्पष्ट रूप से घृणा प्रकट नही करता था तो इसका कारण उसका अद्भुत विनम्र व्यवहार, सुन्दर स्वभाव और सहज बुद्धि का होना ही था। उसके साथी वोदका पीते थे, पाँच-पाँच रूबल का दॉव लगाकर जुआ खेलते थे। मतलब यह कि उनका जीवन बड़ा असंयमित था।

लेफ्टिनेन्ट-कप्तान मिखायलोव के विचार इन पुरानी स्मृतियों से अपने आप ही हट कर सपनों और कल्पनाओं की तरफ चले गए। "नताशा कितनी आश्चर्यचकित और प्रसन्न होगी," घिसी एड़ी के बूट पहने, एक पतली सी गली में आगे बढ़ते हुए उसने सोचा, "जब वह अखबारों में यह पढ़ेगी कि मैंने तोपखाने पर हुए आक्रमण का नेतृत्व किया था और मुझे 'सन्त जार्ज' मेडल मिला था। मैं जल्दी ही 'पूरा कप्तान' बन जाऊँगा जिसके लिए पहले ही सिफारिश की जा चुकी है। और यह भी बहुत कुछ सम्भव है कि अपनी लम्बी नौकरी के कारण मैं इस साल ही मेजर बन जाऊँ क्योंकि बहुत से अफसर मारे ही जा चुके हैं और इसकी भी बहुत अधिक सम्भावना है कि लड़ाई खत्म होने तक और भी बहुत से मारे जायेंगे। फिर इसके बाद कोई दूसरी लड़ाई होगी और क्योंकि बहादुरी के कारण मेरा नाम मशहूर हो चुका होगा, मुझे एक पूरी रेजीमेन्ट मिल जायगी···मैं लेफ्टीनेन्ट-कर्नल बन जाऊँगा···मेरे गले में 'अन्ना' नामक पट्टी लगी होगी···फिर कर्नल" इस समय तक वह एक जनरल बन चुका था और अपनी मुलाकात द्वारा नताशा को सम्मान प्रदान कर रहा था जो उसके मित्र की विधवा पत्नी थी और उसकी कल्पना के अनुसार उसका मित्र उस समय तक मर चुका था। इसी समय पार्क की तरफ से आते हुए संगीत और लोगों के शोरगुल ने उसके इन सपनों को भंग कर दिया और उसने देखा कि वह खुद वही पार्क में है और अब भी अपनी उसी औकात में है—तुच्छ, भद्दा और दब्बू पैदल सेना का लेफ्टीनेन्ट कप्तान जैसा कि वह पहले था।

## ३

पहले वह उस शामियाने के पास गया जिसके नजदीक गानेवाले खड़े थे। उनके पास ही, गाने की किताबों को रखने की टिकटियों का अभाव होने के कारण, उसी रेजीमेन्ट के सिपाही हाथों में किताबें

खोले खड़े हुए थे । और उनके चारों ओर फौज के क्लर्क, कैडेट, नौकरानियाँ आदि घेरा बाँधे खड़े थे। उन्हीं के साथ तार-तार हो रहे ओवरकोट पहने अफसर लोग भी खड़े थे जो सुनने के बजाय घूर-घूर कर ज्यादा देख रहे थे। शामियाने के चारों ओर, खास तौर से नाविक सेना के अफसर, अंग रक्षक अफसर और पैदल सेना के अफसर लोग सफेद दस्ताने और नए ओवर कोट पहने खड़े, बैठे या घूम रहे थे। बड़ी सड़क पर तरह तरह के अफसर और तरह तरह की औरतें, जिनमें कुछ टोपियाँ लगाए हुए थीं, घूम रहीं थीं। इन औरतों में ज्यादातर सिर पर रूमाल बाँधे हुए थीं ( कुछ के सिर पर न तो टोपी थी और न रूमाल ) परन्तु उनमें से एक भी बुड्ढी नहीं थी—सब की सब जवान थीं। नीचे, छायादार सड़क पर जो बबूल के फूले हुए पेड़ों की सुगन्ध से मंहक रही थी, कुछ लोग अकेले घूम रहे थे या बैठे हुए थे।

उसकी रेजीनेन्ट के कप्तान ओब्झोगोव और पताका-वाहक सुस्लीकोव को छोड़कर, जिन्होंने बड़े उत्साह के साथ उससे हाथ मिलाये थे, और कोई भी लेफ्टीनेन्ट कप्तान मिखायलोव के आगमन से विशेष रूप से प्रसन्न नहीं हुआ। मगर कप्तान ओब्झोगोव ऊँट के बालों की बनी पतलून पहने हुए था, उसके हाथों में दस्ताने भी नहीं थे, ओवरकोट गन्दा हो रहा था और चेहरा लाल और पसीने से तरबतर था। और पताका वाहक सुस्लीकोव ने इतनी जोर से बातें कीं और इतनी हीनता का प्रदर्शन किया कि मिखायलोव को दूसरों द्वारा उन लोगों के साथ घूमते हुए देखे जाने में बड़ी लज्जा अनुभव हुई, विशेष रूप से सफेद दस्ताने पहने हुए उन अफसरों द्वारा देखे जाने में जिनमें से एक एडज्युटेन्ट से उसकी दुआ-सलाम थी और एक दूसरे से, जो स्टाफ अफसर था, वह दुआ-सलाम का

सम्बन्ध रख सकता था क्योंकि इससे पहले वे दो बार एक परिचित मित्र के यहाँ और मिल चुके थे।

साथ ही ओब्झोगोव और सुस्लीकोव के साथ घूमने में मजा ही क्या था जब कि वह दिन में कम से कम छः बार उन्हें देख और उनसे हाथ मिला चुका था? वह इस काम के लिए तो वहाँ गाना सुनने के लिए आया नही था।

वह इस बात को ज्यादा पसन्द करता कि घूमता हुआ उस अंग-रक्षक अफसर के पास जाता जिससे उसकी दुआ-सलाम थी और उन लोगों से बाते करता। वह यह सब इसलिए नही करना चाहता था कि कप्तान ओब्झोगोव, पताका-वाहक सुस्लीकोव, लेफ्टीनेन्ट पिस्तेस्की आदि के सामने अपने महत्व का प्रदर्शन करे बल्कि सिर्फ इसलिए कि वे लोग अच्छे आदमी थे और जानकार होने के नाते उसे नई बातें सुना सकते थे।...मगर लेफ्टीनेन्ट कप्तान मिखायलोव को उनके पास जाने में इतनी झिझक और डर क्यों लग रहा था? "अगर उन्होंने मेरी सलाम न ली?" उसने सोचा "या अगर उन्होने सलाम का जवाब दे भी दिया मगर इस तरह आपस में बाते करते रहे मानो मैं वहाँ उपस्थित ही नहीं हूँ? या अगर वे एकदम ही वहाँ से चल दें और मैं उन बड़े आदमियों के बीच अकेला ही खड़ा रह जाऊँ?" शब्द "बड़ा आदमी" (जिसका अर्थ यह था किसी भी वर्ग का महत्वपूर्ण व्यक्ति) कुछ दिनों से रूस में काफी प्रचलित हो चुका था (जहाँ यह शब्द न हो वहाँ लोगों को इस पर सोचना चाहिए) और देश के हर हिस्से में और समाज के हर वर्ग में, जहाँ वर्ग-भेद की भावना थी, फैल चुका था (क्या कभी ऐसा समय या परिस्थितियाँ भी होती हैं जब यह गन्दी आकांक्षा नहीं फैलती?)। यह शब्द व्यापारियों, सरकारी अफसरों, क्लर्कों और फौजी अफसरों, में तथा

सारातोव, मामादयशी, और विन्नित्शा आदि नगरों में, जहाँ भी लोग हों, फैल चुका था। और क्योंकि सेवास्तोपोल के घिरे हुए नगर में बहुत से आदमी थे, वहाँ गर्व की भावना—"बड़े आदमियों" का होना भी जरूरी था। इस बात के होते हुए भी कि वहाँ 'बड़े' और 'साधारण' सभी तरह के आदमियों के सिर पर मौत रातदिन मंड़राती रहती थी। कप्तान ओब्झोगोव के लिए लेफ्टीनेन्ट-कप्तान मिखायलोव "बड़ा आदमी" था क्योंकि उसका कोट और दस्ताने साफ थे, और इस बात के लिए वह उसे सहन नहीं करता था हालांकि उसकी थोड़ी सी इज्जत जरूर करता था; और लेफ्टीनेन्ट कप्तान मिखायलोव की नजरों में एड्जूटेन्ट कालूगिन "बड़ा आदमी" था क्योंकि वह एक एड्जूटेन्ट था और दूसरे एड्जूटेन्टों के साथ घनिष्ठता दिखलाते हुए 'तू तड़ाक' से बातें करता था, इसलिए उसकी तरफ उसका झुकाव अधिक नहीं था यद्यपि वह उससे डरता अवश्य था। एड्जूटेन्ट कालूगिन काउन्ट नोरदोव को "बड़ा आदमी" समझता था और उससे हार्दिक घृणा करता था तथा उसकी बुराई भी करता था क्योंकि वह एक ए० डी० सी० था। इस तरह "बड़ा आदमी" एक बड़ा भयानक शब्द था। आखिर सब-लेफ्टीनेन्ट जोहोव अपने किसी साथी को एक स्टाफ अफसर के साथ बैठा हुआ देखकर क्यों व्यंग्य पूर्वक हँसता था? सिर्फ यही जताने के लिए कि यद्यपि वह "बड़ा आदमी" नहीं है फिर भी उनसे किसी बात में कम भी नहीं है। वह स्टाफ अफसर आखिर धीमे स्वर में भुनभुनाता हुआ क्यों बोलता है? अपने साथी को यह दिखाने के लिए कि वह एक "बड़ा आदमी" है और एक सब-लेफ्टीनेन्ट के साथ वार्तालाप करते हुए देखा जाना उसकी सज्जनता का ही प्रतीक है। एक कैडेट (छोटा अफसर) किसी सभ्रान्त महिला के पीछे चलता हुआ क्यों अपनी बाँहें हिलाता और आँखें मटकाता हुआ चलता

है जिसे कि उसने इससे पहले कभी भी नही देखा और जिससे बातें करने का वह कभी स्वप्न भी नही देख सकता ? सिर्फ उन अफसरों को यह दिखाने के लिए कि यद्यपि वह उन्हे टोपी उठाकर सलाम करता है फिर भी वह एक "बडा आदमी" है और उसे पूर्ण विश्वास है कि वह उनसे भी बाजी मार ले जा सकता है। तोपखाने का वह कप्तान उस अच्छे स्वभाव वाले अर्दली को क्यो परेशान करता है ? हरेक को यह दिखाने के लिए कि वह किसी की भी खुशामद नही करता और और "बड़े आदमियो" की उसकी नजर में कोई कीमत नहीं है।

अहंकार, गर्व—चारों तरफ अहंकार ही अहंकार छाया हुआ है। अर्थी तैयार हो रही है परन्तु अहंकार तब भी पीछा नही छोड़ रहा। उच्चादर्शों के लिए बलिदान की भावना रखने वालो में भी यही अहंकार! यह हमारे युग की एक चारित्रिक विशेषता और एक खास बीमारी है। क्या कारण है कि पुराने जमाने के लोगो में इस बीमारी का कोई नाम भी नही जानता था जैसे कि चेचक और हैजा जैसी बीमारियाँ उस समय अपरिचित थी ? क्या कारण है कि इस युग में सिर्फ तीन तरह के आदमी दिखाई पड़ते हैं: एक वे जो अहकार के अस्तित्व को देखकर उसे न्याय संगत मानते हैं और अपने आप उसके सन्मुख झुक जाते हैं; दूसरे वे जो इसे एक दुर्भाग्य पूर्ण परन्तु आवश्यक स्थिति मानते हैं; और तीसरे वे जो अचेतनावस्था में दासो की तरह अपने कार्यो पर इसके प्रभाव को स्वीकार कर लेते है। होमर और शेक्सपियर ने आखिर प्रेम, समृद्धि और दुख की कथाये क्यो कही थी जब कि हमारा इस युग का साहित्य 'असभ्यता' और 'अहंकार' की कभी न खत्म होने वाली एक लम्बी कहानी के अतिरिक्त और कुछ भी नही है।

दो बार लेफ्टीनेन्ट कप्तान मिखायलोव हिचकिचाता सा हुआ अपने उन "बड़े आदमियों" के झुंड के पास होकर टहलता हुआ गुजरा, मगर तीसरी बार हिम्मत करके उनके पास चला गया। उस झुंड में चार अफसर थे: एड्जूटेन्ट कालूगिन जिससे मिखायलोव परिचित था; एड्जूटेन्ट प्रिंस गाल्तसिन जो कुछ हद तक कालूगिन के लिए भी एक "बड़ा आदमी" था; लेफ्टीनेन्ट कर्नल नेफ़ेरदोव, उस तथा-कथित उच्च वर्ग के उन प्रसिद्ध "१२२" व्यक्तियों में से एक था जिसने कुछ देशभक्ति की भावना के कारण, कुछ महत्वाकांक्षा के कारण परन्तु प्रमुख रूप से इस कारण कि हरेक यही कर रहा था, दुबारा सेना में नाम लिखा लिया था। वह मास्को का एक पुराना गैर-शादी शुदा व्यक्ति था जो वहाँ के क्लबों में मशहूर हो चुका था। वह यहाँ उन असन्तुष्ट व्यक्तियों की पार्टी में शामिल हो गया था जो कुछ भी नहीं करती थी, कुछ भी नहीं समझती थी और उच्चाधिकारियों द्वारा प्रसारित की गई प्रत्येक आज्ञा की आलोचना किया करती थी। चौथा व्यक्ति घुड़सवार सेना का कप्तान प्रास्कुखिन था जिसकी गिन्ती भी उन "१२२" बड़े आदमियों में की जाती थी।

मिखायलोव के सौभाग्य से कालूगिन बड़ी प्रसन्न मुद्रा में था ( जनरल ने अभी उसके साथ गुप्त विषयों पर बातें की थीं और प्रिन्स गाल्तसिन, जो पीतर्सबर्ग से आया था, उसके साथ ठहरा हुआ था ), इसलिए उसने लेफ्टीनेन्ट कप्तान मिखायलोव के साथ हाथ मिलाने में अपना अपमान नहीं समझा। मगर ।स्कुखिन को बुरा लगा। वह इस बात को भूल गया कि मोर्चे पर मिखायलोव से उसकी अक्सर मुलाकातें होती रहती थी, उसने कई बार उसकी शराब पी थी और यहाँ तक कि उस पर मिखायलोव के बारह रूबल और पचास कोपेक उधार चाहिए थे जो वह जूये में हार गया

था। क्योंकि प्रिन्स गाल्तसिन से उसका परिचय घनिष्ठ नहीं था इसलिए उसने उसके सामने यह प्रकट करना उचित नही समझा कि उसका परिचय एक मामूली लेफ्टीनेन्ट-कप्तान के साथ है, इसलिए उसने मिखायलोव से कहा, "हम लोग मोर्चे पर फिर कब चलेंगे ? तुम्हें याद है कि हम लोग स्वार्टज किले में मिले थे ? वहाँ बड़ी गर्मी थी, थी न ?"

"हाँ, थी," मिखायलोव ने जबाब दिया और उसे उस दृश्य की दुखद स्मृति हो आई कि उस रात को जब वह झुका हुआ मोर्चे को जाने वाली खाई में रेंगता सा चला जा रहा था और उसकी मुलाकात कालूगिन से हुई थी जो अपनी तलवार को खड़खड़ाता हुआ प्रसन्न मुद्रा में लम्बे लम्बे डग भरता चल रहा था; और उसे देखकर वह कितना झेंप गया था।

"मुझे दरअसल जाना तो कल है," मिखायलोव ने कहना जारी रखा, "लेकिन हमारा एक अफसर बीमार पड़ गया है, इसलिए..." वह कहना चाह रहा था कि यद्यपि उसका जाने का नम्बर नहीं था परन्तु क्योंकि आठवी कम्पनी का कमान्डर बीमार था और कम्पनी में केवल एक ही पताका-वाहक था, इसलिए उसने अपना कर्त्तव्य समझा कि लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शेत्स्की के बदले वह खुद चला जाय और इसी वजह से वह आज ही शाम को मोर्चे पर जाने वाला था। मगर कालूगिन उसकी बातों की तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा था।

"मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि एक या दो दिन में ही कुछ घटना घटने वाली है," उसने प्रिन्स गाल्तसिन से कहा।

"आज कुछ भी नई बात नहीं होगी ?" मिखायलोव ने पहले कालूगिन और फिर गाल्तसिन की तरफ देखते हुए शंकित

से स्वर में पूछा । किसी ने भी उसकी बात का जबाव नहीं दिया । गाल्तसिन ने बड़े मजाकिया ढंग से सिर्फ अपनी नाक फुलाई और मिखायलोव की टोपी की सीध में देखते हुए कुछ रुक कर कहा :

"कितनी सुन्दर लड़की है, वह लाल रूमाल वाली ! तुम जानते हो कप्तान, वह कौन है ?"

"एक मल्लाह की लड़की है। मेरे घर के पास ही रहती है," लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने जबाब दिया ।

"जरा चलो न, उसे पास से देखें ।"

प्रिंस गाल्तसिन ने एक बाँह कालूगिन की बाँह में तथा दूसरी लेफ्टीनेन्ट कप्तान की बाँह में डाली—इस बात को जानते हुए कि ऐसा करने से मिखायलोव को बड़ी खुशी होगी, और हुआ भी ऐसा ही ।

लेफ्टीनेन्ट-कप्तान टोने-टोटकों में विश्वास रखने वाला आदमी था। उसने इस बात को बहुत बड़ा पाप समझा कि मोर्चे पर जाने से पहले किसी औरत के साथ मौज उड़ाई जाय । इस अवसर पर तो उसने ऐसा दिखाया मानो वह पक्का नास्तिक ही हो। मगर प्रिन्स गाल्तसिन या कालूगिन पर उसका तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा । और उस लाल रूमाल वाली लड़की ने उसे आश्चर्य से आँखें फाड़कर देखा क्योंकि जब कभी वह उस लड़की की खिड़की के सामने होकर गुजरता था तो उसे देखकर शरमा जाता था। प्राश्कुखिन उनके पीछे-पीछे चल रहा था और लगातार प्रिन्स गाल्तसिन की बाँह को थपथपाता और फ्राँसीसी भाषा में अपनी राय जाहिर करता चला जा रहा था । परन्तु क्योंकि वह रास्ता उन चारों के बराबर-बराबर चलने के लायक

चौड़ा नहीं था इसलिए उसके लिए अकेले पीछे-पीछे चलने के अलावा और कोई भी चारा नहीं था। दूसरे मोड़ पर ही उसे मौका मिला कि बहादुर और मशहूर जहाजी अफसर सव्र्याजिन के हाथ में हाथ डाल कर चल सके क्योंकि उसने उसके पास आकर उससे बातें की थीं और साथ ही वह इन "बड़े आदमियों" के साथ चलने का इच्छुक भी था।

उस मशहूर हीरो ने खुशी के साथ अपनी तगड़ी और गठीली भुजा, जिसने अनेक फ्राँसीसियों को मौत के घाट उतारा था, प्राश्कुखिन की एक भुजा में डाल ली, जिसे हरेक ही नहीं बल्कि सव्र्याजिन भी कुछ हद तक बहादुर समझता था। अन्त में, जब प्राश्कुखिन ने प्रिन्स गाल्तसिन को यह बताते हुए कि उसकी इस मशहूर जहाजी अफसर से कैसे मुलाकात हुई थी, फुसफुसाते हुए यह कहा कि यह वही मशहूर हीरो है, तो प्रिन्स गाल्तसिन ने सव्र्याजिन की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया क्योंकि वह अपने को उससे कम बहादुर नहीं समझता था। और इस समझने का कारण यह था कि कल जब वह चौथे बुर्ज पर खड़ा हुआ था तो उसने अपने से सिर्फ बीस कदम की दूरी पर ही एक बम्ब को फटते हुए देखा था। इसी कारण वश उसने अपने को सव्र्याजिन से वीरता में कम नहीं समझा और साथ ही उसे इस बात का भी विश्वास था कि बहुतों को शोहरत बड़ी आसानी से मिल जाया करती है।

इधर लेफ्टीनेन्ट-कप्तान मिखायलोव को इन "बड़े आदमियों" के साथ घूमने में इतना मजा आया कि वह त—द्वारा भेजे गए उस प्रिय पत्र को भूल गया। साथ ही वह उन दुखद विचारों से भी मुक्त हो गया जो मोर्चे पर जाने के ख्याल से उसके मन में उठ रहे थे और सबसे बड़ी बात तो वह यह भूल गया कि उसे सात बजे घर पहुँच

जाना था। वह उन लोगों के साथ तब तक बना रहा जब तक कि उन्होंने सिर्फ आपस में ही बातें करना और उसकी उपेक्षा करना शुरू कर न दिया तथा अन्त में यह इशारा किया कि अब वह जा सकता है। और अन्त में वे लोग उसे छोड़कर चल दिये। फिर भी लेफ्टीनेन्ट-कप्तान को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और जब वह वेरन पेस्ट नामक एक नौसिखिए अफसर के पास होकर गुजरा, जो कल रात से अपने को बहुत समझने लगा था, क्योंकि उसने पहली ही बार वह रात पाँचवें मोर्चे पर बिताई थी और इस कारण अपने को हीरो मानने लगा था, तो मिखायलोब ने इस बात का जरा भी बुरा नहीं माना कि उस अफसर ने उसे बड़े घमन्ड के साथ सलाम की।

## ४

जैसे ही लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने अपने मकान की दहलीज पर पैर रखा कि उसके दिमाग में एक दूसरी ही तरह के विचार उठने लगे। वहाँ, उसके सामने मिट्टी के ऊबड़-खाबड़ फर्श वाला छोटा सा कमरा, सिकुड़े हुए कागजों वाली खिड़की, पुराना बिस्तर, उसका कम्बल जिस पर बने हुए चित्र में एक 'अमेजन' को दीवाल पर कीलों से ठोक दिया गया था और जिस पर दो 'तुला' पिस्तौलें जड़ी हुई थीं, सूती रजाई से ढका हुआ गन्दा पलंग जो उसके साथ ही रहने वाले एक नौसिखिये अफसर का था आदि चीजें पड़ी थीं। इसके अलावा वहाँ उसका नौकर निकिता था—गन्दे और उलझे हुए बालों वाला। वह खुजाता हुआ फर्श पर से उठ रहा था। वहीं उसका ओवरकोट, बूट, बन्डल, जिसमें से एक पनीर का टुकड़ा और एक बीयर की बोतल की गर्दन बाहर निकल रही थी, जिसे उसने मोर्चे

पर जाने की तैयारी के लिए शराब से भर लिया था, बिखरी पड़ीं थीं। और अचानक भयभीत सा होकर उसने याद किया कि उसे वह पूरी रात अपनी कम्पनी के साथ मोर्चे पर ही बितानी थी।

"मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि मैं आज रात को जरूर मारा जाऊँगा," वह मन ही मन बड़बड़ाया, "सबसे बुरी बात तो यह है कि मेरा जाने का नम्बर नहीं था, मैंने तो खुद ही अपना नाम दे दिया था। और जो कोई भी इस तरह अपना नाम देता है, वह जरूर मारा जाता है। इस बदमाश नेप्शित्शित्स्की को क्या हो गया? शायद वह बीमार नहीं है, और, यहाँ एक आदमी उसकी वजह से मारा जा रहा है। मैं जरूर मारा जाऊँगा। फिर भी, अगर मैं नहीं मारा गया तो शायद मुझे एक तमगा देने की शिफारिश कर दी जाय। मैंने देखा था कि रेजीमेन्टल कमान्डर कितना खुश हुआ था जब मैंने कहा था—"अगर लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की बीमार है तो मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।" अगर मैं मेजर नहीं बना तो भी मुझे 'आर्डर आव ब्लाडीमीर' का पदक तो अवश्य ही मिल जायेगा। यह मैं तेरहवीं बार मोर्चे पर जा रहा हूं। ओह तेरहवीं बार? बड़ा मनहूस नम्बर है। इस बार मैं जरूर मारा जाऊँगा, मुझे यकीन हो रहा है। मगर किसी न किसी को तो जाना ही था। कम्पनी एक पताका-वाहक की अधीनता में तो नहीं जा सकती थी। मान लो कुछ हो गया? रेजीमेन्ट की इज्जत, फौज की इज्जत खतरे में है। यह मेरा कर्त्तव्य है कि मैं जाऊँ, हाँ, यह मेरा कर्त्तव्य है! मगर मेरा एक ख्याल है।" लेफ्टीनेन्ट-कप्तान भूल गया कि उसका यह ख्याल, कम या ज्यादा पक्का, उसके दिमाग में उस समय हर बार उठता था जब कभी उसे मोर्चे पर जाना होता था। और उसे इस बात का पता नहीं था कि यही ख्याल थोड़े-बहुत रूप में मोर्चे पर जाने

से पहले हरेक के दिमाग में उठा करता है। अपनी कर्त्तव्य की भावना से थोड़ा बहुत सन्तुष्ट होकर, जो उसमें बहुत गहरी थी तथा जो सभी साधारण बुद्धि वालो मे पाई जाती है, वह अपने पिता को एक विदाई का पत्र लिखने बैठ गया। अपने पिता के साथ उसके सम्बन्ध, कई मामलो को लेकर, पिछले कुछ दिनो से काफी खराब से चले आ रहे थे। पत्र समाप्त करने में उसे दस मिनट लगे और जब वह उसे समाप्त कर मेज पर से उठा तो उसकी आँखो में आँसू भर रहे थे और वह मन ही मन उन प्रार्थनाओं को दुहरा रहा था जो उसे याद थी (उसे अपने नौकर के सामने जोर जोर से प्रार्थना करने में लज्जा अनुभव हो रही थी)। इसके बाद उसने पोशाक पहननी प्रारम्भ कर दी। उसके मन में 'सन्त मित्रोफेनस' की उस छोटी सी मूर्त्ति को चूमने की बलवती इच्छा उठ रही थी जो मरने से पहले उसकी माँ ने आशीर्वाद देते हुए उसे दी थी और जिसमें उसका गहरा विश्वास था। मगर क्योकि वह निकिता से शरमा रहा था, इसीलिए उसने उस मूर्ति को अपने कोट पर बाहर लटका लिया जिससे कि वह सडक पर पहुँचने पर बिना कोट के बटन खोले ही उसे चूम सके। उसके शराबी, गन्दे नौकर ने धीरे से उसका नया कोट उठा कर उसे पकड़ा दिया (उसका पुराना कोट जिसे वह हमेशा मोर्चे पर पहना करता था, ठीक नही हुआ था)।

"मेरा कोट क्यो नही ठीक हुआ। तू सिर्फ सोता ही रहता है, बदमाश!" मिखायलोव ने नाराज होकर कहा।

"सोता रहता हूँ," निकिता बड़बड़ाया, "मै सुबह से रात तक दौडता रहता हूँ और कुत्ते की तरह थक जाता हूँ और इस पर भी मुझे सीने के इजाजत भी नही मिलती।"

"मैं देखता हूँ कि तू फिर शराब पी आया है।"

"तो, क्या हुआ ? मैं आपके पैसों से तो नहीं पीता।"

"जबान बन्द कर, जंगली !" लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने चीख कर कहा। वह पहले से ही परेशान था अब निकिता की बदमतीजी को देख कर और भी अपना धीरज खो बैठा। निकिता को वह प्यार करता था, यहाँ तक कि उसे उसने ही बिगाड़ा था और उसके साथ उसने पूरे बारह वर्ष बिताये थे। उसे ऐसा लगा कि वह निकिता को मार बैठेगा।

"जंगली !- जंगली !" नौकर ने जबाब दिया, "साहब, आप मुझे गालियाँ क्यों देते है ? और वह भी ऐसे समय पर ! ऐसा करना पाप है।"

मिखायलोव को याद आया कि वह कहाँ जा रहा था और यह सोचकर लज्जित हो उठा।

"निकिता तू ऐसा है कि एक सन्त को भी गुस्सा दिला दे," उसने दबे हुए स्वर में कहा। "यह मेज पर पड़ा हुआ खत पिताजी के लिए है—इसे वहीं पड़ा रहने देना, छूना मत," उसने लाल पड़ते हुए आगे कहा।

"जी, साहब," अपने ही पैसो से पी हुई शराब के नशे में नम्र पड़ते हुए निकिता ने कहा और आँखें झपकाते हुए अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश करने लगा।

परन्तु, जब सहन में लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने कहा "विदा, निकिता !" तो निकिता प्रेम के अतिरेक से फूट-फूट कर रोने लगा और अपने मालिक का हाथ चूमने के लिए दौड़ा। "विदा, मालिक !" उसने जोर से नाक साफ करते हुए रोकर कहा।

सहन में खड़ी हुई बुड्ढे मल्लाह की विधवा, जो कि एक कोमल हृदय वाली नारी थी इस दृश्य से प्रभावित हो उठी और उसने अपनी

गन्दी आस्तीनों से अपने आँसुओं को पोंछते हुए विलाप किया जिसका अभिप्राय यह था कि यदि शरीफ आदमियों को इस तरह तकलीफें उठानी पड़ती हैं तो इस बात में तो कोई आश्चर्य ही नहीं करना चाहिये कि उस जैसी गरीबनी को विधवा बनना पड़ा। और उसने सौवीं बार नशेबाज निकिता को अपनी दुखगाथा सुनाई : किस तरह पहली ही बमबारी में उसका पति मारा गया और किस तरह उसकी गाँव वाली झोपड़ी नष्ट भ्रष्ट हो गई (जिसमें वह अब रह रही थी उसकी अपनी नहीं थी) आदि आदि। मालिक के जाते ही निकिता ने सुबकना बन्द कर दिया, अपना पाइप सुलगाया और मकान-मालकिन की लड़की को बोदका लाने को भेज दिया। उसका दुख गायब हो गया और वह उस बुढ़िया के साथ एक बाल्टी के ऊपर लड़ने लगा जिसके विषय में उसका कहना था कि बुढ़िया ने उसे तोड़ डाला है।

"शायद मैं जरा सा घायल होकर ही बच जाऊँ," शाम होने पर अपनी कम्पनी के साथ मोर्चे की तरफ जाते हुए मिखायलोव ने सोचा। "मगर कहाँ ? कैसे ? यहाँ या यहाँ ?" मन ही मन अपनी छाती और पेट को छूते हुए उसने कहा। "अगर मेरे यहाँ चोट लगती है," अपनी जांघ के विषय में सोचते हुए वह कहने लगा "और गोली पार निकल जाती है फिर भी दर्द तो होगा ही। परन्तु मानलो कि कोई टुकड़ा भीतर रह गया ? तब तो मेरा खातमा ही समझो।"

किसी तरह लेफ्टीनेन्ट-कप्तान, नीचे झुका हुआ, खाईयों के सहारे सहारे रेंगता मकानों के पास जा पहुँचा। वहाँ, घुप अंधेरे में, उसने एक सफरमैना टोली के अफसर की मदद से अपने सिपाहियों को अपना अपना काम बता दिया और खुद दीवाल के नीचे बने एक आले से में जम गया। गोलाबारी कम हो रही थी, काफी देर बाद एक चमक दिखाई पड़ जाती थी, कभी हमारी तरफ और

कभी दुश्मन की तरफ, और बम का जलता हुआ पलीता आसमान में एक भयानक धनुष की सी अर्द्ध गोलाकार रेखा बनाता हुआ उस अन्धकार में निकल जाता। मगर सारे बम उस जगह से, जहा लेफ्टीटेन्ट-कप्तान बैठा हुआ था, काफी दूर या दाहिनी तरफ गिर रहे थे। इसलिए कुछ आश्वस्त होकर उसने वोदका पी, पनीर का एक टुकड़ा खाया, सिगरेट जलाई और प्रार्थना करके सोने की तैयारी करने लगा।

## ५

प्रिन्स गाल्तसिन, लेफ्टीनेन्ट-कर्नल नेफेरदोव और कैडेट बेरन पेस्ट, जिसकी उन लोगों से बाग में मुलाकात हो गई थी, और प्राश्कुखिन जिसे न तो किसी ने आने के लिए कहा था और न जिससे किसी ने बात की थी मगर जो इतने पर भी उनके पीछे चिपका हुआ था, ये सब लोग वहाँ से कालूगिन के यहाँ चाय पीने के लिए चल दिए।

"तुमने मुझे वास्का मेन्दल की पूरी बात नहीं बताई कि उसकी शादी कैसे हुई?" कालूगिन ने अपना कोट उतारते हुए और खिड़की के पास पड़ी एक आराम कुर्सी पर बैठते हुए पूछा। इसके बाद उसने अपनी साफ, कलफ की हुई, हालेन्ड मार्का कमीज के बटन खोले।

"ओह मेरे दोस्त, तुम्हारा हँसते हँसते बुरा हाल हो जायेगा! एक समय तो पूरे पीतर्सबर्ग में इसी बात की चर्चा होती रहती थी," गाल्तसिन ने पियानो के स्टूल पर से नीचे कूद कर कालूगिन के पास खिड़की की चौखट पर बैठ कर हँसते हुए कहा। "बड़ी मजेदार घटना है। मुझे सारी बातें मालूम है।" और उसने पूरे जोश'खरोश के साथ एक ऐसी प्रेम-कहानी सुनाई जिसे हम यहाँ नहीं लिखेगे क्योंकि वह हमारे लिए व्यर्थ है।

सब लोग कमरे में इधर उधर आराम से बैठ गए थे—एक खिड़की की चौखट पर, दूसरा घुटने ऊपर उठाये हुए, और तीसरा पियानो पर। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह थी कि सिर्फ प्रिन्स गाल्तसिन ही नहीं परन्तु सब के सब इस समय अपने बाग वाले रूप से बिल्कुल भिन्न प्रतीत हो रहे थे। उनकी वह भद्दी अकड़, जिसके कारण वे उन फौजी अफसरों को नीची निगाह से देख रहे थे, इस समय गायब हो चुकी थी। यहाँ, अपने ही समाज के बीच, वे अपने असली रूप में थे—नितान्त स्वाभाविक। विशेष रूप से कालूगिन और गाल्तसिन तो अत्यन्त आकर्षक, स्वच्छन्द, प्रसन्न और सरल स्वभाव वाले युवक बन गए थे। वार्तालाप का विषय साथी अफसरों और पीतर्सवर्ग के सभी व्यक्तियों के परिचितों आदि से ही सम्बन्धित था।

"मास्लोत्स्कोय के क्या हाल हैं?"

"कौन सा? लाइफ गार्ड वाला या घुड़सवार फौज वाला?"

"मैं दोनों को जानता हूँ। घुड़सवार फौज वाला तो मेरे समय में बिल्कुल अनाड़ी था। उसी समय स्कूल से निकल कर आया था। मगर उस बड़े वाले के क्या हाल हैं—क्या अभी तक वह कप्तान ही है?"

"हाँ! बहुत दिनों से!"

"क्या अभी तक अपनी उसी जिप्सी लड़की से लगा हुआ है?"

"नहीं, उसे छोड़ दिया…"

वे लोग इसी तरह की बातें करते रहे।

फिर गाल्तसिन पियानो पर जा बैठा और एक बहुत सुन्दर जिप्सी गाना सुनाया। प्रास्कुखिन ने भी, यद्यपि वह बिना बुलाये आया था, एक गाना सुनाया और इतना सुन्दर गाया

कि उससे और भी सुनाने के लिए प्रार्थना की गई और इससे वह बडा खुश हुआ ।

एक चाँदी की ट्रे पर चाय, मलाई और केक रखे एक नौकर भीतर आया ।

"प्रिन्स को दो," कालूगिन ने आज्ञा दी ।

"क्या यह आश्चर्य की बात नही है," एक गिलास उठाकर खिडकी के पास जाते हुए गाल्तसिन ने कहा, "कि हम लोग यहाँ एक ऐसे शहर में जो दुश्मन से घिरा हुआ है—पियानो बजा रहे हैं, मलाई के साथ चाय पी रहे हैं और वह भी एक ऐसे मकान में जिसे पीतर्सबर्ग में भी पाकर मै स्वयं को भाग्यशाली समझता ?"

"अगर हमारे पास यह सब न होता," सदैव असन्तुष्ट रहने वाले उस बुढ्ढे लेफ्टीनेन्ट-कर्नल ने कहा, "तो हर समय एक अनिश्चितता के वातावरण के भार को सहन करना असम्भव हो जाता । निरन्तर रहने वाली यह भावना कि अभी कुछ होने वाला है असह्य हो उठती । हम लोग देख रहे हैं कि दुश्मन हमारे ऊपर बिना रुके बराबर गोलाबारी कर रहा है । अगर हम लोगों को कूड़े करकट में रहना पड़ता और आराम के साधन न होते......"

"मगर हमारे पैदल फौज के अफसरो का क्या हाल है," कालूगिन ने कहा, "वे लोग मोर्चों पर सिपाहियों के साथ रहते हैं, खाइयों में सोते हैं और उन्हे खाना भी सिपाहियो जैसा ही खाना पड़ता है । उनसे तो जरा पूछो ?"

"यही बात तो मेरी समझ में नही आती," गाल्तसिन ने कहा । "और, सच बात तो यह है कि मै इस बात का विश्वास ही नही कर सकता कि गन्दे हाथो और गन्दे कपड़ो वाले लोग भी बहादुर

हो सकते हैं। उन लोगों में तो उच्च वर्ग के लोगों की सी बहादुरी हो ही नहीं सकती।"

"वे लोग तो इस प्रकार की वीरता की कल्पना भी नहीं कर सकते," प्राश्कुखिन ने कहा।

"तुम बकते हो!" कालूगिन नाराज होकर उसे टोकते हुए बोला। "मैंने यहाँ उन लोगों को तुमसे ज्यादा देखा है और मेरा हमेशा यह विश्वास रहेगा कि हमारी पैदल सेना के अफसर बहादुर हैं, अद्भुत हैं, भले ही इनके जूंए भरी हों या वे दस-दस दिन तक कपड़े न बदलते हों।"

उसी समय एक पैदल सेना का अफसर भीतर आया।

"मुझे···मुझे आज्ञा मिली है···क्या मैं जन···हिज एक्सेलेन्सी से मिल सकता हूं? मैं जनरल न० न० के यहाँ से आया हूं।" उसने हिचकिचाते हुए कहा और सलाम की।

कालूगिन उठा और बिना उस अफसर की सलाम का जवाब दिए, उससे प्रच्छन्न अपमान से भरी नम्रता और एक अक्खड़ अफसरी मुस्कराहट के साथ कहा कि क्या वह थोड़ी देर इन्तजार कर सकता है। और उस अफसर से बैठने के लिए भी न कह कर वह गाल्तसिन की तरफ मुड़ा और फ्रांसीसी भाषा में बातें करने लगा। इससे वह बेचारा अफसर कमरे के बीचोबीच खड़ा का खड़ा रह गया और उसकी समझ में यह नहीं आया कि वह स्वयं अपने को या बिना दस्ताने वाले अपने उन हाथों को कहाँ छिपाए जो उसके सामने लटक रहे थे।

"बहुत जरूरी सन्देश है, साहब," उसने कुछ देर रुक कर कहा।

"आह! तो इधर आइये," कालूगिन ने उसी अपमानजनक मुस्कराहट के साथ कहा और कोट पहनते हुए उस अफसर को दरवाजे की तरफ ले चला।

"अच्छा, दोस्तो, मुझे यकीन है कि आज की रात भयानक होगी।" कालूगिन ने जनरल के क्वार्टर से लौटते हुए कहा।

"क्यों? क्या बात है? हमला होगा?" वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम। खुद अपने आप देख लेना," कालूगिन ने भेदभरे ढंग से मुस्करा कर जबाब दिया।

"अच्छा भई, अब बता दो न," बेरन पेस्ट ने प्रार्थना की, "अगर कोई हमला होता है तो मुझे पहली ही मुठभेड़ में त—रेजीमेन्ट के साथ जाना पड़ेगा।"

"अच्छी बात है, चले जाना, भगवान तुम्हारी रक्षा करेगा।"

"मेरा कमान्डर भी मोर्चे पर है इसलिए मुझे भी जाना पड़ेगा," प्राश्कुखिन ने अपनी तलवार का कमरबन्द बाँधते हुए कहा—मगर किसी ने भी जबाब नहीं दिया—उसे यह खुद ही जानना चाहिए कि उसे जाना है या नहीं।

"मेरा ख्याल है कि कुछ भी नहीं होगा," बेरन पेस्ट ने कहा। होने वाले युद्ध की कल्पना से उसका हृदय बैठा जा रहा था मगर फिर भी उसने टोपी तिरछी करके लगाई और मजबूत कदमों से प्राश्कुखिन और नेफेरदोव के साथ, जो खुद भी भयभीत हृदय से अपने अपने मोर्चों पर जाने की जल्दी में थे, कमरे में से बहर निकला। "विदा, सज्जनो!" "खुदा हाफिज दोस्तो! फिर रात को मिलेंगे," कालूगिन ने खिड़की में से झाँकते हुए प्राश्कुखिन और पेस्त से कहा और वे लोग अपने घोड़ों की काठियों पर कज्जाकों की तरह झुक कर बैठे हुए दुलकी चाल से बाहर निकले। वे सब के सब अपने को भी कज्जाक ही समझ रहे थे।

"हाँ, ठीक है !" कैडेट ने कालूगिन की बात को न समझते हुए चिल्लाकर कहा और थोड़ी देर बाद ही उनके छोटे-छोटे कज्जाक घोड़ों की टापों की आवाज उस अंधेरी सड़क पर गायब हो गई।

"नहीं, सच बताओ, क्या आज रात को सचमुच कुछ होने जा रहा है ?" गाल्तसिन ने कालूगिन की बगल में खिड़की की चौखट पर झुक कर मोर्चों पर सनसनाते हुए गोलों को देखने का प्रयत्न करते हुए पूछा।

"मैं तुम्हें यह बात बता सकता हूँ। तुम कभी मोर्चों पर गए हो, क्यों?" ( गाल्तसिन ने सिर हिलाया यद्यपि वह सिर्फ एक बार ही चौथे बुर्ज पर गया था ) । "अच्छा, तो, देखो ! हमारी छत के बिल्कुल सामने ही एक खाई है," और कालूगिन ने एक ऐसे व्यक्ति की तरह, जो यद्यपि. विशेषज्ञ नहीं होता फिर भी अपने को बहुत कुछ समझता है, अपने सामरिक ज्ञान के गर्व में डूबे हुए, अपनी और दुश्मन की सामरिक स्थिति का बड़ा उलझा हुआ सा विवरण दिया। और ऐसा करने में उसने मोर्चे बन्दी में प्रयुक्त होने वाले विशिष्ठ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया। और इस तरह आगामी युद्ध की पूरी योजना समझाई।

"देखो, उन लोगों ने अपनी बैरकों के पास ही हरकत करना शुरू कर दिया है। ओहो ! वह हमारा था या दुश्मन का ? वह ! जो वहाँ फटा है ?" उन लोगों ने खिड़की की चौखट पर झुके हुए, आसमान में टेढ़े-मेढ़े और भयानक रूप से उड़ते गोलों को देखते हुए कहा। उन्हें तोपों की चमक जो एकदम गहरे नीले आसमान को रोशनी से भर देती थी तथा बारूद का धुँआ आदि दिखाई दिया। इसके अतिरिक्त गोलावारी की निरन्तर बढ़ती हुई आवाजें भी उन्हें सुनाई पड़ रही थीं।

"कितना सुन्दर दृश्य है, क्यो है न ?" कालूगिन ने अपने मेहमान का ध्यान उस सुन्दर एवं भव्य दृश्य की तरफ आकर्षित करते हुए कहा। "देखो इन गोलों और तारों में भेद करना असम्भव हो रहा है।"

"हाँ, अभी मैंने भी यही सोचा था। मैं एक तारे की तरफ देख रहा था, मगर वह गिर गया, और देखो, वहाँ वह फट भी गया। और वह बड़ा तारा, वहाँ, क्या नाम है इसका ?—बिल्कुल गोले की तरह ही दिखाई दे रहा है।"

'तुम जानते हो, मैं इन उड़ते हुए गोलों को देखने का इतना आदी हो चुका हूँ कि मुझे इस बात का पक्का विश्वास है कि जब मैं रूस वापस जाऊँगा तो तारों को देखकर मुझे गोलों का भ्रम हो उठेगा। हरेक इनका इसी तरह आदी हो जाता है।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, मुझे इस युद्ध में बाहर जाना चाहिए ?" प्रिन्स गाल्तसिन ने थोडी देर की खामोशी के बाद पूछा। इस भयानक गोलाबारी की रात मे बाहर जाने के विचार मात्र से ही वह बुरी तरह कॉप उठा और साथ ही उसे यह सोच कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि शायद रात को उसे वहाँ नही भेजा जायगा क्योंकि उसे यह बात मालूम थी।

"हे भगवान, नही ! इस ख्याल को छोड़ो ! इसके अलावा मै भी तुम्हें नही जाने दूँगा," कालूगिन ने जबाव दिया। वह इस बात को अच्छी तरह जानता था कि गाल्तसिन को किसी भी दशा में वहाँ नही भेजा जाएगा। "भाई मेरे ! अभी तो तुम्हे जाने के बहुत से मौके मिलेगे।" उसने आगे कहा।

"सचमुच, अभी ? क्या सचमुच तुम्हारा यह ख्याल है कि मुझे नहीं जाना पड़ेगा ?"

उसी समय तोपों की गरज को डुबाती हुई हजारों बन्दूकों की एक साथ चलने की आवाज़ गूँज उठी। यह आवाज उसी तरफ से आ रही थी जिधर ये लोग देख रहे थे। उस दिशा में हजारों चिनगारियाँ चमकने लगीं।

"असली लड़ाई तो अब शुरू हुई है!" कालूगिन कह उठा। "जब मैं बन्दूकों की आवाज सुनता हूँ तो मुझसे शान्त नहीं रहा जाता। मेरे शरीर में सनसनी सी दौड़ने लगती है······। तुम्हें वह सुनाई दे रहा है—'हुर्रा' " उसने दूर पर उठती हुई शोर की उस आवाज को सुनते हुए कहा—"आ-आ-आ-आ-आच्"—यह आवाज बुर्जों पर से आ रही थी।

"ये किसकी खुशी की आवाजें हैं? उनकी या हमारी?"

"मैं कह नहीं सकता, मगर उन लोगों में अब तलवारों की लड़ाई हो रही होगी क्योंकि बन्दूकों की आवाज बन्द हो गई है।"

उसी समय एक ए० डी० सी० एक कज्जाक के साथ घोड़ा दौड़ाता हुआ खिड़की के नीचे सहन में आया और उतर पड़ा।

"तुम कहाँ से आ रहे हो?"

"बुर्ज पर से आ रहा हूँ! मुझे जनरल से मिलना है।"

"आओ! क्यों, क्या बात है?

"उन्होंने हमारी बैरकों पर हमला कर दिया है···उन पर कब्जा कर लिया है···फ्रांसीसी काफी सुरक्षित सेना ले आए हैं···हमारी फौजों पर हमला हो गया है···हमारे पास वहाँ सिर्फ दो बटालियन हैं," उस अफसर ने हाँफते हुए कहा। यह वही अफसर था जो शाम को पहले भी आया था। यद्यपि वह बुरी तरह हाँफ रहा था फिर भी हल्के और उछलते हुए से कदमों से चल रहा था।

"क्यों, क्या हम लोग पीछे हट आए हैं?" गाल्तसिन ने पूछा।

"नहीं," उस अफसर ने दृढ़ता के साथ कहा। "एक दूसरी बटालियन ठीक मौके पर आ पहुँची थी और हमने उस हमले को बेकार कर दिया, मगर रेजीमेन्ट का कमान्डर मारा गया और बहुत से अफसर भी मारे गए। मैं मदद के लिए और फौज माँगने आया हूँ..."

यह कहते हुए वह जनरल के कमरे में घुस गया, जहाँ हम लोग उसके साथ नहीं जाएँगे।

पाँच मिनट बाद कालूगिन अपने कज्जाक घोड़े पर बैठा हुआ था। उसका बैठने का ढङ्ग कज्जाकों की ही तरह अजीब सा था, जैसा कि मैंने प्रायः देखा है कि जब ए० डी० सी० लोग जनरल की आज्ञायें पहुंचाने के लिए मोर्चों की तरफ जाते हैं तो उन्हें इस तरह बैठने में बड़ा आनन्द मिलता है। और वे लोग युद्ध के अन्तिम परिणाम की सूचना की प्रतीक्षा इसी तरह बैठे हुए करते हैं। इस बीच गाल्तसिन, उस भयङ्कर उद्वेग से विचलित होकर, जो उस दर्शक के हृदय में अपने आप उठने लगता है जब वह अपने पास ही युद्ध होता हुआ देखता है, घर से बाहर निकल गया और निरुद्देश्य सड़क पर इधर से उधर घूमने लगा।

## ६

सिपाहियों के झुण्ड के झुण्ड घायल व्यक्तियों को स्ट्रेचरों पर लादे ला रहे थे या उन्हें पैदल ही सहारा देते हुए ले जा रहे थे। सड़क पर घनघोर अन्धकार था। सिर्फ अस्पताल की खिड़कियों अथवा रात को देर तक जागने वाले अफसरों के मकानों की खिड़कियों में ही कहीं कहीं रोशनी दिखाई पड़ रही थी। बुर्जों पर से तोपों और बन्दूकों की चलने की तेज आवाजें अब भी आ रहीं थीं और अंधेरे से भरे आसमान

में चमकते हुए गोले उड़ रहे थे। कभी-कभी किसी हरकारे के तेज दौड़ते हुए घोड़े की टापों की आवाजें, किसी घायल के कराहने का स्वर, स्ट्रेचर लाने वालों के चलने और बातें करने की ध्वनियाँ, या भयभीत औरतों की चीख पुकारें, जो गोलाबारी देखने के लिए बाहर सहनों में निकल आई थीं, सुनाई पड़ रही थीं।

हमारा मित्र निकिता, बुड्ढे मल्लाह की विधवा, जिससे उसके सम्बन्ध पुनः मधुर हो गए थे, और उसकी दस साल की लड़की तीनों अपने सहन में खड़े हुए थे।

"हे भगवान ! देवी माता !" बुढ़िया ने मुंह फाड़ा और गहरी सांस ली। वह उन गोलों को देख रही थी जो आग की गेंदों की तरह इधर से उधर उड़ रहे थे। "इन्हें तो देखो ! कितना भयानक ! ओ, ओ, ओ ! ऐसा तो पहली बमबारी के समय भी नहीं हुआ था। देखो वह गोला कहाँ फटा है—हमारे गाँव में ठीक हमारे घर के ऊपर।"

"नहीं, नहीं, उससे आगे है ! सारे गोले चाची एरिन्का के बाग में गिर रहे हैं," बच्ची ने कहा।

"कहाँ, ओह मेरे मालिक इस समय कहाँ हैं ?" अब भी थोड़ा सा नशे में गाफिल निकिता गाते हुए से स्वर में विलाप कर उठा। "ओह, मैं अपने मालिक को कितना प्यार करता हूँ—मैं तुम्हें बता नहीं सकता......हालांकि वे मुझे मारते हैं फिर भी मैं उन्हें प्यार करता हूँ। मैं उन्हें इतना प्यार करता हूँ चाची कि भगवान न करे अगर कहीं वे मारे गए, मेरा यकीन करो, तो मैं नहीं जानता कि अपने साथ क्या कर बैठूं। भगवान की कसम ! वे भी कितने अच्छे मालिक हैं—वाह ! तुम उनकी तुलना उन ताश खोलने वालों से नहीं कर सकतीं ; वे सब के सब बड़े गन्दे हैं—उँह।" निकिता ने अपने

मालिक की रोशनी से चमकती खिड़की की तरफ इशारा करते हुए अपनी बात खत्म की। उसके कमरे में कैडेट भाव्दचेस्की ने लेफ्टीनेन्ट–कप्तान की अनुपस्थिति से फायदा उठाकर, अपने को 'सन्त जार्ज क्रॉस' मिलने की खुशी में दोस्तों की पार्टी जमा कर रखी थी। इस पार्टी में सब-लेफ्टीनेन्ट उग्रोविच और लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की थे। लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की का नम्बर मोर्चे पर जाने का था, मगर मुँह में फोड़ा होने की वजह से वह न जा सका था।

"तारे—वे बराबर टूटते चले जा रहे हैं!" छोटी लड़की चिल्ला उठी जो आकाश की तरफ टकटकी बांध कर देख रही थी। उसके इन शब्दों ने निकिता के शोकप्रदर्शन के उपरान्त छाई हुई स्तब्धता को भंग कर दिया। "देखो! वहाँ थोड़े से और हैं! माँ, इस सबका मतलब क्या है?"

"वे हमारे घर को पूरी तरह चकनाचूर कर डालेंगे," बुढ़िया ने अपनी लड़की की तरफ कोई भी ध्यान न देते हुए गहरी सांस ली।

"माँ, आज जब मैं और चाचा वहाँ बाहर गए थे," बच्ची अपनी सुरीली आवाज में चहकती रही, "हमने एक बड़े से तोप के गोले को ठीक कमरे के सामने देखा था, अलमारी की बगल में: यह रास्ते से ही होकर वहाँ पहुँचा होगा। बड़ा भारी था, तुम तो उसे उठा भी नहीं सकतीं।"

"जिनके पास पैसा था और जिनके मालिक जिन्दा थे वे सब की सब चली गईं," बुढ़िया बोली, "मगर मैं गरीबिनी······घर, सिर्फ वही मेरी जायदाद थी और वह भी बर्बाद हो गया। देखो! देखो! वह शैतान कैसा जल रहा है! भगवान! हे भगवान!"

"और जब हम लोग बाहर आ रहे थे एक बड़ा सा बम हमारे ऊपर उड़ता हुआ आया—सनूनूनू—और फट गया—धाँय! और हमें

लगा कि धरती कांप उठी। मैं और चाचा उसके एक टुकड़े से घायल होने से बाल बाल बच गए।"

"इसके लिए इस लड़की को भी तमगा मिलना चाहिए," कैडेट ने कहा। वह दूसरे अफसरों के साथ गोलाबारी देखने के लिए सहन में आ खड़ा हुआ था।

"तुम्हें जाकर जनरल से मिलना चाहिए, दादी, सच, जरूर मिलना चाहिए," लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की ने बुढ़िया के कन्धे को थपथपाते हुए कहा।

मैं सड़क पर जाकर देखता हूँ कि कोई नई बात है या नहीं," सीढ़ियों पर तेजी से उतरते हुए वह बोला।

"और हम लोग, तबतक बोदका का एक-एक गिलास चढ़ाते हैं क्योंकि अब तो बड़ा भय लगने लगा है," प्रसन्न भाव्दचेस्की ने हंसते हुए कहा।

## ७

प्रिन्स गालसिन को और भी अनेक घायल मिले, कुछ स्ट्रेचरों पर थे और कुछ एक दूसरे को सहायता देते हुए पैदल ही घिसटते चले जा रहे थे। सब के सब आपस में जोर-जोर से बातें कर रहे थे।

"तुम देखते कि वे लोग हमारी तरफ कैसे झपटे थे, दोस्तो," कन्धों पर दो बन्दूकों को लटकाये हुए एक लम्बा सा सिपाही भारी आवाज में कह उठा। "वे लोग 'अल्लाह' 'अल्लाह'* चीखते हुए घुसे चले आ रहे थे और एक दूसरे पर गिरे पड़ रहे थे। तुम एक को

---

* उस समय रूसी सिपाही फ्रांसीसियों द्वारा उच्चरित प्रत्येक युद्ध के नारे को 'अल्लाह' 'अल्लाह' ही समझते थे।

गिराते हो कि फौरन ही दूसरे उछल कर सामने आ जाते हैं और तुम उनको रोकने के लिए कुछ भी नहीं कर पाते। उनके झुन्ड के पीछे झुन्ड चले आ रहे थे !........."

इस बात पर गाल्तसिन ने बोलने वालों को रोका और पूछा :

"तुम बुर्ज पर से आ रहे हो ?"

"हाँ, सरकार !"

"अच्छा, वहाँ क्या हुआ ? मुझे सारी बातें बताओ।"

"क्या हुआ ? अरे, वे लोग आये, पूरी फौज थी, सरकार। वे लोग किले की दीवाल पर पागलों की तरह टूट पड़े और हम लोग उन्हें रोक भी न सके।"

"क्या कह रहे हो, उन्हें रोक न सके ? तुमने तो उन्हें मार कर भगा दिया था, क्यों ?"

"जब वे लोग इतने अधिक थे तो हम उन्हें कैसे मार कर भगा सकते थे ? उन्होंने हम सब को खत्म कर दिया और हमारी मदद को कोई भी नहीं आया।" (यहाँ वह गल्ती पर था, हम लोग खाई पर कब्जा जमाये हुए थे, मगर यह एक अद्‌भुत सत्य है, जिसका अनुभव हरेक कर सकता है, कि युद्ध में घायल हुआ हरेक सिपाही यही सोचता है कि वह लड़ाई हार चुका है और यह कि वह लड़ाई बड़ी भयानक थी।)

"मगर मुझसे तो यह कहा गया था कि उस हमले को बेकार कर दिया गया है," गाल्तसिन ने खीज भरे स्वर में कहा।

इस मौके पर लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की ने प्रिन्स गाल्तसिन को उसकी सफेद टोपी से उस अंधेरे में भी पहचान लिया और ऐसे महत्वपूर्ण व्यक्ति से बातें करने का उपयुक्त अवसर जानकर वह उसके पास आया।

"आपको कुछ पता है कि क्या घटना घटी है ?" उसने सम्मान के साथ अपनी टोपी छूकर सलाम करते हुए पूछा।

"यही तो मैं मालूम करने की कोशिश कर रहा हूं," प्रिन्स गाल्तसिन ने कहा और पुनः उस दो बन्दूकों वाले सिपाही की तरफ मुड़कर पूछा : "शायद तुम्हारे वहाँ से चले आने के बाद हमने उन्हें मार भगाया है ? क्या तुम्हें वहाँ से चले बहुत देर हो गई ?"

"मैं अभी वहीं से चला आ रहा हूं, सरकार !" उस सिपाही ने उत्तर दिया। "मुझे इस बात में शक है कि हमने उन्हें मार कर भगा दिया है। उन्होंने खाई पर जरूर कब्जा कर लिया होगा। वे लोग हमारे मुकाबले में बहुत ज्यादा थे।"

"तुम्हें खाई छोड़ते हुए शरम नही आई ? यह बहुत बुरी बात है !" गाल्तसिन ने उस सिपाही द्वारा प्रदर्शित उपेक्षा से क्रुद्ध होकर कहा। "तुम्हें अपने किए पर लज्जा नहीं आती !" उसने मुड़ते हुए फिर कहा।

"ओह ! ये लोग बड़े बदमाश हैं। आप इन्हें नहीं जानते, हुजूर" लेफ्टीनेन्ट नेफ्शित्शित्स्की बीच ही में चहक उठा। "मैं बताता हूँ, इन लोगों से स्वाभिमान, देशभक्ति, या और किसी भी तरह की भावना की आशा करना व्यर्थ है। जरा इस आती हुई भीड़ को तो देखिए। मुश्किल से इनका दसवाँ हिस्सा भी घायल नहीं हुआ है—ये सबके सब सहायक बन बैठे हैं—लड़ाई से भाग आने का सिर्फ बहाना है। ये सब बड़े मक्कार हैं…तुम्हें इस तरह का व्यवहार करते हुए शरम आनी चाहिए थी, जवानो, सचमुच अपनी खाई को इस तरह दुश्मन के हाथों सौंपते हुए तुम्हें जरा भी हया नहीं आई।" उसने सिपाहियों को सम्बोधित करते हुए कहा।

"मगर जब वे लोग ज्यादा थे तो हम कर ही क्या सकते थे ?" सिपाही बड़बड़ाया।

"मैं यह कहता हूं, सरकार" एक स्ट्रेचर पर लेटे हुए सिपाही ने, जैसे ही वह अफसरों के बराबर आया, कहा, "जब हमारे सब आदमी खत्म हो चुके थे तो हम वहाँ कैसे जमे रह सकते थे ? अगर हम लोग ज्यादा मजबूत होते तो हम कभी भी उसे न छोड़ते, जान रहते कभी भी नहीं छोड़ सकते थे। मगर हम करते क्या ? मैंने एक के किर्च घुसेड़ी कि दूसरा मेरे ऊपर भहरा कर गिर पड़ा।...ओह ! भाइयो, धीरे धीरे चलो ! आहिस्ते-आहिस्ते, ओह !" वह कराहा।

"यहाँ जितने आदमी आने चाहिए उससे ज्यादा आते हुए दिखाई पड़ रहे हैं," गाल्तसिन बोला और उस दो बन्दूकों वाले सिपाही की तरफ दुबारा मुड़ते हुए उसने पुकारा : "तुम कहाँ जा रहो ? ए, रुको !"

सिपाही रुक गया और उसने बांये हाथ से अपनी टोपी उतार ली।

"तुम कहाँ जा रहे हो और क्यों जा रहे हो ?" गाल्तसिन ने कठोरता के साथ चीखते हुए उससे पूछा। "बदमा..." मगर जैसे ही वह सिपाही के पास आया तो उसने देखा कि उसकी सीधे हाथ की आस्तीन खाली है और कुहनी से भी ऊपर तक खून से लथपथ हो रही है।

"मैं घायल हो गया हूँ, सरकार।"

"कहाँ ?"

"इस जगह। मेरा ख्याल है कि गोली लगी है," अपने हाथ की तरफ इशारा करते हुए सिपाही ने कहा। "और कोई चीज मेरे सिर

में भी आकर लगी थी मगर यह नहीं मालूम कि क्या चीज थी," यह कहकर उसने अपना सिर झुकाया और अपनी गर्दन के पीछे खून से चिपके हुए बाल दिखाए ।

"यह दूसरी बन्दूक तुम क्यों लिए जा रहे हो ?"

"यह एक फ्रांसीसी बन्दूक है सरकार ! मैंने इसे छीन लिया था । अगर मुझे इस आदमी की मदद न करनी होती तो मैं वहाँ से छोड़ कर कभी भी नहीं आता । अगर मैं उसे सहारा नहीं दूँगा तो वह गिर पड़ेगा," उसने एक सिपाही की तरफ इशारा करते हुए कहा जो आगे आगे अपनी बन्दूक का सहारा लिए अपनी बांई टाँग को बड़ी तकलीफ के साथ घसीटता हुआ लंगड़ा कर चल रहा था ।

"और तुम कहाँ जा रहे हो, शैतान !" लेपटीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की ने उस महत्वपूर्ण प्रिन्स का समर्थन करने के लिए एक दूसरे सिपाही से चीखकर कहा जो सड़क पर चला आ रहा था। वह सिपाही भी घायल था ।

प्रिन्स गाल्तसिन लेफ्टीनेन्ट नेप्शित्शित्स्की के इस व्यवहार पर अचानक लज्जित हो उठा और अपने पर तो उसे और भी ज्यादा लज्जा आई । उसने महसूस किया कि उसका मुंह लज्जा से लाल हो रहा है—जो कि बहुत ही कम हुआ करता था—और वह लेफ्टीनेन्ट की ओर से मुड़ गया । आगे कोई भी बात पूछे बिना और यहाँ तक कि उन घायल आदमियों की तरफ बिना नजर डाले हुए वह घर की तरफ चल पड़ा ।

उन घायल आदमियों की भीड़ में से, जिसमें स्ट्रेचर पर तथा पैदल भी घायल चले आ रहे थे, वह बड़ी मुश्किल से अपना रास्ता बनाता हुआ आगे बढ़ा और सीढ़ियों पर चढ़ने के बाद जो पहला कमरा उसके सामने पड़ा, उसी में घुस गया, भीतर नजर डाली, अपने

आप पीछे की तरफ घूमा और बाहर सड़क की तरफ दौड़ने लगा। यह दृश्य बहुत भयानक था।

वह बड़ा, ऊँची छत वाला, अंधेरा कमरा ठसाठस भरा हुआ था। उसमें सिर्फ चार या पाँच मोमबत्तियों की रोशनी हो रही थी जिसकी सहायता से सर्जन लोग घायलों की जाँच कर रहे थे। स्ट्रेचर लाने वाले बराबर घायलों को ला-लाकर फर्श पर एक दूसरे के पास लिटाते जा रहे थे। फर्श पर भी इतनी भीड़ थी कि बेचारे घायल एक दूसरे से टकरा जाते और एक दूसरे के खून में सन जाते थे। इसके बाद वे और लोगों को लाने के लिए बाहर निकल जाते। फर्श के खाली स्थलों पर दिखाई पड़ने वाले खून के गड्ढे, सैकड़ों मनुष्यों की बुखार से तप्त साँसें, स्ट्रेचर-लाने वालों के पसीने से उठी हुई दुर्गन्ध आदि ने वहाँ एक भारी, सघन बदबूदार वातावरण पैदा कर रखा था जिसमें चारों कोनों में रखी हुई मोमबत्तियाँ धुँधली रोशनी फेंक रही थी। कमरे में कराहने, गहरी साँसें लेने और मरते हुए आदमियों के गले में घरघराते हुए कफ की आवाजें गूँज रहीं थीं जिन्हें कभी कभी किसी की भयानक चीखें दबा देती थीं। कमरे में जगह जगह पर, घायलों के खून से लथपथ कोट और कमीजों के बीच नर्सें दिखाई पड़ रही थीं। उनके चेहरों पर शान्ति छा रही थी। वहाँ नारी की सहज सरस अश्रुपूर्ण दया के स्थान पर व्यावहारिक और कार्यशील सहानुभूति के भाव थे। वे मरीजों को लाँघती हुई दवाई, पानी, पट्टियाँ और साफ रुई ले जा रही थीं। डाक्टर लोग एकाग्र मुख किए, कुहनी तक आस्तीनों को चढ़ाए, मरीजों के बगल में घुटनों के बल झुके बैठे थे। नौकर उनके ऊपर मोमबत्तियाँ लिए खड़े थे। डाक्टर गोली द्वारा बनाए गए घावों को भीतर से टटोल-टटोल कर देखते और टूटे और लटकते हुए हड्डियों के टुकड़ों को मरोड़-मरोड़ कर जाँचते। उन्हें ऐसा करते

समय मरीजों के भयानक कष्टों और प्रार्थनाओं का कुछ भी ध्यान नहीं रहता था। उनमें से एक डाक्टर दरवाजे के पास एक छोटी सी मेज पर बैठा था। जब गाल्तसिन ने भीतर झाँक कर देखा तब उसने पाँच सौ बत्तीसवें मरीज का नाम अपने रजिस्टर में लिखा था।

"इवान, बोगयेव, प्राइवेट, तीसरी कम्पनी, स—रेजीमेन्ट, जांघ में कम्पाउन्ड फ्रेक्चर," एक दूसरे सर्जन ने कमरे के दूसरे कोने से एक टूटी हुई टाँग को जाँचते हुए जोर से कहा। "इसे औंधा कर दो।"

"ओह, मेरे बाप, मेरे बाप!" टाँग को न छूने की प्रार्थना करते हुए वह सिपाही चीख उठा।

"खोपड़ी की हड्डी टूट गई है।"

"सेमयोव नेफेरदोव, लेफ्टीनेन्ट-कर्नल, न—इन्फेन्टरी रेजीमेन्ट। ऐसा करने से काम नहीं चलेगा कर्नल। थोड़ा सा और बर्दाश्त करने की कोशिश करो वर्ना मुझे इसे छोड़ देना पड़ेगा," एक तीसरा व्यक्ति उस अभागे लेफ्टीनेन्ट-कर्नल के सिर में किसी तेज हथियार से किए गये घाव को भीतर से टटोलता हुआ बोला।

"ओह, रहने दो! भगवान के लिए जल्दी, जल्दी···आ-आ-आह!"

"सीने में छेद हो गया है···सेवास्त्यान सेरेदा, प्राइवेट···कौन-सी रेजीमेन्ट है?···नहीं, कुछ मत लिखो: मर रहा है। इसे उठा ले जाओ," सर्जन ने एक सिपाही के पास से हटते हुए कहा जिसकी पुतलियाँ उलट गईं थीं और गले में मौत घरघरा रही थी।

लगभग चालीस स्ट्रेचर ले जाने वाले, दरवाजे पर खड़े, उन लोगों को, जिनके घावों की मरहम-पट्टी की जा चुकी थी, अस्पताल ले जाने के लिए तथा मृतकों को चर्च पहुँचाने का इन्तजार कर रहे थे। वे इस दृश्य को खामोशी के साथ देखते हुए रह रह कर गहरी साँसें ले रहे थे।

बुर्ज पर जाते हुए, कालूगिन को रास्ते में बहुत से घायल व्यक्ति मिले। मगर अनुभव से इस बात को जानते हुए कि युद्ध पर जाते हुए किसी व्यक्ति पर मार्ग में घायल व्यक्तियों को देख कर कैसा निराशाजनक प्रभाव पड़ता है, वह रास्ते में किसी से भी पूछने के लिए नहीं रुका बल्कि उसने उन लोगों से बच कर निकल जाने का भी प्रयत्न किया। पहाड़ी के नीचे उसे एक ए० डी० सी० मिला जो तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ मोर्चे की तरफ से चला आ रहा था।

"जोबकिन ! जोबकिन ! एक सैकिन्ड ठहरो !"

"क्यों, क्या है ?"

"कहाँ से आ रहे हो ?"

"बैरकों से।"

"अच्छा, वहाँ क्या हाल है ? खूब तेजी है ?"

"वहाँ तो नर्क का सा दृश्य दिखाई पड़ता है। भयानक !"

यह कहकर वह घोड़ा दौड़ाता हुआ चला गया। दरअसल, वहाँ बन्दूकों की आवाज तो कम हो रही थी लेकिन तोपखाने द्वारा होने वाली गोलावारी की आवाज और ज्यादा भयानक और सघन हो उठी थी।

"मामला बहुत नाजुक दिखाई पड़ता है," कालूगिन ने सोचा। उसके सारे शरीर में एक अजीब सी सनसनी दौड़ गई। और उसके भी दिमाग में एक ख्याल उठ रहा था, हरेक के दिमाग में उठने वाला ख्याल—मौत का। मगर कालूगिन लेफ्टीनेन्ट-कप्तान मिखायलोव की तरह नहीं था; वह एक स्वाभिमानी व्यक्ति था, फौलाद की सी दृढ़ इच्छा शक्ति वाला। संक्षेप में वह ऐसा व्यक्ति था जिसे बहादुर कहा जाता है। उसने उस विचार के सम्मुख आत्म-समर्पण नहीं किया बल्कि अपने को उत्साहित करने लगा। उसे नेपोलियन

के उस ए० डी० सी० की कहानी याद हो आई जो अपना सन्देश देकर सिर से खून टपकाता हुआ, घोड़े को दौड़ा कर, नेपोलियन के पास पहुंच गया था।

"तुम घायल हो गए हो ?" नेपोलियन ने उससे पूछा था।

"क्षमा कीजिए, स्वामी, मैं मर चुका हूँ," और वह मर कर जमीन पर गिर पड़ा था।

उसने सोचा कि यह महान कार्य था और क्षण भर के लिए कल्पना में उसने स्वयं को उसी ए० डी० सी० के रूप में देखा, फिर, अपने घोड़े को चाबुक मार कर, वह काठी पर कज्जाकों की उस मुद्रा में बैठ गया जिसे वे हमला करते समय अपनाते हैं। फिर मुड़ कर एक कज्जाक की तरफ देखते हुए, जो अपनी रकाबों पर खड़ा हुआ, उसके पीछे धीमी चाल से चला आ रहा था, वह तब तक सरपट घोड़ा दौड़ाता रहा जब तक कि अपने गन्तव्य स्थान पर न पहुंच गया। वहाँ उसे चार सिपाही मिले जो एक पत्थर के ढोंके पर बैठे पाइप पी रहे थे।

"तुम लोग यहाँ क्या कर रहे हो ?" उसने जोर से उन लोगों से पूछा।

"एक घायल को अस्पताल पहुँचाने के बाद थोड़ा सा आराम कर रहे हैं," उनमें से एक ने पाइप को पीठ पीछे छिपाते और टोपी उतार कर सलाम करते हुए कहा।

"आराम कर रहे हो ? खड़े हो, और फौरन अपनी जगह पर पहुँचो वर्ना मैं रेजीमेन्ट के कमान्डर से तुम्हारी शिकायत कर दूंगा"

उन लोगों के साथ वह पहाड़ी की चोटी की तरफ जाती हुई खाई के सहारे सहारे ऊपर की ओर चल दिया। हर कदम पर उसे घायल

मिल रहे थे। चोटी पर पहुँच कर वह बाँई तरफ की खाई में मुड़ गया और कुछ कदम आगे बढ़ने पर उसने अपने आप को बिल्कुल अकेला पाया। एक बम का टुकड़ा सनसनाता हुआ उसके बिल्कुल पास से निकला और खाई में जा गिरा। दूसरा बम बिल्कुल उसके सामने उठा और ऐसा लगा कि सीधा उसी की तरफ आ रहा है। वह अचानक भयभीत हो उठा और कुछ कदम दौड़ने के बाद जमीन पर गिर पड़ा। मगर जब वह बम उससे काफी दूर जाकर फटा तो वह अपने ऊपर बुरी तरह झुंझला उठा। उठते हुए उसने चारों तरफ निगाह डाली कि किसी ने उसे जमीन पर गिरते हुए तो नहीं देख लिया। मगर वहाँ कोई भी नहीं था।

भय, जब एक बार किसी के दिल पर कब्जा कर लेता है तो आसानी से किसी भी दूसरी भावना को वहाँ नहीं आने देता। वह कालूगिन जो हमेशा इस बात की डींग मारा करता था कि वह खाई में कभी भी झुक कर नहीं चलता, इस समय चारों हाथ पैरों पर रेंगता हुआ तेजी से आगे बढ़ रहा था। "आह, बहुत बुरी बात है," जल्दी में ठोकर खाते हुए उसने सोचा, "मैं जरूर मारा जाऊँगा," और यह अनुभव कर कि उसे साँस लेने में कितनी कठिनाई हो रही है और उसका सारा शरीर पसीने से लथपथ हो रहा है, उसे अपने आप पर बड़ा आश्चर्य हुआ। मगर उसने इसके बाद फिर अपने ऊपर काबू करने की कोशिश नहीं की।

एकाएक उसने अपने आगे किसी के पैरों की आवाज सुनी। वह जल्दी से उठा, सिर ऊँचा किया और अपनी तलवार को खड़खड़ता हुआ, सीना तान कर धीरे-धीरे चलने लगा। वह स्वयं अपने लिए भी अपरिचित सा बन गया। जब उसकी मुलाकात एक सफरमैना अफसर और एक मल्लाह से हुई जो उसकी तरफ

दौड़े चले आ रहे थे और जब सफरमैना अफसर ने चिल्ला कर कहा, "लेट जाओ !" तथा एक चमकीले बम की तरफ इशारा किया जो अपनी निरन्तर बढ़ती हुई तीव्र गति के साथ बराबर ज्यादा चमकीला होता जा रहा था और अन्त में खाई के पास गिर पड़ा तो कालूगिन ने उस भयभीत स्वर को सुनकर सिर्फ अपना सिर हिला दिया और अपने रास्ते पर आगे बढ़ता चला गया।

"बहादुर है, क्यों है न ?" मल्लाह ने कहा जो खामोशी के साथ उस बम को गिरता हुआ देख रहा था। उसका अनुभव बता रहा था कि बम के टुकड़े खाई तक नहीं पहुँच सकेंगे। "वह जमीन पर नहीं लेटेगा !"

कालूगिन को अब सिर्फ कुछ ही कदम और चलना था, जिन्हें पार कर वह उस खुले स्थान से मोर्चे के कमान्डर के स्थान पर पहुँच जाता, कि अचानक उसने अपने मस्तिष्क को पुनः सुन्न हो जाते हुए अनुभव किया और वही मूर्खतापूर्ण भय उसके सारे शरीर में व्याप्त होने लगा। उसका हृदय तेजी से धड़क उठा, खून की तेजी से उसका दिमाग गर्म होने लगा और उसे उस स्थान को पार कर सुरक्षित स्थान तक पहुंचने के लिए बहुत जोर लगाना पड़ा।

"तुम इस तरह क्यों हाँफ रहे हो ?" जब कालूगिन अपना लाया हुआ सन्देश कह चुका तो जनरल ने उससे पूछा।

"मैं बहुत तेज चल कर आया हूँ, सरकार !"

"शराब पीओगे ?"

कालूगिन ने एक गिलास शराब पी और सिगरेट सुलगाई। लड़ाई समाप्त हो चुकी थी यद्यपि दोनों तरफ से भारी गोलाबारी अब भी जारी थी। उस सुरक्षित स्थान पर मोर्चे का कमान्डर

जनरल न० न० और छः दूसरे अफसर थे जिनमें एक प्रास्कुखिन भी था। वे लोग इस लड़ाई के बारे में विस्तार के साथ विचार कर रहे थे। इस आरामदेह कमरे में बैठे हुए कालूगिन ने देखा कि दीवालों पर नीला कागज मढ़ा हुआ था, कोच और बिस्तर पड़े थे, कागजों से भरी हुई एक मेज थी, दीवाल पर घड़ी टंगी थी, देव मूर्त्ति के सम्मुख छोटा सा तेल का लैम्प जल रहा था। मनुष्य के रहने के इन चिन्हों और छत की भारी कड़ियों को देखकर, और गोला-बारी की उस आवाज को सुनकर जो उस स्थान पर बहुत धीमी सुनाई पड़ रही थी, कालूगिन इस बात को कतई नहीं समझ सका कि वह दो बार, उस कभी न क्षमा की जा सकने वाली, कायरता का शिकार कैसे बन गया। वह अपने आप पर क्रुद्ध हो रहा था और किसी खतरे से मुठभेड़ लेने की इच्छा कर रहा था जिससे वह अपनी बहादुरी को एक बार फिर साबित कर सके।

"ओह, मुझे तुमको यहाँ देखकर बड़ी खुशी हुई, कप्तान," उसने एक नाविक सेना के अफसर से कहा जिसकी मूँछें घनी थीं। वह स्टाफ अफसर का ओवर कोट पहने था और 'सन्त जार्ज' का क्रॉस लगाए हुए था। वह अभी जनरल से यह कहने आया था कि उसे कुछ आदमी और दे दिए जाँय जिनकी मदद से वह अपने तोपखाने की मोर्चे बन्दी में हो गई कुछ दरारों की मरम्मत करवा ले। जब तोपखाने के कमान्डर ने अपनी बात पूरी कर ली तो कालूगिन कहने लगा, "जनरल ने मुझे आज्ञा दी है कि मैं इस बात का ठीक-ठीक पता लगा लूँ कि तुम्हारी तोपें चर्खियों पर उस खाई तक पहुँच सकती हैं या नहीं।"

"सिर्फ एक तोप जा सकती है," कप्तान ने उदास मुद्रा से कहा।

"चलो, चल कर देख लें।"

कप्तान ने भौंहों में बल डाले और क्रुद्ध होकर फुंकार सी छोड़ी।

"मैं सारी रात वहीं खुले में रहा हूँ और यहां अभी जरा सा दम लेने आया हूँ। तुम अकेले नहीं जा सकते ? मेरा सहायक लेफ्टीनेन्ट कार्तज वहीं है। वह तुम्हें सब दिखा देगा।

वह कप्तान इस तोपखाने का, जो किले में सबसे ज्यादा खतरनाक था, पिछले छः महीनों से कमान्डर था। उस समय से जब यह सुरक्षित स्थान बना भी नहीं था। और जब से नगर का घेरा डाला गया था तब से उसने इस जगह को क्षण भर के लिए भी नहीं छोड़ा था। नाविकों में उसकी प्रसिद्धि एक वीर पुरुष के रूप में थी। परिणाम यह निकला कि कालूगिन कप्तान के उस इन्कार को सुन कर भौचक्का रह गया।

"इसके बाद प्रसिद्धि का क्या मूल्य रह जाता है ?" उसने सोचा।

"अच्छी बात है, मैं अकेला ही चला जाऊँगा, अगर आपकी इजाजत होगी तो," उसने हल्के से व्यंग्य के स्वर में कहा परन्तु कप्तान ने उस बात पर ध्यान नहीं दिया।

कालूगिन ने यह भी सोचने का कष्ट नहीं किया कि उसने स्वयं तो कुल मिलाकर पचास घन्टे ही मोर्चे पर बिताये हैं, सो भी थोड़े थोड़े करके, और यह कप्तान छः महीनों से बराबर वहीं रह रहा है। कालूगिन अब भी अहंकार में डूबा हुआ था। उसकी अभिलाषा थी कि वह चमके, उसे तमगे मिलें, प्रसिद्धि प्राप्त हो और वह संकटों का सामना करे। परन्तु वह कप्तान इन सब चीजों को पहले ही प्राप्त कर चुका था। प्रारम्भ में वह भी घमन्डी और दुस्साहसी था। उसने अपने शरीर की चिन्ता नहीं की थी, तमगों और शोहरत का आकांक्षी था, और यह सब उसने प्राप्त भी कर लिया था लेकिन अब ये सब प्रलोभन उसके लिए अपना आकर्षण खो बैठे थे और

अब वह इन चीजों को दूसरे ही दृष्टिकोण से देखने लगा था। वह ठीक तरह से अपने कर्त्तव्यों का पालन करता था परन्तु इस सत्य से पूर्ण रूप से परिचित होते हुए कि मोर्चे पर छः महीने व्यतीत करने के उपरान्त उसकी जिन्दगी के क्षण कितने कम रह गए हैं, वह अब अपने को खतरों में, जब तक कि उनका सामना करना बहुत ही आवश्यक नहीं हो जाता था, कम डालता था। इसलिए, वह नौजवान लेफ्टीनेन्ट, जो सिर्फ एक हफ्ते पहले ही तोपखाने पर तैनात किया गया था इस समय कालूगिन को चारों तरफ घुमा रहा था। दोनों ही व्यर्थ की स्पर्धा से प्रेरित होकर मोर्चेबन्दी के छेदों में से सिर निकाल-निकाल कर देख रहे थे और उसके ऊपर चढ़ रहे थे—यह दिखाने के लिए कि वे उस कप्तान से थी ज्यादा बहादुर थे।

तोपखाने का निरीक्षण करने के पश्चात्, वहां से जनरल के स्थान की तरफ वापस जाते हुए, कालूगिन अंधेरे में जनरल से टकरा गया जो अपने अंग रक्षकों के साथ निरीक्षण-स्तम्भ की तरफ जा रहा था।

"कप्तान प्राश्कुखिन !" जनरल कह रहा था, "कृपया दाहिनी तरफ वाली बैरकों में चले जाओ और म–रेजीमेन्ट की दूसरी बटालियन से कहो कि काम बन्द कर दे और बिना एक भी शब्द किए उस स्थान को छोड़ दे। उन्हें अपनी रेजीमेन्ट में जाना है जो पहाड़ी के नीचे सुरक्षित सेना के रूप में खड़ी हुई है। समझ गए न ? उन्हें तुम स्वयं रेजीमेन्ट तक ले जाना।"

"बहुत अच्छा, हुजूर !"

प्राश्कुखिन तेजी से बैरकों की तरफ बढ़ा। धीरे-धीरे गोलाबारी बन्द हो गई।

## १०

"क्या म–रेजीमेन्ट की दूसरी बटालियन यही है ?" अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के बाद प्राश्कुखिन जब पीठ पर बोरा ले जाते हुए एक सिपाही से टकराया तो उसी से पूछ बैठा।

"हाँ, हुज़ूर !"

"तुम्हारा कमान्डर कहाँ है ?"

यह सोचते हुए कि कम्पनी कमान्डर को बुलाया जा रहा है, मिखायलोव अपने गढ़े में से बाहर निकल आया और प्राश्कुखिन को एक कमान्डिग अफसर समझ कर सलाम किया।

"जनरल की आज्ञा है······तुम लोगों······को जल्दी जाना है, चुपचाप खामोशी के साथ, वापस, नहीं, वापस नहीं—सुरक्षित सेना में ?" दुश्मन की गोलाबारी की तरफ तिरछी निगाह से देखते हुए प्राश्कुखिन ने कहा।

प्राश्कुखिन को पहचान कर और परिस्थिति को समझ कर, मिखायलोव ने हाथ नीचा कर लिया। उसने इस आज्ञा को आगे पहुँचा दिया और फौरन ही वह बटालियन तैयार हो गई। सिपाहियों ने अपनी बन्दूकें उठा लीं, कोट पीठ पर डाल लिए और रवाना हो गए।

वे लोग जिन्होंने इस बात का स्वयं अनुभव नहीं किया है, उस आनन्द की कल्पना भी नहीं कर सकते, कि खतरे के स्थान को, जहाँ लगातार तीन घन्टों से बमबारी हो रही थी, छोड़ते हुए कितना आनन्द होता है। इन तीन घन्टों में मिखायलोव बराबर यह समझता रहा था कि उसकी जीवन लीला समाप्त सी ही है। वह, जो भी पवित्र देव मूर्त्ति उसके हाथ पड़ती, उसे ही उत्तेजित होकर

चूमने लगता था। परन्तु इस समय की समाप्ति के लगभग उसे इस बात का विश्वास हो गया कि जब इतने गोले और गोलियाँ, उसे बिना चोट पहुँचाये उसके ऊपर होकर निकल गईं तो अब वह चोट नहीं खा सकेगा और इस विचार से उसका डर थोड़ा बहुत कम हो गया। फिर भी, उस स्थान से प्राश्कुखिन और कम्पनी के साथ प्रस्थान करते समय उसे तेज चलने में बहुत भारी प्रयत्न करना पड़ रहा था।

"विदा," वहाँ बाकी बची हुई बटालियन के मेजर ने कहा, जिसके साथ मिखायलोव ने सुरंग में बैठकर अपना पनीर का टुकड़ा बांट खाया था। "यात्रा निर्विघ्न समाप्त हो!" "तुम्हें भी भगवान सुरक्षित रखे। ऐसा मालूम होता है कि अब तेजी कुछ कम होती जा रही है।"

ये शब्द उसके मुंह में से निकले ही थे कि दुश्मन ने अपनी गोलाबारी तेज कर दी। शायद उसने उस बैरक में हुई हलचल को देख लिया था। हमारी तोपों ने जबाव दिया और गोलाबारी दुबारा पूरी तेजी से होने लगी। तारे आसमान में काफी ऊपर चढ़ आए थे परन्तु बहुत हल्के-हल्के चमक रहे थे। रात भयानक रूप से अंधेरी थी। तोप चलने और फटते हुए गोलों की चमक ही सिर्फ क्षणभर के लिए अपने चारों तरफ फैली हुई वस्तुओं को दृष्टिगोचर करा देती थी। सिपाही लोग अनजान में ही एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हुए, चुपचाप, तेजी से आगे बढ़े जा रहे थे। तोपखाने की निरन्तर होने वाली गर्जन में कड़ी जमीन पर सिपाहियों के समान गति से पड़ने वाले बूटों की आवाज, किर्च से किर्च के टकराने की खनखनाहट और किसी भयभीत सिपाही द्वारा की जाने वाली प्रार्थना—"भगवान!

हे भगवान ! क्या होने वाला है !" की ध्वनि सुनाई पड़ जाती थी। कभी रह-रह कर किसी घायल की कराहट और स्ट्रेचर उठाने वालों को पुकारने की आवाज भी कानों में पड़ जाती थी। ( उस रात को मिखायलोव की कम्पनी के छब्बीस आदमी तोपखाने की गोलाबारी से ही बेकार हो चुके थे )। सुदूर धुँधले क्षितिज पर एक चमक दिखाई पड़ी। बुर्ज पर खड़ा हुआ एक सन्तरी पुकार उठा: "तो–ओ–प !" और एक गेंद ऊपर सनसनाई, नीचे गिरी, जमीन को उधेड़ डाला और पत्थरों की बौछार सी हुई।

"इन्हें शैतान ले जाय—कितने धीरे धीरे चल रहे हैं," मिखायलोव के बराबर चलते हुए प्राश्कुखिन ने सोचा। वह बारबार मुड़कर पीछे देखता जाता था। "अच्छा तो यह हो कि मैं आगे दौड़ जाऊँ। आखिर, मैंने आज्ञा तो सुना ही दी···नहीं, ऐसा करना ठीक नहीं—यह जानवर सबसे कह देगा कि मैं कितना बुजदिल हूं; जैसा कि मैंने कल इसके लिए कहा था। चाहे जो कुछ भी, मैं इसके साथ ही रहूंगा।"

"यह मेरे साथ क्यों चिपका हुआ है ?" मिखायलोव ने अपने मन में सोचा। "मैं कई बार इस बात को देख चुका हूँ कि यह हमेशा मुसीबत ही लाता है। अब यह दूसरा आ रहा है—मेरा ख्याल है—सीधा हमारी ही तरफ चला आ रहा है।"

कुछ सौ कदम आगे बढ़ने पर उन्हें कालूगिन मिला जो बहादुरी के साथ अपनी तलवार खड़खड़ाता हुआ बैरकों की तरफ जनरल की आज्ञानुसार यह देखने जा रहा था कि वहाँ की क्या हालत है। मिखायलोव को देखते ही उसके दिमाग में यह ख्याल आया कि इस भयानक बमबारी में उस जगह स्वयं जाने की अपेक्षा तो यह अच्छा रहेगा कि इस अफसर से ही वहाँ के हालचाल मालूम

कर लिए जायँ। दूसरी बात यह भी थी कि उसे ऐसा करने की आज्ञा भी नहीं मिली थी। मिखायलोव ने उसे सारी स्थिति समझा दी और यह समझाते समय उसने कालूगिन का काफी मनोरंजन भी किया। कालूगिन उस गोलाबारी से पूर्णतः निर्लिप्त सा खड़ा उसकी बातें सुन रहा था। परन्तु मिखायलोव, हर बार जब कोई गोला उधर उड़ता हुआ आता तो अपना सिर नीचे झुका लेता और उसे यह विश्वास दिलाता कि "वह सीधा यहीं आ रहा है," यद्यपि कभी-कभी वह काफी दूर जाकर गिरता था।

"सावधान कप्तान, यह सीधा यहीं आ रहा है," कालूगिन मजाक में कहता और प्राश्कुखिन को कुहनी मार देता। वह कुछ दूर तक उन लोगों के साथ चला और फिर जनरल के स्थान को जाने वाली खाई में मुड़ गया। "तुम यह नहीं कह सकते कि वह कप्तान बहादुर है," पनाहगाह में घुसते हुए उसने सोचा।

"कहो, कोई नई बात ?" एक अफसर ने जो वहाँ एकान्त में बैठा भोजन कर रहा था, पूछा।

"कोई खास बात नहीं। मेरा ख्याल है कि आज रात को और कोई घटना नहीं घटेगी।"

"क्या मतलब ? जनरल अभी निरीक्षण-स्तम्भ पर गया है और एक दूसरी रेजीमेन्ट आ गई है। सुनो ! सुन रहे हो ? फिर बन्दूकें चल रही हैं। जाओ मत, तुम्हें जरूरत ही क्या है जाने की," कालूगिन को बढ़ते हुए देखकर उसने फिर कहा।

"मुझे दरअसल वहाँ खुले में होना चाहिए," कालूगिन ने सोचा "मगर आज भर के लिए तो मैं काफी खतरा उठा चुका हूं। मैं सोचता हूं कि तोप का चारा बनने की अपेक्षा मेरा मूल्य कहीं अधिक है।"

"हाँ, मेरा भी यही ख्याल है कि उनका यहीं इन्तजार करूँ," उसने कहा।

पाँच मिनट बाद जनरल अपने अफसरों के साथ लौट आया। इनमें कैडेट बेरन पेस्ट तो था परन्तु प्राश्कुखिन नहीं था।

हमने भयङ्कर प्रत्याक्रमण किया और बैरकों पर पुनः अधिकार कर लिया।

इस आक्रमण का विस्तृत विवरण सुन कर कालूगिन पेस्ट के साथ वहाँ से चल दिया।

## ११

"तुम्हारे कोट पर खून लगा हुआ है। क्या आमने-सामने की लड़ाई हुई थी?" कालूगिन ने पेस्ट से पूछा।

"ओह, भाई, बड़ी भयानक थी! जरा सोचो तो सही..." और पेस्ट उसे बताने लगा कि किस तरह जब कम्पनी का कमान्डर मारा गया तो उसने स्वयं कम्पनी की पूरी कमान सम्हाल ली और किस तरह उसने एक फ्रांसीसी को अपनी किर्च से मार डाला, और अगर वह वहाँ न होता तो इस लड़ाई का कुछ भी नतीजा नहीं निकल सकता था, आदि, आदि।

इस कहानी की मुख्य घटनायें सत्य थीं—कम्पनी कमान्डर मारा गया था और पेस्ट ने एक फ्रांसीसी के किर्च भौंक दी थी—मगर इन घटनाओं का वर्णन करते समय पेस्ट ने अपनी कल्पना की बागडोर पूरी ढीली छोड़ दी थी।

वह अनजाने ही डींग मारता रहा यद्यपि युद्ध के पूरे समय तक वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा बना रहा था। यहाँ तक कि उसे

ऐसा लग रहा था कि सारी घटना किसी दूसरे स्थान पर, किसी दूसरे समय पर और किसी अन्य व्यक्ति के साथ घटी हो। इसलिए उसने सम्पूर्ण विवरण को इस तरह सुनाया कि जिससे वह स्वयं सबसे ऊपर दिखाई दे। जो घटना सचमुच घटी थी वह इस प्रकार थी :

वह बटालियन, जिसके साथ सइ कैडेट को युद्ध के लिए भेजा गया था, एक नीची दीवाल के पास थी और पूरे दो घन्टे तक गोलाबारी की बिल्कुल सीध में जमी रही थी। फिर बटालियन के कमान्डर ने, जो सबसे आगे था, कुछ कहा; कम्पनी कमान्डरों में हलचल हुई, बटालियन आगे बढ़ी, दीवाल से आगे आई और लगभग सौ कदम और आगे बढ़ने के बाद रुक गई और कतार बांध कर खड़ी हो गई। पेस्ट को दूसरी कम्पनी के दाहिनी तरफ खड़े होने का हुक्म मिला।

बिना इस बात को तनिक भी समझे कि वह कहाँ था और वहाँ क्यों था, कैडेट अपने स्थान पर पहुँच गया और अचेतनावस्था में उसने सांस रोकी और अनुभव किया कि उसके सारे शरीर में एक सनसनी सी दौड़ रही है। यह अनुभव करते हुए उसने सामने अंधेरे में यह आशा करते हुए देखा कि कुछ भयानक घटना घटने वाली है। वह इतना अधिक भयभीत तो नहीं था क्योंकि गोलाबारी नहीं हो रही थी। परन्तु इस अजीब और भयानक विचार से अवश्य कांप रहा था कि वह किले से बाहर, बिल्कुल खुले मैदान में है। सामने खड़े हुए बटालियन कमान्डर ने फिर कुछ कहा। अफसरों ने फुस-फुसाते हुए उस आज्ञा को पुनः आगे पहुँचा दिया और अचानक सामने पहली कम्पनी द्वारा बनी हुई काली दीवाल भहरा कर गिरती हुई दिखाई पड़ी। जमीन पर लेट जाने का हुक्म दिया गया था।

दूसरी कम्पनी भी जमीन पर लेट गई और पेस्ट जब जमीन पर लेटने लगा तो उसके कोई तीखी सी वस्तु चुभ गई। सिर्फ दूसरी कम्पनी का कमान्डर ही खड़ा रहा। उसकी छोटी सी काया नंगी तलवार को घुमाती हुई, अपनी कम्पनी के सामने घूमने लगी। वह बराबर कहता जा रहा था :

"जवानो! बहादुरी से काम लो। देखो, गोली मत चलाना, जरा उन्हें ठंडे लोहे का मजा तो चखा दो। जब मैं कहूं "हुर्रा!" तो मेरे पीछे चले आना; पीछे रह मत जाना······सबसे बड़ी बात यह है कि सबको साथ रहना है······उन्हें यह दिखा दो कि हम किस फौलाद के बने हैं, हम अपना अपमान नहीं करायेंगे, क्यों, जवानो? अपने पिता जार के लिए!" उसने बुरी तरह हाथ पैर हिलाते हुए अपने शब्दों पर जोर देते हुए कहा।

"हमारे कम्पनी कमान्डर का नाम क्या है?" पेस्ट ने अपनी बगल में लेटे हुए एक कैडेट से पूछा। "बहादुर है, है न?"

"हाँ जब कभी वह लड़ने के लिए जाता है तो नशे में घुत्त रहता है," कैडेट ने जवाब दिया। "उसका नाम लिसिन्कोव्स्की है।"

इसी समय ठीक कम्पनी के सामने ही आग की एक लपट उठी और साथ ही एक भयंकर धड़ाका हुआ। लोहे के टुकड़े और पत्थर ऊँचे हवा में सनसनाते हुए सुनाई पड़े (हमेशा, लगभग पचास सैकिन्ड बाद एक पत्थर गिरता और किसी सिपाही की टांग कुचल डालता) यह दूर की मार करने वाली तोप से फेंका गया गोला था और इस तथ्य से कि यह ठीक कम्पनी के ऊपर गिरा था, यह सिद्ध हो रहा था कि फ्रांसीसियों को इस स्थान का ठीक पता चल गया था।

"हा ! बम के गोले, कुत्ते के पिल्लो ! जरा हमें पहुँच तो जाने दो। तब तुम्हें अपनी तिकौनी रूसी किर्चों का मजा चखायेंगे, दोगलो।" कम्पनी कमान्डर इतने जोर से चीखा कि बटालियन कमान्डर को उसे खामोश रहने की आज्ञा देनी पड़ी।

इसके बाद पहली कम्पनी उठ कर खड़ी हो गई और तब दूसरी कम्पनी ने भी ऐसा ही किया। हुक्म मिला कि किर्चें चढ़ा लो। और बटालियन आग्रे बढ़ी। पेस्ट इतना डर गया था कि उसे यही याद नहीं रहा कि वे लोग कितनी देर तक, कहाँ के लिए और किसके खिलाफ आगे बढ़ते रहे थे। वह ऐसे चल रहा था मानो नशे में हो। एकाएक चारों तरफ लाखों चिनगारियाँ चमक उठीं और उनके साथ ही सनसनाहट और खनखनाहट की भयंकर आवाजें चारों तरफ फैल गईं। वह दौड़ा और चिल्लाया क्योंकि वहाँ हरेक दौड़ और चीख-चिल्ला रहा था। फिर वह किसी से टकराया और किसी चीज पर गिर पड़ा। यह कम्पनी कमान्डर था (जो कम्पनी के आगे था और घायल हो गया था और उसने कैडेट को फ्रांसीसी समझ कर उसकी टांग पकड़ ली थी)। जब उसने अपनी टांग छुड़ा ली और उठ कर खड़ा हो गया तो उस अंधेरे में कोई आकर उससे टकरा गया और उस धक्के से वह लगभग गिर ही गया होता। दूसरा आदमी चीखा : "भौंक दो ! इन्तजार किस बात का है ?" किसी ने बन्दूक उठाई और किर्च को किसी मुलायम चीज में भौंक दिया। "इधर साथियो ! ओह भगवान !" कोई दूसरा आदमी मुँह से खून उगलता हुआ चीखा और सिर्फ उसी समय पेस्ट ने अनुभव किया कि उसने एक फ्रांसीसी के किर्च भौंक दी है। उसके सारे शरीर में ठंडा पसीना बह उठा। वह कांपने लगा मानो बुखार चढ़ आया हो और अपनी बन्दूक पटक दी। मगर यह स्थिति क्षण भर तक ही रही।

अचानक उसे यह लगा कि वह एक हीरो है। अपनी बन्दूक उठाते और "हुर्रा" चिल्लाते हुए वह दूसरों के साथ उस मरे हुए फ्रांसीसी के पास से भाग लिया। उस फ्रांसीसी के जूते एक सिपाही ने पहले ही निकाल लिए थे। बीस कदम भागने के बाद वह एक खाई में जा पहुँचा। वहाँ उसे अपने आदमी और बटालियन कमान्डर मिल गये।

"मैंने उनमें से एक के संगीन भौंक दी!" उसने कमान्डर से कहा।

"तुम बहादुर लड़के हो बेरन......"

## १२

"तुम्हें मालूम है, प्रास्कुखिन मारा गया," कालूगिन के साथ घर जाते हुए पेस्ट ने उससे कहा।

"असम्भव!"

"आह, मगर मैंने उसे खुद देखा था।"

"सच? मगर मैं जल्दी में हूँ। विदा!"

"मैं बहुत खुश हूं।" अपने क्वार्टर को लौटते हुए कालूगिन ने सोचा "जब मैं ड्यूटी पर था तभी भाग्य ने पहली बार मेरा साथ दिया था। युद्ध बहुत सुन्दर था। मैं जिन्दा, सुरक्षित और ठीकठाक हूँ। तमगे के लिए मेरी तगड़ी सिफारिश की जायगी और वह भी एक सोने की तलवार के लिए। मैं इस इनाम के सर्वथा योग्य हूं।"

जनरल को सम्पूर्ण आवश्यक सूचनायें देने के उपरान्त वह अपने कमरे की तरफ गया जहाँ उसकी मुलाकात प्रिन्स गाल्तसिन से हुई। प्रिन्स गाल्तसिन बहुत पहले ही लौट आया था और उसका इन्तजार करता हुआ बालजक का लिखा हुआ "वेश्याओं की शानशौकत और

तकलीफें" नामक ग्रन्थ पढ़ रहा था जो उसे कालूगिन की मेज पर मिल गया था।

कालूगिन यह सोच कर खुश हुआ कि आखिरकार वह घर पर और खतरे से बाहर पहुँच गया था और फिर अपनी रात की पोशाक पहन विस्तर में घुस गया और गाल्तसिन को युद्ध के समाचार सुनाने लगा। उसने युद्ध की घटनायें उसे इस तरह सुनाई जिससे यह सिद्ध हो जाय कि कालूगिन एक बहुत ही होशियार और बहादुर अफसर था परन्तु जो सब की सब बेकार की बातें थीं क्योंकि हरेक इस बात को जानता था तथा किसी को भी यह अधिकार नहीं था कि इस बात में सन्देह करे। सम्भवतः केवल प्राश्कुखिन ही, इस बात की असलियत को जानता था। यद्यपि वह कालूगिन की बाँह में बाँह डाल कर घूमने में अपने को गौरवान्वित समझता था परन्तु एक दिन पहले ही उसने अपने एक मित्र को अत्यन्त गुप्त रूप से यह बात बताई थी कि कालूगिन वैसे तो बहुत अच्छा आदमी है परन्तु बुजदिल है इसीलिए मोर्चे पर जाने से घृणा करता है।

प्राश्कुखिन मिखायलोव के साथ चलता हुआ अभी कालूगिन से बिछुड़ा ही था और एक कम खतरनाक जगह पर पहुँच कर उसे थोड़ी सी प्रसन्नता प्राप्त हुई थी कि उसके पीछे की तरफ एक चमक उठी और उसने एक सन्तरी को चीखते हुए सुना: "खतरनाक बम!" और उसके पीछे चलते हुए एक सिपाही ने कहा: "यह सीधा बटालियन की तरफ आ रहा है!" मिखायलोव ने मुड़ कर देखा। एक चमकता हुआ बम सिर पर ठीक बीचोबीच में जैसे ठहर सा गया था। उसकी स्थिति ऐसी थी कि यह बताना असम्भव था कि वह किस तरफ जायेगा। मगर ऐसी स्थिति क्षणभर ही

रही। बम और भी ज्यादा तेजी के साथ निरन्तर पास आता चला गया जिससे कि उसके पलीते में से निकलने वाली चिनगारियाँ साफ दिखाई पड़ने लगीं। उसकी भनभनाहट स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी और इसके बाद वह बटालियन के ठीक बीच में आकर गिर पड़ा।

"लेट जाओ!" कोई भयभीत स्वर में चीख उठा।

मिखायलोव पेट के बल लेट गया। प्रास्कुखिन अपने आप ही जमीन से सट गया और आँखें बन्द कर लीं। उसने सिर्फ इतना ही सुना कि वह बम उसके बहुत नजदीक ही कड़ी जमीन से टकराया। एक सैकिन्ड गुजरी जो एक घन्टे के बराबर लम्बी लगी। मगर बम फटा नहीं। प्रास्कुखिन इस बात से उद्विग्न हो उठा कि वह बिना कारण ही भयभीत हो गया था और यह कि वह बम काफी दूर पर गिरा था और उसने भय की सिर्फ कल्पना कर ली थी। उसका पलीता पास ही में सुलग रहा था। उसने अपनी आँखें खोली और प्रसन्नता मिश्रित सन्तोष के साथ देखा कि मिखायलोव, जिसके उस पर साढ़े बाहर रूबल चाहिए थे, हिलडुल भी नहीं रहा था बल्कि पेट के बल मुर्दे की तरह चुपचाप पड़ा हुआ था। वह प्रास्कुखिन के पैर को दबाये हुए था। मगर उसी समय उसकी निगाह बम के चमकते हुए पलीते पर पड़ी जो उससे सिर्फ गज भर की दूरी पर ही चक्कर काट रहा था।

भय, एक भयानक भय ने, जिसने अन्य सारी भावनाओं और विचारों को ढक लिया था, उसके सम्पूर्ण शरीर पर अधिकार कर लिया। उसने हाथों से अपना मुँह ढँक लिया और घुटनों के बल गिर पड़ा।

दूसरी सैकिन्ड बीती—एक ऐसी सैकिन्ड जिसके दौरान में रोमांच, विचार, आशा और स्मृतियों का एक पूरा संसार उसके मस्तिष्क में कौंध उठा।

"यह किसकी हत्या करेगा?—मिखायलोव की या मेरी? या दोनों की एक साथ? और अगर यह मुझे लगता है तो कहाँ लगेगा? सिर में? तो सब समाप्त हुआ समझो। पैर में? तो वे इसे काट डालेंगे—और मैं इस बात पर जोर दूँगा कि मुझे क्लोरोफार्म दिया जाय—और मैं जिन्दा भी बच सकता हूँ। मगर शायद अकेला मिखायलोव ही मारा जायेगा। अगर ऐसा हुआ तो मैं सबको बताऊँगा कि किस तरह हम साथ-साथ चल रहे थे, कैसे वह मारा गया और मैं उसके खून से नहा उठा। नहीं, यह मेरे ज्यादा नजदीक है—यह मुझी पर चोट करेगा!" अचानक उसे उन बाहर रूबलों की याद हो आई जो मिखायलोव के उस पर चाहिए थे। और फिर उसे एक दूसरे कर्ज की याद आई जो उसने बहुत दिन पहले पीतर्सवर्ग में किसी से उधार लिया था। उस शाम को उसने जो जिप्सी गाना गाया था उसके बोल उसके दिमाग में गूँज उठे। उस औरत का चित्र, जिसे वह प्यार करता था उसके सामने आ खड़ा हुआ—बैंगनी रंग के फीतों वाली टोपी पहने हुए। उसे उस आदमी की याद आई जिसने पाँच साल पहले उसका अपमान किया था और जिससे वह अभी तक सन्तोषजनक उत्तर नहीं प्राप्त कर सका था। लेकिन इन तथा ऐसी ही अन्य हजारों स्मृतियों के साथ वर्तमान की चेतन स्थिति भी अभिन्न रूप से जुड़ी हुई थी—मृत्यु और भय की सम्भावना वाली स्थिति—जिसने उसका पीछा क्षणमात्र के लिए भी नहीं छोड़ा था। "शायद यह नहीं फटेगा," उसने सोचा और आँखें खोलने का पूरा प्रयत्न किया। मगर उसी समय उसकी बन्द पलकों से आकर एक भयानक प्रकाश टकराया और कोई चीज भयानक

धड़ाके साथ उसकी छाती में बीचोबीच आकर घुस गई। वह उठ खड़ा हुआ और भागा और टाँगों में अपनी ही तलवार के फंस जाने से लड़खड़ाकर बगली के बल गिर पड़ा।

"भगवान को धन्यवाद है! यह सिर्फ मामूली सी भीतरी चोट है!" पहले उसने यही सोचा था। वह अपनी छाती को छूना चाह रहा था मगर उसे लगा कि उसकी बाँहे जैसे किसी ने चिपका दी हों और उसका सिर शिकंजे में कस दिया हो। कई सिपाही उसकी आँखों के सामने होकर निकले और वह अपने आप ही उन्हें गिन उठा: "एक, दो, तीन प्रायवेट, और देखो, अपना कोट ऊँचा किए यह एक अफसर आ रहा है," उसने सोचा। फिर उसकी आँखों के सामने एक चमक उठी और वह सोचने लगा कि क्या दागा गया है—बड़ी तोप का गोला था या छोटी का? यह जरूर बड़ी तोप ही होगी। वह दूसरा गोला चला जा रहा है, और ये कुछ सिपाही हैं—पाँच, छः, सात प्रायवेट, और सब बगल में होकर निकले चले जा रहे हैं। अचानक वह भयभीत हो उठा कि कहीं वे उसे कुचल न दें। वह चीखकर कहना चाह रहा था कि वह घायल हो गया है मगर उसका मुँह इस कदर सूख गया था कि उसकी जीभ तालू से चिपक गई और वह भयानक प्यास से तड़फड़ा उठा। उसे अपने सीने के पास कुछ गीला–गीला सा लगा और इससे उसे पानी की याद हो आई। वह उस गीले पदार्थ को पीने को तैयार हो गया। "मेरे खून निकल रहा होगा। गिरने में जरूर मुझे चोट लग गई है," उसने सोचा, और उसको इस बात का भय उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया कि उधर से गुजरने वाले सिपाही कहीं उसे कुचल न डालें। अपनी ताकत इकट्ठी कर वह चिल्लाना चाह रहा था: "मझे उठा लो!" परन्तु इसकी जगह वह इतने भयानक रूप से कराहा कि उसकी आवाज ने स्वयं उसे भी भयभीत कर डाला उसकी

आँखों के सामने लाल रोशनियाँ नाचने लगीं और उसे ऐसा लगा कि वे सिपाही उसके ऊपर पत्थरों के ढेर के ढेर इकट्ठे कर रहे हैं। उन रोशनियों की संख्या बराबर कम होती चली गई और उस पर जमाये गये पत्थर उसे और भी ज्यादा जोर से दबाते चले गये। उसने पत्थरों को हटाने के लिए जोर लगाया, शरीर को ताना—और फिर उसे कुछ भी नहीं दिखाई दिया, सुनना बन्द हो गया, विचार शक्ति लुप्त हो गई और अनुभव करने की ताकत भी समाप्त हो गई। वह सीने के बीचोबीच लगे बम के एक टुकड़े से फौरन मर गया।

## १३

बम को देखते ही मिखायलोव जमीन पर गिर पड़ा और प्रास्कुखिन की तरह उसने भी आँखें बन्द कर लीं, उन्हें दो बार खोला और बन्द किया और उन दो सेकिन्डों में उसके दिमाग में वही विचार और भावनायें कौंध गईं जो बम के फटने से पहले उठी थीं। उसने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की। वह बराबर कहता रहा: "तू मारा जायेगा।" और साथ ही साथ सोचता जा रहा था: "मैं फौज में भर्ती क्यों हुआ? और सब से बड़ी बात तो यह कि लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए पैदल सेना में बदली क्यों करवाई? क्या यह ज्यादा अच्छा नहीं रहता कि मैं त—नामक कस्बे में घुड़सवार फौज में ही बना रहता और अपनी मित्र नताशा के साथ समय व्यतीत करता···परन्तु यह सब न कर मैं यहाँ हूँ।" फिर उसने गिनना शुरू किया: "एक, दो, तीन, चार—यह सोचते हुए कि अगर बम 'पूरे' नम्बर पर फटा तो वह बच जायेगा, परन्तु अगर 'ऊने' नम्बर पर फटा तो मारा जायेगा। "सब समाप्त हो गया। मैं मारा गया।" जब बम फटा तो उसने सोचा, ( वह यह सोचने में असमर्थ रहा

कि बम 'पूरे' नम्बर पर फटा था या 'ऊने' पर। उसने अनुभव किया कि कोई चीज उसके लगी और उसके सिर में भयंकर दर्द होने लगा। "हे भगवान, मेरे पापों को क्षमा करना!" उसने हाथ जोड़ते हुए कहा। वह जरा सा उठा और फिर बेहोश होकर पीठ के बल गिर पड़ा।

जब उसकी चेतना लौटी तो उसे सबसे पहला अनुभव यह हुआ कि उसकी नाक में से खून बह रहा है और सिर में दर्द है जो धीरे-धीरे बन्द होता जा रहा है। "यह मेरा प्राण निकला जा रहा है," उसने सोचा। " 'वहाँ' मेरा क्या फैसला होगा? भगवान! मेरी आत्मा को शान्ति देना। हालांकि यह अजीब सी बात है कि," उसने अपने आप से तर्क किया, "मैं मर रहा हूँ और फिर भी सिपाहियों के कदमों की और गोली चलने की आवाज इतनी साफ सुन रहा हूँ!"

"ए, स्ट्रेचर-वालों को बुलाओ! कप्तान मारा गया!" उसके सिर के ऊपर किसी ने चीखते हुए कहा। उसने पहचान लिया कि यह ढोल बजाने वाले इग्नात्येव की आवाज थी।

किसी ने उसे कन्धे से पकड़ कर उठाया। उसने अपनी आँखें खोलने का प्रयत्न किया और ऊपर काला नीला आसमान, तारों के समूह और दो गोलों को उड़ते हुए देखा जो एक दूसरे का पीछा सा कर रहे थे। फिर उसने इग्नात्येव को, कुछ सिपाहियों को स्ट्रेचर और बन्दूकें लाते देखा और फिर खाई की दीवाल को देखा; और एकाएक महसूस किया कि अभी वह दूसरी दुनियाँ में नहीं पहुँचा है।

उसके सिर में एक पत्थर से छोटा सा घाव हो गया था। सबसे पहली भावना जो उसके मन में उठी, वह ग्लानि की थी: उसने उस लोक की यात्रा करने के लिए अपने आप को इतनी पूरी तरह

तैयार कर लिया था कि वास्तविकता के इस संसार में, जिसमें बम, खाईयाँ, सिपाही और खून था, लौटने का उस पर बड़ा विपरीत प्रभाव पड़ा। मगर इसके बाद ही जो विचार अपने आप उसके मन में उठा वह यह था कि वह जिन्दा है और इससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। और तीसरा विचार भय और इस मोर्चे से जल्दी से जल्दी बाहर निकल जाने का था। उस ढोल बजाने वाले ने एक रूमाल से उसका सिर बाँध दिया और सहारा देकर उसे मलहम-पट्टी वाले स्थान पर ले गया।

"मगर मैं कहाँ जा रहा हूँ और क्यों ?" जब कुछ स्वस्थ हो गया तो लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने सोचा। "यह मेरा फर्ज है कि कम्पनी के साथ रहूँ और यह नहीं कि छोड़ने वालों में मेरा ही पहला नाम हो। इसलिए और भी कि यह जगह जल्दी ही दुश्मन की गोलाबारी की मार से दूर हो जायेगी," एक आवाज ने फुसफुसाते हुए उसके कान में कहा : "और अगर मैं घायल होते हुए भी मोर्चे पर जमा रहा तो मुझे पदक अवश्य मिल जायेगा।"

"ठीक है, भाई," उसने उस सहायता देते हुए ढोल बजाने वाले के हाथों में से अपना हाथ खींचते हुए कहा। वह खुद भी एकाएक उससे जान छुड़ाने के लिए उद्विग्न हो उठा था। "मैं ड्रेसिंग-स्टेशन नही जाऊँगा। यहीं कम्पनी के साथ रहूंगा।"

यह कहकर वह वापस चलने के लिए मुड़ा।

"सरकार, यह अच्छा रहेगा कि आप पहले अपने घाव को ठीक तरह से दिखा लें," सहमे हुए इग्नात्येव ने कहा। "अपनी उत्तेजना में आप यह नहीं जान सक रहे कि आपके कोई गहरी चोट लगी है, मगर यह आगे चल कर ज्यादा खतरनाक भी हो सकती है। इस होने वाली गोलाबारी को तो देखिये······सरकार !"

मिखायलोव अनिच्छापूर्वक क्षण भर को ठिठका और इग्नात्येव की सलाह को मानने ही वाला था कि उसे कुछ दिन पहले ड्रेसिंग स्टेशन पर देखा हुआ एक दृश्य याद हो आया। एक अफसर, जिसकी बाँह में हल्की सी खरोंच थी, पट्टी बंधवाने के लिए आगे बढ़ा मगर सर्जन उस खरोंच को देख कर मुस्कराये और उनमें से एक ने—जिसके गलमुच्छे थे—तो यहाँ तक भी कहा कि घाव खतरनाक नहीं है और इससे ज्यादा गहरा घाव तो खाने के काँटे से भी हो सकता है।

"वे लोग मेरे घाव को भी शक की निगाह से देखेंगे और हँसेंगे और हो सकता है कि कोई भद्दी बात कह बैठें," लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने सोचा और ढोल बजाने वाले के तर्कों की उपेक्षा कर दृढ़तापूर्वक कम्पनी की तरफ लौट गया।

"अरे, वह ए० डी० सी० प्राश्कुखिन कहाँ है जो मेरे साथ-साथ चल रहा था," उसने पताका वाहक से पूछा जिसने टुकड़ी की कमान सम्हाल ली थी।

"मुझे नहीं मालूम। मेरा ख्याल है मारा गया," अनिच्छा के साथ पताका वाहक ने कहा। यह व्यक्ति लेफ्टीनेन्ट-कप्तान के अचानक लौट आने से बहुत क्षुब्ध हो उठा था क्योंकि उसने उसका गर्व के साथ यह कहने का अधिकार छीन लिया था कि कम्पनी में सिर्फ वही एक अफसर बच सका था।

"मारा गया या घायल हो गया? यह कैसी बात है कि तुम नहीं जानते? वह हमारे साथ था, था न? तुमने उसे उठाया क्यों नहीं?"

"ऐसी भयानक स्थिति में हम उसे कैसे उठा सकते थे?"

## १४

मरे हुए मनुष्यों की सैकड़ों खून से सनी हुई लाशें, जो केवल दो घन्टे पहले नितान्त भिन्न प्रकार की भावनाओं और आशाओं—उच्च और निम्न दोनों ही प्रकार की—से भरी हुई थीं, कड़े पड़े हुए अङ्गों को लिए ओस से भीगी एवं फूलों से ढकी हुई घाटी में, जो किले को खाईयों से प्रथक करती थी, पड़ी थीं। और कुछ लाशें सेवास्तोपोल के मोर्तुअरी गिर्जे के चिकने फर्श पर पड़ी हुई थीं। सैकड़ों मनुष्य अपने सूखे हुऐ ओठों पर अभिशाप और प्रार्थनायें लिए हुए फूलों से ढकी हुई उस घाटी में लाशों के बीच रेंगते, घबड़ाते और कराहते हुए घूम रहे थे तथा कुछ स्ट्रेचरों, बिस्तरों और ड्रेसिंग स्टेशन के खून से सने फर्श पर पड़े हुए थे। और इस समय फिर, पिछले ही दिनों की ही तरह, सापुन पहाड़ी के ऊपर बिजली चमक रही थी, चमकते हुए सितारे धुंधले पड़ गए थे, अंधकार में से एक सफेद कुहरा उठता चला आ रहा था, समुद्र गरज रहा था, पूर्व दिशा में गुलाबी ऊषा खिल रही थी और हल्के नीचे क्षितिज पर बादलों के लाल लम्बे टुकड़े तैर रहे थे। और फिर, गुजरे हुए दिनों की ही तरह वह सर्व शक्तिमान, भव्य, प्रकाशमान सूर्य सम्पूर्ण चैतन्य जगत को प्रसन्नता, प्रेम और सुख का सन्देश देता हुआ उदय हुआ।

## १५

दूसरी शाम को बाग में फिर चौसर का बैन्ड बज रहा था और अफसर, कैडेट, सिपाही और नौजवान औरतें शामियाने के आसपास तथा फूले हुए सफेद बबूल के वृक्षों से आच्छादित सड़कों पर पहले की ही तरह घूम रहे थे।

कालूगिन, प्रिन्स गाल्तसिन और एक कर्नल हाथ में हाथ डाले शामियाने के पास घूमते हुए गत रात्रि को हुए युद्ध के परिणामों पर बातें कर रहे थे। जैसा कि स्वाभाविक है, इस समय उनके वार्तालाप का विषय स्वयं वह युद्ध नहीं था बल्कि वे लोग ये बातें कह रहे थे कि उनमें से प्रत्येक ने उसमें क्या भाग लिया था और कितनी बहादुरी दिखाई थी। उनके चेहरे और आवाज गम्भीर एवं शोक पूर्ण थी मानो कि पहले दिन होने वाली हानि ने उन्हें अमित वेदना और कष्ट पहुँचाया हो। फिर भी, सत्य यह है कि उन लोगों का कोई भी आत्मीय इस युद्ध में नहीं मारा गया था ( क्या युद्ध की परिस्थितियों में भी कोई किसी का आत्मीय होता है ? ) इसलिए उनकी यह वेदना शुद्ध अफसरी ढङ्ग की थी जिसे जाहिर करना वे अपना फर्ज समझते थे। सचमुच कालूगिन और वह कर्नल जो बहुत अच्छे आदमी थे, प्रति दिन इस प्रकार के युद्धों को देखने के इच्छुक रहते, यदि उन्हें एक सुनहरी तलवार और मेजर-जनरल बनने की आशा बनी रहती। मैं ऐसे विजेता के विषय में सुनना पसन्द करता हूं जो अपनी इस अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए कि दुनिया उसे राक्षस कहे, करोड़ों लोगों को बर्बाद कर देता है। परन्तु अगर तुम पताकावाहक पेत्रुशोब या लेफ्टीनेन्ट एन्तोनोव या और किसी से भी अपनी सही राय देने के लिए कहो तो तुम्हें पता चलेगा कि इनमें से प्रत्येक नेपोलियन का एक लघु संस्करण और राक्षस है जो केवल एक तमगा या वेतन में एक तिहाई की वृद्धि प्राप्त करने के लिए युद्ध प्रारम्भ करने और सौ-पचास व्यक्तियों को मौत के घाट उतार देने के लिए सदैव सन्नद्ध रहता है।

"क्षमा करना," कर्नल कह रहा था, "लड़ाई बाईं तरफ शुरू हुई थी। मैं खुद वहाँ था।"

"शायद," कालूगिन ने उत्तर दिया, "मैं ज्यादा समय तक दाहिनी तरफ ही रहा था—मैं दो बार वहाँ गया था—एक बार जनरल को ढूंढ़ने और दूसरी बार सिर्फ बैरकों को देखने के लिए। सच कहता हूँ—वहाँ स्थिति बड़ी भयङ्कर थी।"

"क़ालूगिन ही जानता होगा," प्रिन्स गाल्तसिन ने कर्नल से कहा, "तुम्हें मालूम है वी० ने आज मुझसे तुम्हारे विषय में कहा था। वह कह रहा था कि तुम खूब लड़े।"

"मगर जो नुकसान हुआ है वह बहुत ही भयानक है," कर्नल अपने अफसरी वेदनामिश्रित स्वर में कहने लगा। "मेरी रेजीमेन्ट में चार सौ आदमी बेकार हो गए थे। यह आश्चर्य है कि मैं जीवित बच आया।"

उसी समय घिसे बूट पहने, सिर में पट्टी बाँधे मिखायलोव का नीला चेहरा बाग के दूसरे सिरे पर उनकी तरफ आता हुआ दिखाई दिया। जब उसकी निगाह इन लोगों पर पड़ी तो वह बहुत परेशान हो उठा: उसे याद आया कि गत रात्रि को कालूगिन की उपस्थिति में वह किस तरह डुबकियाँ सी ले रहा था और उसे भय था कि वे लोग कहीं यह न सोचें कि वह घायल होने का बहाना कर रहा है। अगर इन लोगों ने उसे न देख लिया होता तो वह घर को वापस चला जाता और तब तक घर पर रहता जब तक कि उसकी पट्टी न खुल जाती।

"तुम जरा देखते कि कल जब मैं गोलाबारी के समय उससे मिला था तो उसकी क्या हालत थी," कालूगिन ने, जैसे ही मिखायलोव उसके बराबर आया उसकी तरफ इशारा करते तथा मुस्कराते हुए कहा।

"घायल हो गए हो, कप्तान ?" कालूगिन ने एक ऐसी मुस्कराहट के साथ पूछा जिससे यह ध्वनित हो रहा था कि : "क्यो, कल रात को तुमने मुझे देखा था ? मै कितना बहादुर था ?"

"जरा सी खरोंच लग गई है। एक पत्थर से खुरसट आ गई थी," मिखायलोव ने जबाब दिया और उसका चेहरा लाल हो उठा। उसकी भंगिमा मानो कह रही थी : "मैंने तुम्हे देखा था, और मुझे यह मानना ही चाहिए कि तुम बहुत बहादुर थे और मैं बड़ा हास्यास्पद सा लग रहा था।"

"क्या झंडा झुका दिया गया है ?" गाल्तसिन ने पुनः वही अहकारी मुद्रा धारण कर लेफ्टीनेन्ट-कप्तान की टोपी की तरफ देखते हुए और किसी भी व्यक्ति विशेष को सम्बोधित न कर पूछा।

"अभी नही," मिखायलोव ने गाल्तसिन द्वारा फ्रांसीसी भाषा में पूछे गए प्रश्न का उत्तर उसी भाषा में यह दिखाने के लिए दिया जिससे वह समझ जाय कि वह इस भाषा को समझ और बोल सकता है।

"क्या अभी तक युद्ध-विराम सन्धि चल रही है ?" गाल्तसिन ने नम्रता के साथ मिखायलोव से रूसी भाषा में पूछा, मानो यह कह रहा हो—या जैसा कि लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने सोचा—"तुम्हे फ्रांसीसी भाषा बोलना ठीक से नही आता, इसलिए, अच्छा यह हो कि···" और इसके बाद वे ए० डी० सी० लोग उसे छोड़ कर चल दिए।

गत दिवस की तरह लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने अपने को एकाकी अनुभव किया और कुछ लोगों से दुआ-सलाम करता हुआ—जिनमें से कुछ से वह मिलना नही चाहता था और कुछ के साथ जाने की उसे हिम्मत नही पडी—वह काजारस्की स्मारक के पास बैठ गया और एक सिगरेट सुलगा ली।

बेरन पेस्त भी वहाँ बाग में आया। उसने बताया कि किस तरह वह विराम-सन्धि के समय वहाँ उपस्थित था और उसने कुछ फ्रांसीसी अफसरों से बातें की थीं और कहा कि उनमें से एक ने उससे कहा था—"अगर आधा घन्टे तक और अंधेरा रहता तो उन बैरकों पर दुबारा कब्जा कर लिया जाता।" और उसने जबाब दिया था कि : "महाशय ! मैं सिर्फ इस कारण इस बात से इन्कार नहीं करता क्योंकि मैं आपकी बात नहीं काटना चाहता।" और यह बहुत ही सुन्दर उत्तर था, आदि।

असलियत यह थी कि वह उस समय वहाँ उपस्थित था मगर उसने कोई भी हाजिर जबाबी नहीं दिखाई थी यद्यपि वह फ्रांसीसियों से बातें करने के लिए बहुत ही अधिक उत्सुक था (फ्रांसीसियों से बातें करने का सौभाग्य !)। कैडेट बेरन पेस्ट वहाँ काफी देर तक चहल कदमी करता रहा था और उसने अपने पास खड़े एक फ्रांसीसी से पूछा था : "तुम कौन सी रेजीमेन्ट में हो ?" उसे रेजीमेन्ट का नाम बता दिया गया था। इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कहा गया था। फिर भी, जब वह फ्रांसीसी फौज की पंक्तियों में काफी दूर तक घुस गया था तो फ्रांसीसी सन्तरी ने, इस बात की कल्पना भी न करते हुए कि यह सिपाही फ्रांसीसी भाषा समझ सकता है, अन्य पुरुष में उसे गालियाँ देते हुए कहा था : "यह हमारी कार्यवाहियों को देख रहा है, शैतान इसे गारत करे।" इसके बाद उस विराम-सन्धि में बेरन पेस्ट की रुचि समाप्त हो गई और वह घर की तरफ चल दिया। रास्ते में लौटते हुए ही उसे वे फ्रांसीसी भाषा के वाक्य याद आये थे जिन्हें वह अभी अभी सुना रहा था। वहीं बाग में घूमते हुए लोगों में लेफ्टीनेन्ट झोबोब, जो जोर जोर से बोल रहा था, कप्तान ओब्झोगोव, जो बहुत परेशान सा नजर आ रहा था, तोपखाने का कप्तान जो किसी की भी चापलूसी नहीं करता था, वह कैडेट जो

प्रेम-सम्बन्धों में बड़ा भाग्यशाली था, तथा इन लोगों के अतिरिक्त पहले दिन वाले और सभी लोग मौजूद थे। ये सब के सब झूठ, अहंकार और ओछेपन की वैसी ही शाश्वत भावनाओं से उत्साहित हो रहे थे। अनुपस्थित रहने वालों में सिर्फ प्राश्कुखिन, नेफेरदोव और बहुत से अन्य ऐसे व्यक्ति थे, जिनके विषय में यहाँ कोई भी न तो सोच ही रहा था और न जिन्हें याद ही कर रहा था यद्यपि उनकी लाशों को अभी तक नहलाया और कब्र में दफनाया तक भी नहीं गया था। और इसी तरह उनके माँ-बाप, बीबी और बच्चे, अगर कोई भी हैं तो, उन्हें महीने भर में भूल जायेंगे अगर वे अभी तक उन्हें नहीं भूले हैं तो।

"मैं इस बुड्ढे को तो पहचान भी नहीं पाता," एक सिपाही ने कहा जो लाशों को उठा उठा कर रखवा रहा था। उसने कुचली हुई छाती वाले एक मुर्दे को कन्धे से पकड़ कर उठाते हुए उपरोक्त शब्द कहे थे। इस मुर्दे का सिर काफी बड़ा, सूजा हुआ और काला पड़ कर चमकने लगा था और आँखें ऊपर को चढ़ गई थीं। "इसे पीठ की तरफ से उठाओ, मोरोज्का वर्ना यह टूट जायेगा। फू, कैसी बदबू है।"

"फू! कितनी बदबू है!"—उन लोगों का, जो मानव थे, जीवित मानवों के लिए बस इतना ही अस्तित्व रह गया था।

## १६

हमारे किले और फ्रांसीसियों की खाइयों पर सफेद झंडे टांग दिए गए थे और उन दोनों के बीच फूलों से लहलहाती हुई घाटी अंग प्रत्यंग कटी, भूरी और सफेद पोशाकें पहने हुई लाशों से भरी हुई थी। इन लाशों के बूट गायब थे। ये लाशें मजदूरों द्वारा उठा

उठा कर गाड़ियों में लादी जा रहीं थीं। सड़ते हुए मुर्दों से उड़ी हुई दुर्गन्ध से हवा भर रही थी। सेवास्तोपोल और फ्रांसीसी केम्पों से झुंड के झुंड लोग इस दृश्य को देखने आये थे। वे लोग निश्छल उत्सुकता वश एक ही स्थान पर आ एकत्र हुए थे।

ये लोग आपस में क्या बातें कर रहे हैं, उन्हें सुनो। रूसियों और फ्रासीसियों का एक झुंड एक नौजवान अफसर के चारों ओर इकट्ठा हो गया था। यह अफसर टूटी फूटी फ्रांसीसी भाषा बोल लेता था और सिर्फ इतनी ही जानता था कि अपनी बात को समझा सके। वह खड़ा हुआ एक गार्ड्‌समैन का बटुआ देख रहा था।

"वह चिड़िया इसमें क्यों है ?" वह पूछता है।

"यह गार्ड्‌स रेजीमेन्ट का बटुआ है, साहब। इस पर शाही गरुड़ बना रहता है।"

"और क्या तुम भी गार्ड्‌स रेजीमेन्ट में से हो ?"

"नहीं, मैं छठवीं रेजीमेन्ट का हूं।"

"तुमने यह कहाँ से खरीदा था ?" वह अफसर पीली लकड़ी वाले उस सिगरेट-होल्डर की तरफ इशारा करता हुआ पूछता है जिसे वह फ्रांसीसी पी रहा है।

"बालाक्लावा में, साहब। बहुत मामूली है—खजूर की लकड़ी का बना है।"

"सुन्दर !" वह अफसर कहता है। इस वार्तालाप में वह वे बातें नहीं कह पा रहा है जो कहना चाहता है, बल्कि जो शब्द उसे अच्छी तरह आते हैं उन्हीं का प्रयोग कर रहा है।

"आप इसे हमारी इस मुलाकात की यादगार के रूप में स्वीकार कर मुझे अनुग्रहीत करेंगे," यह कह कर वह फ्राँसीसी अपनी सिगरेट

निकाल लेता है और जरा सा झुककर उस अफसर को वह सिगरेट होल्डर दे देता है। वह अफसर भी अपना सिगरेट होल्डर बदले में उसे पकड़ा देता है और उपस्थित सब लोग—रूसी और फ्रांसीसी सब—बहुत प्रसन्न दिखाई पड़ते हैं और मुस्कराते हैं।

एक फौजी, जो बहुत चुस्त दिखाई पड़ता है, गुलाबी कमीज के ऊपर लापरवाही से कोट डाले, दूसरे सिपाहियों के साथ एक फ्रांसीसी के पास जाता है। उसके साथी सिपाही अपने हाथ अपने पीछे किए हुए हैं। उनके चेहरे प्रसन्नता और उत्सुकता से चमक रहे हैं। वह फौजी उस फ्राँसीसी से अपना पाईप जलाने के लिए आग माँगता है। फ्राँसीसी अपने पाईप में कश लगाता है, उसकी तम्बाखू को कुरेदता है और उसमें से थोड़े से कोयले उस रूसी के लिए उँड़ेल देता है।

"सुन्दर, तम्बाखू," गुलाबी कमीज वाला सिपाही टूटी-फूटी फ्राँसीसी भाषा में कहता है और देखने वाले मुस्कराते हैं।

"हाँ, यह अच्छी तम्बाखू है, तुर्की है," वह फ्राँसीसी कहता है, "और तुम्हारी क्या रूसी है? अच्छी है क्या?"

"रूसी अच्छी," गुलाबी कमीज वाला सिपाही उसी भाषा में जबाव देता है जिसे सुनकर दर्शक हंसी के मारे दुहरे हो जाते हैं। "फ्राँसीसी तम्बाखू नहीं अच्छी, खराब, महाशय," वह फिर कहता है और इस तरह अपने फ्रांसीसी भाषा के पूरे ज्ञान को एक साथ ही समाप्त कर उस फ्राँसीसी के पेट को थपथपाता है और हंसता है। वह फ्राँसीसी भी हंसता है।

"ये रूसी जंगली जरा भी सुन्दर नहीं होते?" एक फ्रांसीसी अपने साथियों के साथ खड़ा हुआ कहता है।

"ये लोग हंस क्यों रहे हैं ?" एक दूसरा तगड़ा आदमी, जिसकी बोली में कुछ इतालवी भाषा की झलक मारती है, हमारे आदमियों की तरफ आता हुआ पूछता है।

"कोट बहुत सुन्दर," वह चुस्त सिपाही उस फ्रांसीसी के कढ़े हुए कोट को देखता हुआ कहता है और फिर हंसने लगता है।

"लाइन को पार मत करो। वापस जाओ, तुम्हें शैतान उठा ले!" एक फ्राँसीसी कोरपोरल चीखता है और वे सिपाही अनिच्छा पूर्वक इधर-उधर बिखर जाते हैं।

फ्रांसीसी अफसरों के एक झुण्ड के बीच खड़ा हमारा एक नौजवान घुड़सवार अफसर फ्रांसीसी नाईयों की दूकानों पर बोले जाने वाले गंवारू शब्दों को बोल रहा है। वार्तालाप का विषय "एक काऊन्ट साजोनोफ है, जिसे मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं, साहब," पट्टियाँ लगाए हुए एक फ्राँसीसी अफसर कहता है। "वह उन सच्चे रूसी काऊन्टों में से है जिन्हें हम लोग बहुत पसन्द करते हैं।"

"मैं एक साजोनोफ को जानता हूं," वह घुड़सवार कहता है, "मगर जहाँ तक मुझे मालूम है, वह काऊन्ट नहीं है; वह सांवले रंग का एक छोटा सा आदमी है, तुम्हारी ही उमर का।"

"ठीक है साहब, यह वही है। ओह ! मैं उस प्यारे काऊन्ट से मिलना कितना पसन्द करूँगा ! अगर आपकी उससे मुलाकात हो कप्तान लातूर, को कृपया उससे मेरी सलाम कह दीजियेगा।" वह जरा सा झुक कर कहता है।

"हम लोग कैसे भयानक काम में लगे हुए हैं, हैं न ? कल बड़ी सरगर्मी रही थी, रही थी न!" घुड़सवार अफसर वार्तालाप को

चालू रखने की इच्छा से मुर्दों की तरफ इशारा करता हुआ कहता है।

"ओह, साहब, बड़ा भयानक था। मगर आपके सिपाही कितने बहादुर हैं, बहुत बहादुर! ऐसे बहादुरों के साथ लड़ने में मजा आता है।"

"मैं स्वीकार करता हूँ कि आपके आदमी भी बुजदिल नहीं हैं, वे अपने पैरों से अपनी नाकें साफ नहीं करते हैं," घुड़सवार अफसर सलाम करते हुए और यह सोचते हुए कि उसने बड़ी हाजिर जबाबी दिखाई है, कहता है। मगर, इतना काफी है।

इससे अच्छा यह होगा कि हम पुरानी टोपी पहने हुए उस दस साल के लड़के को देखें (शायद टोपी इसकी बाप की है)। वह बिना मोजों के फटे हुए जूते और सूती पाजामा पहने हुए है जो सिर्फ एक ही पट्टी से बंधा हुआ है। जब से विराम-सन्धि हुई है यह लड़का तभी से किले की भीत के पीछे से निकल आया है और उस घाटा के ऊपर इधर से उधर घूम रहा है। घूमता हुआ वह उदासीनता पूर्ण उत्सुकता के साथ फ्रांसीसियों और जमीन पर पड़े हुए मुर्दों को घूर रहा है तथा उस अभागी घाटी में बहुतायत से खिलने वाले जंगली नीले फूलों को चुन चुन कर इकट्ठा करता जाता है। फूलों का एक बड़ा सा गुच्छा लिए घर जाते हुए वह सड़ती हुई लाशों के एक ढेर के पास रुक गया और हवा के साथ आती हुई दुर्गन्ध से बचने के लिए उसने हाथ से अपनी नाक दबा ली तथा अपने सब से पास पड़े हुए बिना सिर वाले एक भयानक मुर्दे को देखने लगा। कुछ देर निस्तब्ध खड़ा रहने के बाद वह और थोड़ा सा पास आया और मुर्दे की सख्त फैली हुई बांह को पैर से छुआ। बांह थोड़ी सी हिली। उसने उसे फिर छुआ और इस बार और भी

ज्यादा जोर से। बांह हिली और अपनी पहली वाली स्थिति में आ गई। लड़का एक दम चीखा, मुंह को फूलों में छिपा लिया और पूरी तेजी से किले की तरफ भाग गया।

हाँ, बुर्जों और खाइयों पर सफेद झंडे लहरा दिए गए हैं, फूलों से खिली हुई घाटी बदबूदार लाशों से पटी पड़ी है। चमकता हुआ सूरज निर्मल आसमान से नीले समुद्र की तरफ नीचे उतर रहा है। नीला समुद्र धीरे धीरे सांसें लेता हुआ सूरज की सुनहली किरणों में चमक रहा है। हजारों आदमी झुंडों में एक दूसरे से मिलते हैं, देखते है, बातें करते हैं और परस्पर मुसकराते हैं और ये लोग—ईसाई जो प्रेम और त्याग का प्रचार करते रहते हैं—यह देखकर कि उन्होंने क्या कर डाला है, क्या उस ईश्वर के सम्मुख घुटनों के बल बैठ कर पश्चाताप नहीं करेंगे क्योंकि ईश्वर ने उन्हें जीवन देते समय प्रत्येक के हृदय में मृत्यु का भय और सत्यम् सुन्दरम् के प्रति प्रेम की भावना भर दी थी। क्या ये लोग आँखों में खुशी के आँसू भरे हुए भाइयों की तरह एक दूसरे के गले से नहीं चिपट जायेंगे! नहीं! वे सफेद चिथड़े हटा लिए गए हैं—और पुनः मृत्यु और संकटों के राक्षस भयंकर रूप से दहाड़ने लगे हैं और फिर निर्दोष और ईमानदार लोगों का खून बहने लगा है और हवा में कराहों और गालियों की गूंज भर उठी है।

और अब, जो मैं कहना चाहता था, वह कह चुका परन्तु फिर भी एक गहरा सन्देह मुझे उद्विग्न बना रहा है। शायद मुझे यह सब नहीं कहना चाहिए था। शायद, जो कुछ मैंने कहा है वह उन कठोर सत्यों में से एक है जो अज्ञात रूप में हम में से प्रत्येक के हृदय में छिपा हुआ है, जिसे कहना नहीं चाहिए, वर्ना यह कहना खतरनाक

हो उठेगा। उसी तरह जिस तरह कि शराब की तलछट को नहीं छेड़ना चाहिए वर्ना शराब खराब हो जाएगी।

इस कहानी में उस बुराई का चित्रण कहाँ हुआ है जिससे बचना चाहिए था? और वह अच्छाई कहाँ है जिसका अनुकरण करना चाहिए था, खलनायक कौन है और नायक किसको मानें? सब अच्छे हैं, और सब बुरे हैं।

न कालूगिन, जिसका साहस बड़ा सुन्दर था और जिसमें वह अहंकार भरा हुआ था जो प्रत्येक के व्यवहार को उग्र बना देता है, न प्रास्कुखिन, निस्तेज और निरीह, यद्यपि वह युद्धक्षेत्र में विश्वास, राज सिंहासन और पितृभूमि की रक्षा के लिए शहीद हो गया था, न मिखायलोव, अपनी मन्द बुद्धि और भीरू स्वभाव को लिए हुए, न पेस्ट—एक बच्चा जिसके किसी भी विचार और नियम में दृढ़ता नहीं थी—इस कहानी के न तो खलनायक माने जा सकते हैं और न नायक।

मेरी कहानी का नायक, जिसे मैं अपनी पूर्ण आत्मा और हृदय से प्रेम करता हूँ, जिसे मैंने उसके पूर्ण सौन्दर्य के साथ चित्रित करने का प्रयत्न किया है, और जो हमेशा सुन्दर था, है और रहेगा—वह सत्य है।

जून २६, १८५५।

---

# सेवास्तोपोल

अगस्त

अगस्त का अन्त था। एक अफसर की विचित्र सी गाड़ी (एक ऐसी गाड़ी जिसमें यहूदी की गाड़ी, रूसी किसान की गाड़ी और सीक की टोकरी का सा विचित्र मिश्रण होता है और जो सिर्फ इसी प्रदेश में पाई जाती है) दुवान्कोय और बाखचिसराय की बीच वाली गहरी सड़क की गर्म धूल में धीरे धीरे चली जा रही थी।

आगे, लगाम थामे सूती कोट और विचित्र टोपी पहने, जो कभी किसी अफसर की रही होगी, एक अर्दली पालथी मारे बैठा था। पीछे, एक मोटे कपड़े से ढँके हुए बन्डलों और थैलों के ढेर पर, गर्मियों में पहना जाने वाला ओवरकोट पहने पैदल फौज का एक अफसर बैठा था। जहाँ तक कि उसके बैठने के ढंग से अन्दाजा लगाया जा सकता था, वह अफसर ठिगने कद का था मगर बहुत ही तगड़ा और मजबूत—उसके कन्धे तो इतने ज्यादा चौड़े नहीं थे मगर सीना बहुत

ज्यादा चौड़ा था। वह चौड़ा और गठा हुआ था। उसकी गर्दन बहुत तगड़ी और मोटी थी और पीछे से तन रही थी। और जिसे कमर कहते हैं—शरीर को बीच से जोड़ने वाला हिस्सा—उसके जैसे थी ही नहीं और न उसके शरीर में कहीं मुटापे के लक्षण दिखाई पड़ते थे। इसके विपरीत वह पतला था। शरीर में अगर कही अस्वास्थ्य के लक्षण दिखाई पड़ते थे तो सिर्फ चेहरे पर जिसका रंग फीका लाली लिए हुए था। उसका चेहरा सुन्दर दिखाई देता अगर वह फूला हुआ न होता तथा उस पर बड़ी, मुलायम—उमर की नहीं—झुर्रियाँ न पड़ी होतीं जिन्होंने उसके मुख को बड़ा और सूजा हुआ सा बना रखा था और जिससे उसके पूरे मुख पर एक रूखापन सा छा रहा था। उसकी आँखें छोटी, भूरी, तीखी, यहाँ तक कि अक्खड़पन से भरी हुई थीं, मूंछें छोटी और बहुत ज्यादा घनी थीं। उन्हें देखने से यह साफ जाहिर हो जाता था कि उसे मूंछें चबाने की आदत है। उसकी ठोढ़ी और गाल, खास तौर से गाल, दो दिन की बढ़ी हुई दाढ़ी से भर रहे थे जो काली और बहुत सख्त थी। यह अफसर दस मई को सिर में बम का एक टुकड़ा लग जाने से घायल हो गया था और अब भी पट्टी बाँधे हुए था। मगर हफ्ते भर से अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ अनुभव करने के कारण अब सिम्फेरोपोल के अस्पताल से अपनी रेजीमेन्ट को लौट रहा था जो कहीं युद्ध क्षेत्र में ही तैनात थी। वह कहाँ तैनात थी, खुद सेवास्तोपोल में उत्तर की तरफ या इन्करमान में, वह अभी तक इस बात का पक्का पता नहीं लगा पाया था। गोलाबारी की आवाज अब साफ, रह रह कर और बिल्कुल पास से ही उठती हुई सी लग रही थी, विशेष रूप से उस समय और भी जब उसकी गाड़ी पहाड़ के किसी खाली हिस्से में पहुँचती और हवा उसकी तरफ को बह रही होती। एकाएक वायुमंडल धड़ाके की आवाज से भर उठा, जिसे सुनकर प्रत्येक अपने

आप चौंक उठता है, और अब कम शोर करने वाली आवाजें, तेजी से और लगातार, जैसे कोई ढोल बजा रहा हो, सुनाई पड़ने लगी, जो कभी-कभी एक अजीब गड़गड़ाहट की सी आवाज से टूट जातीं थी। कभी ये सारी आवाजें एक अजीब सी कड़क और गड़गड़ाहट में डूब जाती जैसे तूफान पूरी तेजी पर हो, बिजली कड़क रही हो और पानी मूसलाधार पड़ने लगा हो। हरेक कह रहा था और दरअसल हरेक को सुनाई भी पड़ता था कि भयंकर बमबारी हो रही है। अफसर ने अपने अर्दली से तेज चलने के लिए कहा जिससे यह साफ जाहिर हो रहा था कि वह अपनी मंजिल पर जल्द से जल्द पहुँच जाना चाहता था। दूसरी तरफ से रूसी किसानों द्वारा हाँकी जाती हुई गाड़ियों की एक लम्बी कतार आती दिखाई पड़ी : ये लोग सेवास्तोपोल में खाने पीने का सामान लाद कर ले गए थे और अब वापस आ रहे थे। उनकी गाड़ियों में भूरे कोट पहने घायल और बीमार सिपाही, काले कोट पहने नाविक, लाल फैज टोपी लगाये ग्रीक स्वयंसेवक और लम्बी दाढ़ियों वाले फौजी सवार थे। अफसर की गाड़ी को मजबूर होकर रुकना पड़ा। वह आँखें सिकोड़ते हुए उस धूल के गुब्बार में घुन्ना रहा था, जो एक गहरे बादल की शक्ल में ऊपर छाई हुई थी और उसकी आँखो और कानों में घुस रही थी तथा पसीने से भीगे हुए चेहरे पर चिपक गई थी। वह अफसर अपनी बगल में से गुजरते हुए उन बीमार और घायल व्यक्तियों के चेहरों को उदास और उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देख रहा था।

"वह दुबला-पतला सा छोटा आदमी हमारी कम्पनी का है," अर्दली ने अपने मालिक की ओर मुड़ कर घायलो से भरी हुई उस गाड़ी की तरफ इशारा किया जो इस समय तक उनके बराबर आ गई थी।

उस गाड़ी के अगले हिस्से में, तिरछा बैठा हुए एक दाढ़ी वाला रूसी था जो भेड़ की ऊन का कोट पहने एक चाबुक के तस्मों को तहा रहा था। चाबुक की मूठ उसने कुहनी से बगल में दबा रखी थी। उसके पीछे पाँच या छः व्यक्ति विभिन्न मुद्राओं में बैठे गाड़ी के हिचकोलों के साथ इधर से उधर हिल रहे थे। उनमें से एक, रस्सी की पट्टी में अपनी एक बाँह लटकाये और कन्धों पर कोट डाले, जिससे उसकी धूल में पूरी तरह सनी हुई कमीज दिखाई पड़ रही थी, गाड़ी के बीचोंबीच तना हुआ बैठा था, यद्यपि उसका चेहरा पतला और पीला था। वह उस अफसर को देखकर अपनी टोपी उतारने ही वाला था कि उसी समय यह सोच कर कि वह घायल है, उसने ऐसा भाव दिखाया मानो अपना सिर खुजाना चाहता हो। दूसरा सिपाही, उसी के पास गाड़ी के तले में लेटा हुआ था। उसका जो हिस्सा दिखाई पड़ रहा था वह सिर्फ उसके दो पतले हाथ थे जिनसे वह गाड़ी की दीवालों को पकड़े हुए था। उसके उठे हुए घुटने भी दिखाई पड़ रहे थे जो छाल के बन्डलों की तरह इधर से उधर हिल रहे थे। एक तीसरा सिपाही, जिसका चेहरा सूज रहा था और सिर पर पट्टी बंधी थी गाड़ी के पहियों के ऊपर पैर लटकाये बैठा घुटनों पर दोनों कुहनियाँ टेके ऊँघता हुआ सा लग रहा था। उसके सिर पर एक सिपाही की टोपी रखी थी। इसी को सम्बोधित कर उस अफसर ने पुकारा।

"दोल्भनिकोव !" उसने जोर से आवाज दी।

"हाजिर जनाव !" उस सिपाही ने चौंक कर भारी आवाज में चिल्लाकर कहा जो ऐसी लगी मानो बीस आदमियों ने एक साथ जबाब दिया हो। और ऐसा करते ही उसने अपनी आँखें खोली और झटके से टोपी उतार ली।

"तुम कब घायल हुए थे, मेरे बच्चे ?"

सिपाही की पथराई और चौधियाई हुई आँखें चमक उठीं। यह स्पष्ट था कि उसने अपने अफसर को पहचान लिया था।

"भगवान आपको स्वस्थ कर दे, हुजूर!" वह फिर उसी भारी आवाज में जोर से बोला।

"अपनी रेजीमेन्ट इस समय कहाँ है ?"

"सेवास्तोपोल में थी, हुजूर! वे लोग बुधवार को उसे दूसरी जगह भेजने वाले थे।"

"कहाँ के लिए ?"

"मुझे नहीं मालूम! शायद उत्तरी भाग की तरफ, हुजूर! आज हुजूर," उसने टोपी पहनते हुए भारी आवाज में आगे कहा, "दुश्मन सारी जगहों पर गोलाबारी कर रहा है......और ज्यादातर फटने वाले बम ही फेंक रहा है। आप उसकी आवाज यहाँ खाड़ी तक सुन सकते हैं। वह शैतान की तरह आग बरसा रहा है।"

सिपाही ने आगे क्या कहा, सुना नहीं जा सका परन्तु उसके चेहरे के भावों से और बैठने के ढंग से यह जाना जा सकता था कि वह एक ऐसे व्यक्ति की कटुता के साथ बोल रहा था जो कष्ट भोग रहा था और यह कि वह जो कुछ कह रहा था वह तसल्ली देने वाली बातें नहीं थीं।

वह अफसर, लेफ्टीनेन्ट कोजेल्तसोव, सामान्य व्यक्तियों से भिन्न था। वह उन लोगों में से नहीं था जो एक खास अन्दाज के साथ रहते हैं, जो दूसरों की देखा देखी ही अपने काम करते हैं। परन्तु यह अफसर जो चाहता था वही करता था जबकि दूसरे वही करते थे जो वह करता था, और उन्हें इस बात का विश्वास रहता था

कि जो कुछ वे कर रहे हैं वह ठीक है। वह स्वभाव का अच्छा था। मूर्ख न होकर होश्यार था। अच्छा गाता था, गिटार बजाता था, उत्साह के साथ वार्तालाप करता था और बड़े इत्मीनान के साथ लिखा-पढ़ी करता था—विशेष रूप से उन रिपोर्टों को जो उसे अफसर की हैसियत से लिखनी पड़ती थीं जिन्हें लिखने में वह, जितने दिनों तक रेजीमेन्ट के एड्जूटेन्ट पद पर रहा था, पक्का माहिर बन चुका था। मगर उसकी सबसे बड़ी विशेषता उसका अहंभाव से परिपूर्ण उत्साह माना जाता था। यह उत्साह यद्यपि प्रमुख रूप से इन्हीं मामूली गुणों का परिणाम था परन्तु फिर भी उसके चरित्र की एक प्रबल और आकर्षक विशेषता का रूप धारण कर चुका था। उसका वह अहंभाव उस प्रकार का था जो जीवन से पूरी तरह घुलमिल जाता है और प्रायः पुरुषों में और वह भी विशेष रूप से सैनिकों में पाया जाता है। ऐसे व्यक्ति के सम्मुख दो ही विकल्प रह जाते हैं—नेतृत्व करो या प्राण दे दो। उसका अहंभाव उसके हृदय की गूढ़तम भावनाओं को भी उकसा देता था। वह जब अकेला होता तब उन लोगों पर शासन करना पसन्द करता था जिनके साथ वह मन ही मन अपनी तुलना किया करता था।

"हाँ! इस सिपहिये की बकवाद सुनने से क्या फायदा?" लेफ्टीनेन्ट बड़बड़ाया। वह अपने हृदय पर उदासीनता का भार अनुभव कर रहा था जो उसे कष्ट पहुँचा रहा था और वे धुँधले विचार उसके दिमाग को परेशान कर रहे थे जो उसके मन में घायलों से भरी उस गाड़ी को देखकर तथा उस सिपाही के शब्दों को सुन कर उठ रहे थे जिनके महत्व का समर्थन वह गोलाबारी की गरज कर रही थी और उन्हें और भी महत्व दे रही थी। "यह सिपाहिया भी अजीब है···चलो, निकोलायेव, आगे बढ़ो!···क्या

सो गए ?" अपने कोट को ठीक कर और अर्दली की तरफ झुंझला कर देखते हुए उसने कहा।

निकोलायेव ने लगाम खींची, टिटकारी भरी और गाड़ी तेजी से आगे बढ़ने लगी। "आज रात को हम लोग सिर्फ घोड़ों को चारा पानी देने के लिए ही रुकेंगे और फिर चल देंगे," अफसर ने कहा।

## २

लेफ्टीनेन्ट कोजेल्तसोव की गाड़ी जैसे ही दुवान्कोय नगर में तातारों के टूटी हुई दीवालों वाले मकानों की एक गली में मुड़ी कि उसे गोलों और तोपों से लदी हुई, सेवास्तोपोल की तरफ जाने वाली गाड़ियों की एक कतार ने रुकने को मजबूर कर दिया। वे गाड़ियाँ सारा रास्ता घेरे हुए थीं।

दो फौजी सिपाही उड़ती हुई उस धूल में, सड़क के किनारे टूटी हुई दीवाल के पत्थरों पर बैठे हुए तरबूज और रोटी खा रहे थे।

"दूर जाना है, दोस्त ?" उनमें से एक ने रोटी चबाते हुए, एक सिपाही से पूछा जो पीठ पर एक छोटा सा थैला लटकाए उसके पास ही रुक गया था।

"हम लोग देहात से अपनी कम्पनी में शामिल होने के लिए आ रहे हैं," उस सिपाही ने तरबूज पर से निगाह हटाते और थैले को पीठ पर सम्हालते हुए जबाब दिया, "लगभग पिछले तीन हफ्तों से हम लोग कम्पनी से दूर छुट्टी मना रहे थे और अब हम लोगों वापस बुलाया गया है मगर हमें यही नहीं मालूम कि हमारी

रेजीमेन्ट कहाँ है ? कोई कहता कि वह पिछले हफ्ते कोराबेलनाया चली गई। तुम्हें कुछ पता है कि वह कहाँ है ?"

"शहर में है, भाई शहर में," उस फौजी ने उत्तर दिया। वह एक पुराना खुर्राट फौजी था जो एक कच्चे सफेद तरबूज में बड़े आनन्द के साथ अपना चाकू घुसेड़े जा रहा था।

"हम लोगों ने वह जगह अभी दोपहर को ही छोड़ी है। वहां बहुत खतरा है, मेरे बच्चे। मैं तुम्हें यही सलाह दूँगा कि वहाँ से दूर रहना। यहीं कहीं घास में पड़े रहो और एक दो दिन यहीं बिता दो। तुम्हारे हक में यही अच्छा रहेगा।"

"मगर क्यों, महाशय ?"

"तुम्हें चारों तरफ हो रही गोलाबरी की आवाज नहीं सुनाई पड़ रही ? कहीं रत्ती भर भी जगह अछूती नहीं बची है। हमारे साथियों में से तो इतने ज्यादा मारे जा चुके हैं कि तुम उन्हें गिन भी नहीं सकोगे।"

बोलने वाले ने निराशा की मुद्रा में अपना हाथ हिलाया और अपनी टोपी ठीक की।

गुजरने वाले सिपाही ने कुछ सोचते हुए सिर हिलाया, कई बार जीभ से टिटकारी भरी, बूट के ऊपरी हिस्से में से पाईप निकाला और उसमें ताजी तम्बाखू न डाल उसी जली हुई तम्बाखू को कुरेद, दूसरे सिपाही के पाईप में से कोयले का एक टुकड़ा सुलगाया और अपनी टोपी ऊपर उठाते हुए कहा :

"भगवान हमारा मालिक है महाशय। माफ करना !" फिर अपने झोले को ठीक करते हुए वह सड़क पर आगे बढ़ गया।

"आह, अच्छा यही होगा कि यहीं इन्तजार करो !" तरबूज वाले ने आग्रह करते हुए कहा ।

"कोई फर्क नहीं पड़ता," सड़क पर खड़ी गाड़ियों की भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए उसने उत्तर दिया। "लोगबाग जो कह रहे हैं उससे तो यही दिखाई पड़ता है कि अच्छा यही होगा कि मैं भी खाने के लिए एक तरबूज खरीद लूँ ।"

## ३

जब कोजेल्तसोव सहन में पहुंचा, स्टेशन खचाखच भरा हुआ था। उसे सबसे पहले जो व्यक्ति मिला वह स्टेशन-मास्टर था जो एक दुबला-पतला नौजवान सा दिखाई पड़ने वाला आदमी था और अपने पीछे लगे हुए दो अफसरों से झगड़ रहा था ।

"आप लोगों को तीन नहीं बल्कि शायद दस दिन तक भी रुकना पड़े ! जनरलों तक को इन्तजार करना पड़ता है, सरकार !" मुसाफिरों के साथ उजड्डता के साथ बातें करने की कोशिश करता हुआ स्टेशन मास्टर कह रहा था । "आप यह उम्मीद मत कीजिए कि मैं खुद गाड़ी में जुत जाऊंगा ।"

"अगर घोड़ों की कमी ही है तो किसी को भी नहीं मिलने चाहिए !···सामान लिए हुए उस नौकर को एक घोड़ा कैसे दे दिया गया ?" उन दोनों अफसरों में से बड़े वाले ने चीखते हुए कहा। उसके हाथ में चाय का गिलास था और यह स्पष्ट था कि वह जानबूझ कर गाली बकने से अपने को बचा रहा था, इस बात को जानते हुए कि सिर्फ दो पिन देकर ही वह उस स्टेशन–मास्टर को घृणासूचक 'तू' शब्द से सम्बोधित कर सकता है।

"मगर न्याय की बात करिए स्टेशन मास्टर साहब," उसके साथी ने जो नौजवान था, हकलाते हुए कहा। "हम लोग आनन्द मनाने के लिए सफर नहीं कर रहे हैं। अगर हम लोगों को बुलाया गया है तो वहाँ हमारी सख्त जरूरत ही होगी। यकीन रखो, मैं इसकी शिकायत जनरल क्रेम्पर से कर दूँगा। दरअसल मुझे ऐसा दिखाई देता है कि आप अफसरों की इज्जत करना नहीं जानते।"

"तुम हमेशा मामला बिगाड़ देते हो!" बड़े वाले अफसर ने टोकते हुए गुस्से से कहा। "तुम मेरे काम में रोड़ा ही अटका रहे हो। तुम्हें पहले यह जानना चाहिए कि इन लोगों से कैसे बातें करनी चाहिए। अब जरूर वह हमें अहमक समझ रहा होगा...घोड़े मैं कहता हूँ! इसी वक्त चाहिए!"

"मेरे हुजूर, मैं खुशी से आपको दे देता मगर लाऊँ कहाँ से?"

स्टेशन मास्टर कुछ देर तक खामोश रहा फिर एक दम फट सा पड़ा और बुरी तरह हाथ पैर फेंकता हुआ बोला :

"मैं आपकी बात पूरी तरह समझता हूँ, साहब लेकिन करूँ क्या? अगर मुझे मिल जाँय" (यहाँ उन अफसरों के चेहरे आशा से चमक उठे) "...बस किसी तरह महीने का आखीर पकड़ लूँ—उसके बाद आप यहाँ मेरी शक्ल भी नहीं देखेंगे। मैं यहाँ की बनिस्बत मालाखोव कुरगन में रहना ज्यादा पसन्द करूँगा। अपनी कसम! उनकी जो मरजी आए सो करें क्योकि वे हुक्म ही इस तरह के भेजते हैं। पूरे स्टेशन में एक भी साबुत गाड़ी नहीं है और घोड़ों को तीन दिन से घास का एक तिनका भी मयस्सर नहीं हुआ है।"

यह कहकर स्टेशन मास्टर दरवाजे में होकर गायब हो गया।

कोजेल्तसोव अफसरो के साथ प्रतीक्षा-गृह में प्रविष्ट हुआ।

"देखो," बड़े वाले अफसर ने छोटे से निहायत खामोशी के साथ कहा, हालांकि कुछ ही देर पहले वह गुस्से से उबला सा पड़ रहा था। "हम लोग तीन महीने से लगातार सफर कर रहे हैं इसलिए मैं सोचता हूँ कि यहाँ थोड़ा इन्तजार कर सकते हैं। कोई भी खतरनाक बात नहीं होगी। अन्त में हम वहाँ पहुँच ही लेगे।"

वह गन्दा, धुंए से भरा प्रतीक्षा-गृह अफसरों और कपड़ों के थैलों से इस कदर खचाखच भर रहा था कि कोजेल्तसोव बड़ी मुश्किल से खिड़की की चौखट पर अपना अड्डा जमा सका। अपने चारों ओर फैले चेहरों को गौर से देखते और उन लोगों की बातें सुनते हुए उसने एक सिगरेट बनाई। दरवाजे की दाहिनी तरफ, एक टूटी गन्दी मेज के पास, जिस पर दो ताँबे के समोवार जिन पर जंग लगी हुई थी, और रद्दी कागज पर चीनी के कुछ टुकड़े रखे थे, अफसरों का जमघट सबसे ज्यादा था। बिना दाढ़ी वाला एक नौजवान अफसर, एक नया जोड़दार कोट पहने, जो किसी औरत के ड्रेसिंग गाऊन को काट कर बनाया गया था, चायदानी को दुबारा भर रहा था। एक सी ही उमर के चार दूसरे अफसर कमरे के विभिन्न कोनों में थे। उनमें से एक अपना जाड़ों का कोट सिर के नीचे लगाए एक सोफा पर सो रहा था। दूसरा एक मेज के पास खड़ा, मेज पर बैठे हुए एक बांह वाले अफसर के लिए भुने हुए गोश्त के टुकड़े काट रहा था। दो अफसर, जिनमें से एक ए० डी० सी० का कोट पहने हुए था और दूसरा एक हल्का फौजी कोट पहने कन्धे से एक बटुआ लटकाये था, एक बेंच पर

बैठे थे। वे लोग जिस तरह दूसरों को देख रहे थे और जिस ढङ्ग से वह बटुआ वाला सिगार पी रहा था, उससे यह साफ जाहिर हो रहा था कि वे लोग मोर्चे पर आगे रह कर लड़ने वाले अफसरों में से नहीं थे और इस बात से पूर्ण सन्तुष्ट थे। यह बात नहीं थी कि उनके व्यवहार में कोई अक्खड़पन हो। वह तो उनकी प्रसन्न मुद्रा और अहंकार से प्रकट हो रही थी, कुछ तो धन के प्रभाव से तथा कुछ जनरलों के साथ अपनी घनिष्ठता के कारण। इन बातों से उनमें बड़प्पन की कुछ इतनी ऊँची भावना भर गई थी कि वे उसे छिपाने की कोशिश करते थे। एक मोटे ओठों वाला सर्जन जो अभी जवान था, और एक तोपखाने का अफसर जिसका चेहरा जर्मनों का सा था, उस सोफे पर सोते हुए नौजवान अफसर के लगभग पैरों पर ही बैठे अपने पैसे गिन रहे थे। चार अर्दली थे जिनमें से एक ऊंघ रहा था और दूसरे दरवाजे के पास पड़े थैलों और बन्डलों को ठीक करने में व्यस्त थे। उस कमरे में कुल इतने ही व्यक्ति थे। इस पूरी भीड़ में भी कोजेल्तसोव को एक भी परिचित चेहरा नहीं दिखाई पड़ा मगर वह वहाँ होने वाली बातों को बहुत अधिक रुचि के साथ सुन रहा था। उसे वे नौजवान अफसर पसन्द आए, जो, जैसा कि उसने उनकी चाल-ढाल से ही पता लगा लिया था, अभी सीधे ट्रेनिंग समाप्त कर चले आ रहे थे और विशेष रूप से इस कारण कि उन्हें देखकर उसे अपने भाई की याद आ रही थी जो खुद भी ट्रेनिंग ले रहा था और कुछ ही दिनों बाद जिसे सेवास्तोपोल के तोपखानों में से किसी एक पर आ जाना था। मगर उस बटुवे वाले अफसर की हर बात, जिसका चेहरा, जैसा कि उसने सोचा, उसे कुछ कुछ परिचित सा सा लग रहा था, उसे गन्दी और बदतमीजी से भरी हुई लगी। जैसे ही वह खिड़की से उठकर बेंच की तरफ गया और उस पर

बैठा, वैसे ही उसके दिमाग में यह विचार कौंध गया : "अगर यह कुछ कहने की हिम्मत करता है तो मैं इसे ठीक कर दूंगा।" एक आगे मोर्चे पर लड़ने वाला अच्छा और सच्चा अफसर होने के कारण कोजेल्तसोव सभी स्टाफ-अफसरों को सिर्फ नापसन्द ही नहीं करता था बल्कि उनसे नफरत भी करता था। और उसने फौरन ही ताड़ लिया था कि वे लोग स्टाफ-अफसर ही थे।

## ४

"यह तो सचमुच बहुत बुरी बात है कि अब जबकि हम इतने नजदीक आ चुके हैं तब हमें इस तरह अटका दिया जाय।" एक नौजवान अफसर ने कहा। "हो सकता है कि आज रात को युद्ध हो और हम लोग वहाँ नहीं होंगे।"

इस अफसर के यौवन से भरे मुख पर चमक सी आ गई जब उसने ऊँचे स्वर में उपरोक्त बातें कहीं। उसके चेहरे पर यौवन की वह आकर्षक लज्जा देखी जा सकती थी जब किसी को इस बात का भय रहता है कि उसके शब्द बात को ठीक ढङ्ग से व्यक्त करने में सम्भवतः असमर्थ हैं।

एक बाँह वाले अफसर ने उसकी तरफ मुस्कराते हुए देखा।

"मेरा विश्वास करो, अन्तत: तुम वहां पहुँच ही जाओगे," उसने कहा।

उस नौजवान अफसर ने उस एक बाँह वाले अफसर के दुर्बल चेहरे की तरफ सम्मान के साथ देखा जो एकाएक मुस्कराहट से चमक उठा था और खामोश होकर चाय बनाने लगा। सचमुच, उस एक बांह वाले अफसर का चेहरा, उसकी मुद्रा और विशेष रूप से उसके कोट की वह खाली आस्तीन उस शान्त उपेक्षा को

कर रही थी जो इस बात का प्रभाव डालती है कि प्रत्येक परिस्थिति में—युद्ध में या आपसी बातचीत में—वह इस प्रकार दिखाई पड़ता है मानो कह रहा हो : "यह सब बातें बहुत सुन्दर हैं ! मैं यह सब जानता हूँ । अगर मैं चाहूँ तो सब कुछ कर सकता हूँ ।"

"अच्छा, तो अब हमें क्या करना चाहिए ?" गद्देदार कोट पहने अपने उस साथी की तरफ मुड़ते हुए उस नौजवान अफसर ने पूछा । "आज रात यहीं काटें या अपने ही घोड़े पर आगे बढ़ चलें ?"

उसके साथी ने कहा कि वह वहीं ठहरना ज्यादा पसन्द करेगा ।

"जरा सोचिए तो सही, कप्तान," उस अफसर ने जो चाय ढाल रहा था, एक बाँह वाले अफसर को सम्बोधित करते और उसके द्वारा नीचे गिराए गए चाकू को उठाते हुए कहा, "हमें यह बताया गया था कि सेवास्तोपोल में घोड़े बहुत मंहगे हैं इसलिए हम दोनों ने मिलकर सिम्फेरोपोल में ही एक घोड़ा खरीद लिया था ।

"उसके लिए उन लोगों ने तुम से काफी तगड़ी रकम बसूल की होगी ।"

"मै कह नहीं सकता, कप्तान । हमें घोड़ा और गाड़ी दोनों के नब्बे रूबल देने पड़े थे । क्या बहुत मंहगे रहे ?" उसने सबको और कोजेल्तसोव को भी, जो उसकी तरफ देख रहा था, सम्बोधित करते हुए कहा ।

"अगर घोड़ा जवान है तो कीमत ज्यादा नहीं हैं ?" कोजेल्तसोव बोला ।

"सच ? और हमें बताया गया था कि सौदा मंहगा रहा··· घोड़ी जरा सी लंगड़ाती है यह बात तो है मगर हमें बताया गया था कि ठीक हो जायेगी । वैसे वह बिल्कुल ठीक है ।"

"तुम किस सेना के हो ?" कोजेल्तसोव ने पूछा। वह अपने भाई के विषय में कुछ जानना चाहता था।

"हम लोग अभी तो 'नोबुलमेन्स रेजीमेन्ट' से चले आ रहे हैं, हम लोग छः हैं, सबके सब स्वयंसेवक है !" उस बातून नौजवान अफसर ने कहा, "मगर हमें यह नहीं मालूम कि हमारा तोपखाना कहाँ है। कोई कहता है है कि सेवास्तोपोल में है, मगर वह कह रहा है कि वह ओडेसा में है।"

"तुम्हें सिम्फेरोपोल में नही मिला ? कोजेल्तसोव ने पूछा।

"किसी को भी नही मालूम···सब अटकलबाजियाँ लगाते हैं। हमारा एक साथी वहाँ एक अफसर के पास गया मगर उन लोगों ने उसके साथ बहुत गन्दा व्यवहार किया। आप खुद सोच सकते हैं कि उसे कितना बुरा लगा होगा···आप सिगरेट लेगे ?" उसने एक बांह वाले अफसर से पूछा जिसने अभी अपना सिगरेट केस उठाने को हाथ बढ़ाया था।

ऐसा प्रतीत होता था कि वह उस अफसर की सेवा सम्मान मिश्रित भय के साथ कर रहा हो।

"तो आप भी सेवास्तोपोल से आ रहे हैं ?" उसने कहना जारी रखा। "अद्भुत ! काश कि आप जानते कि हम लोग पीतर्सबर्ग में आपके विषय में और अपने सब वीरों के विषय में कितना सोचते थे !" उसने कोजेल्तसोव की तरफ मुड़कर विनम्र तथा आदर सूचक मुस्कराहट के साथ कहा।

"शायद आप लोगों को वापस जाना पड़े," लेफ्टीनेन्ट बोला।

"यही तो हम लोगों को डर है। समझ में नही आता ! हम लोगों ने घोड़ा और अन्य जरूरी सामानों—स्पिरिट लैम्प, काफीदानी और दूसरी छोटी छोटी जरूरत की चीजों पर कितना खर्च कर दिया

है। अब हमारे पास कुछ भी बाकी नहीं बचा," उसने अपने साथी की तरफ देखते हुए धीमे स्वर में कहा। "अगर हमें वापस जाना पड़ा तो समझ में नहीं आता कि क्या करेंगे ?"

"मगर आप लोगों को सफर का भत्ता नहीं मिला था क्या ?" कोजेल्तसोव ने पूछा।

"नहीं," दूसरे ने फुसफुसाते से हुए जवाब दिया, "उन लोगों ने हमें यहाँ देने का वायदा किया था।"

"आपके पास सार्टीफिकेट है ?"

"मैं जानता हूं कि सार्टीफिकेट ही सबसे जरूरी चीज है मगर मास्को में एक सिनेटर ने—जो मेरा चाचा है—जब मैं उससे मिलने गया तो कहा था कि मुझे पैसा यहाँ मिलेगा; वर्ना वह मुझे थोड़ा बहुत जरूर दे देता। आपका ख्याल है कि मुझे बिना सार्टीफिकेट के मिल जाएगा ?"

"जरूर मिलेगा !"

"शायद मैं भी यही सोचता हूँ, मिल जाएगा," नौजवान अफसर ने ऐसे स्वर में कहा जिससे यह प्रकट हो रहा था कि वह यही सवाल पिछले तीस स्टेशनों पर भी कर चुका है और उसे भिन्न भिन्न उत्तर मिले हैं इसलिए अब वह किसी का भी यकीन करने को तैयार नहीं।

## ५

"उन्हें देना ही पड़ेगा !" अचानक उस अफसर ने कहा जो सहन में स्टेशन मास्टर से झगड़ चुका था। वह चलता हुआ इस झुण्ड के पास आया और उसने कुछ कुछ पास ही बैठे हुए उन स्टाफ अफसरों को सम्बन्धित करते हुए कहा क्योंकि उन्हींने उसे अपनी तरफ अधिक आकर्षित किया था। "देखो, मैंने स्वयं, इन सज्जनों की ही तरह, युद्ध के लिए अपनी सेवायें अर्पित की थीं और

सेवास्तोपोल जाने के लिए एक अच्छा पद छोड़ कर आया था। और मुझे प—से यहाँ तक यात्रा करने के लिए कुल मिला कर एक सौ छत्तीस चाँदी के रूबल मिले थे और अब तक मैं अपने भी एक सौ पचास से ज्यादा रूबल खर्च कर चुका हूँ। जरा सोचिए तो सही ! आठ सौ मील की यात्रा करने में मुझे दो महीने से ज्यादा लग चुके हैं। मैं एक महीने से भी ज्यादा समय से इन सज्जनों के साथ यात्रा कर रहा हूँ। यह तो अच्छी बात है कि मेरे पास अपना पैसा है। अगर न होता तो न जाने क्या होता ?"

"दो महीने से ज्यादा हो गए, क्यों ?" किसी ने पूछा।

"मैं क्या कर सकता था ?" उसने कहना जारी रखा। "अगर मैं जाना नहीं चाहता होता तो एक अच्छी नौकरी को ठुकरा कर न आता। और मैंने रास्ते में देर भी नहीं लगाई क्योंकि मुझे डर था कि······ज्यादा तेजी से आगे बढ़ना नामुमकिन था। मिसाल के लिए जैसे पेरेकोप में मुझे दो हफ्ते तक रुकना पड़ा और स्टेशन मास्टर ने मुझ से बात तक नहीं की—"जब मर्जी हो तब चले जाना," वह कहता है, "देखिए कितने हरकारे इन्तजार कर रहे हैं।" मैंने सोचा कि यह भाग्य की बात है······मैं आगे बढ़ना चाहता था मगर तकदीर ने साथ नहीं दिया। यह बात नहीं कि मैं गोलाबारी से डरता था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप जल्दी करते हैं या नहीं······और मैं इतना इच्छुक था······"

अपने विलम्ब के कारणों की व्याख्या करने के लिए वह अफसर इतना व्यग्र था और अपने आप को इसके लिए क्षमा किए जाने के लिए इतना जोर दे रहा था कि हरेक सोचने लगा कि वह भयभीत था। यह बात और भी साफ हो गई जब उसने यह पूछना प्रारम्भ किया कि उसकी रेजीमेन्ट कहाँ थी और यह कि क्या वहाँ खतरा था।

जब उस एक बाँह वाले अफसर ने, जो उसी रेजीमेन्ट का था, उसे बताया कि पिछले दो दिनों में उस रेजीमेन्ट के कम से कम सत्तरह अफसर मारे जा चुके हैं तो वह पीला पड़ गया और उसकी आवाज लड़खड़ा उठी।

सचमुच उस समय तो वह अफसर बुरी तरह भयभीत हो उठा था यद्यपि छः महीने से पहले तो उसका नम्बर कतई नहीं आने वाला था। उसमें एक ऐसा परिवर्तन हो उठा जैसा कि उससे पहले और बाद में जाने वालों ने अनुभव किया था। वह हमारे एक ऐसे देहाती नगर में रहता था जहाँ कैडेटों की एक पल्टन थी। वहाँ वह एक अच्छे आरामदेह पद पर था मगर अखबारों और अपने व्यक्तिगत पत्रों में यह पढ़ कर कि सेवास्तोपोल में उन लड़ने वालों ने कितना यश और धन कमाया है, जो कि उसके साथी रह चुके थे, तो एकाएक उसके हृदय में भी महत्वाकांक्षा जागृत हो उठी जिसमें देशभक्ति की भावना का भी बहुत बड़ा अंश था।

अपनी इस भावना के लिए उसने बहुत बड़ा त्याग किया था: अपनी सुखद नौकरी छोड़ी थी, सुन्दर फर्नीचर से सजा हुआ मकान छोड़ा था—यह फर्नीचर और मकान उसने आठ साल तक कोशिश करने के बाद प्राप्त किया था—अपने दोस्त और एक अमीर लड़की से विवाह करने की अपनी इच्छा त्याग दी थी। उसने इन सब आकर्षणों का परित्याग कर दिया था और पिछली फर्वरी में ही सेना के लिए अपनी सेवायें अर्पित कर दी थीं। वह अमर यश और जनरल होने का स्वप्न देख रहा था। प्रार्थना पत्र भेजने के दो महीने बाद हैडक्वार्टर वालों ने उससे पूछा था कि क्या वह सरकार से भत्ता लेना चाहेगा। उसने उत्तर दिया था कि नहीं और नियुक्ति के लिए धैर्य के साथ प्रतीक्षा करने लगा यद्यपि इन दो महीनों में उसकी देशभक्ति

का जोश कुछ ठंडा पढ़ चुका था। अगले दो महीने बाद उससे फिर पूछा गया कि क्या वह 'फ्रीमेशन' है और साथ ही अन्य इसी प्रकार की और बातें भी पूछी गई। जब उसने उक्त प्रश्नों का नकारात्मक उत्तर दे दिया तो आखिर में उसे पाँचवें महीने में अपना नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। इस दौरान में उसके दोस्तों ने और विशेष रूप से हृदय की उस आन्तरिक क्षुब्ध भावना ने जो, जब कोई अपनी स्थिति में परिवर्तन करना चाहता है, उस समय उत्पन्न होती है, उसे यह विश्वास दिला दिया था कि उसने फौज की नौकरी स्वीकार कर बहुत बड़ी मूर्खता का काम किया था। पाँचवें स्टेशन पर जलते हुए हृदय और धूल से भरे हुए अपने चहरे को लिए वह अकेला था कि उसकी मुलाकात एक हरकारे से हुई जिसने उसे युद्ध की भयंकरता के विवरण सुनाये। वहाँ बारह घन्टों तक घोड़ों की प्रतीक्षा करने के उपरान्त वह अपनी मूर्खता पर बुरी तरह पछताने लगा। उसने अस्पष्ट भय से आतंकित होकर उन भावी अनुभवों की कल्पना की जो वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। फिर वह अपने मार्ग पर इस तरह व्याकुल सा होकर आगे बढ़ा मानो कोई सूली पर चढ़ने जा रहा हो। एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन की अपनी तीन महीनों की यात्रा में, जिसमें कि उसे प्रत्येक स्टेशन पर रुकना पड़ा था, उसकी सेवास्तोपोल से आये अनेक अफसरों से मुलाकात हुई जिन्होंने उसे रोंगटे खड़े कर देने वाली कहानियाँ सुनाई। इन कहानियों को सुनकर भय की उक्त भावना उसके हृदय में बढ़ती ही चली गई और अन्त में दुवान्कोय तक आते आते प–नगर का वह साहसी वीर एक दीन कायर के रूप में बदल गया। और अब एक महीने पहले से उसी यात्रा पर जाने वाले उन नौजवान अफसरों के साथ साथ यात्रा करते हुए वह उस यात्रा को अधिक से अधिक लम्बा खींचने का प्रयत्न करता रहा। इन दिनों को अपने जीवन के अन्तिम दिवस मान कर वह

हर स्टेशन पर अपना बिस्तर खोलता, अपने सामान के थैले को खाली करता, ताश खेलता, समय गुजारने के लिए शिकायतों वाले रजिस्टरों को पढ़ता और जब उससे घोड़ों के लिए मना कर दिया जाता तो प्रसन्न होता। इस तरह वह आगे बढ़ता चला आ रहा था।

अगर उसे प–नगर से सीधा मोर्चे पर ही भेज दिया गया होता तो सचमुच वह एक वीर सिपाही साबित होता। लेकिन उसे इस समय, संकटों के समय शान्त और धैर्यवान रूसी अफसर, जैसे कि प्रायः सभी होते है, बनने से पहले ही भयंकर मानसिक वेदना को सहन करना पड़ रहा था। मगर उसके उत्साह की पूरी खोज बीन करना बड़ा कठिन कार्य है।

## ६

"शोरवा किसने मंगाया था ?" सराय की नौकरानी ने गर्म शोरवे का वर्तन लिए कमरे में घुसते हुए पूछा। नौकरानी चालीस साल के करीब मोटी और फूहड़ सी गन्दी औरत थी।

वार्तालाप तुरन्त बन्द हो गया और सब लोगों का आँखें उस औरत की तरफ घूम गईं। प-नगर वाले अफसर ने उस नौजवान अफसर की तरफ आँख मारी और उस औरत की ओर इशारा किया।

"ओह, कोजेल्तसोव ने मांगा था," उस नौजवान अफसर ने कहा, "उसे जगा देना चाहिए। उठो—खाना तैयार है," वह सोफे के पास जाकर सोने वाले के कन्धे को हिलाते हुए बोला।

लगभग सत्तरह साल का, चमकीला काली आँखों और गुलाबी गालों वाला एक लड़का उछल कर खड़ा हो गया और आँखें मलता हुआ कमरे के बीच की तरफ बढ़ा।

"ओह् माफ कीजिए !" उसने सुरीली आवाज में उस डाक्टर से कहा जिससे उठते समय वह टकरा गया था।

लेफ्टीनेन्ट कोजेल्तसोव ने फौरन अपने भाई को पहचान लिया और उसकी तरफ बढ़ा।

"मुझे नहीं पहचानते ?" उसने मुस्कराते हुए कहा।

"ओह ! कैसा आश्चर्य है !" अपने भाई को आलिंगन पाश में आबद्ध करने के लिए आगे बढ़ते हुए छोटा भाई चीखा।

उन्होंने तीन बार एक दूसरे को चूमा मगर तीसरी बार चूमते समय वे ठिठक गए मानो कि दोनों के ही दिमाग में यह विचार एक साथ उठा हो, तीन बार क्यों ?

"मैं बहुत खुश हूँ," बड़े भाई ने छोटे भाई की तरफ देखते हुए कहा। "चलो बाहर सहन में चलें।"

"हाँ, हाँ, चलो चलें···मुझे शोरवा नहीं चाहिए···तुम ले लो फेदेरसन," उसने साथी से कहा।

"मगर तुम तो भूखे थे।"

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

बाहर सहन में छोटा भाई बड़े भाई से सवाल पर सवाल पूछता जा रहा था। "अच्छा, तुम कैसे हो ? तुम्हारे दिन कैसे बीते ? मुझे सब कुछ बताओ," और यह कि उसे देखकर वह कितना प्रसन्न है। मगर उसने अपने बारे में कुछ भी नहीं कहा।

पाँच मिनट बाद, जब बातें कुछ रुकीं तो बड़े भाई ने पूछा कि वह 'गार्ड्स' में भर्त्ती क्यों नहीं हुआ था जैसी कि उन लोगों को उससे उम्मीद थी।

"ओह, हाँ !" छोटा भाई उस बात को याद कर शरमा गया। "मैं इस बारे में बड़ा परेशान था, मगर मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि इसका नतीजा यह निकलेगा। सोचो तो सही ! इम्तहान से ठीक पहले हम तीन साथी सिगरेट पीने के लिए बाहर निकले, तुम्हें मालूम है, कुली के उस दड़बे के पीछे वाले कमरे में। तुमने भी अपने समय में ऐसा ही किया होगा। तो, उस बदमाश कुली ने हमें देख लिया और ड्यूटी वाले अफसर से शिकायत करने दौड़ गया (हम लोगों ने इस बदमाश को कई बार बख्शीश भी दी थी)। वह अफसर सूंघता हुआ वहाँ आ गया। जैसे ही हम लोगों की उस पर निगाह पड़ी बाकी के दोनों साथियों ने अपनी सिगरेटें फेंक दीं और बगल के दरवाजे से निकल भागे, मगर मुझे मौका नहीं मिला। वह मेरे साथ बुरी तरह पेश आया, मैंने भी थोड़ी सी सुना दीं। उसने जाकर इन्सपेक्टर से शिकायत कर दी और मामला आगे बढ़ा दिया गया। नतीजा यह निकला कि मुझे चरित्र-सम्बन्धी पूरे नम्बर न मिल सके—हालांकि अन्य सभी विषयों में मुझे पूरे नम्बर मिले थे—सिर्फ मेकेनिक्स में ही बारह नम्बर मिले थे। नतीजा यह हुआ कि मुझे पैदल रेजीमेन्ट में इस शर्त पर कमीशन दिया गया कि बाद में मुझे 'गार्ड्स' में बदल दिया जायेगा। मगर मैं परेशान हो उठा था और मैंने मोर्चे पर भेजे जाने के लिए अर्जी दे दी।"

"तो इस तरह यह सब हुआ।"

"सचमुच, मजाक की बात तो दूसरी है, मैं इतनी बुरी तरह ऊब उठा था कि जल्दी से जल्दी सेवास्तोपोल पहुँच जाना चाहता था। सच बात तो यह है कि भाग्य के एक ही इशारे से मैं यहाँ, गार्ड्स में रह कर जो न पा सकता था, वह पाने की उम्मीद

करता हूँ। वहाँ मुझे कर्नल के पद तक पहुंचने के लिए दस साल तक इन्तजार करना पड़ता जब कि यहाँ तोल्लेवेन दो ही साल में लेफ्टीनेन्ट-कर्नल से जनरल बन चुका है। और, अगर मैं मारा गया तो फिर कोई बात ही नहीं रह जाती।"

"तो तुम इस तरह के आदमी हो!" बड़े भाई ने मुस्कराते हुए कहा।

"मगर, तुम जानते ही हो, भाई," छोटे भाई ने मुस्कराते और शरमाते हुए आगे कहा, मानो जो कुछ वह कहने जा रहा है, लज्जा की बात है, "यह सब कहने की बातें हैं। सबसे प्रमुख कारण जिसकी वजह से मैंने मोर्चे पर भेजे जाने की अर्जी दी थी यह था कि मुझे उस समय पीतर्सबर्ग में रहते हुए लज्जा अनुभव हो रही थी जब कि यहाँ पर हमारे आदमी देश के लिए अपना बलिदान कर रहे थे। और दूसरी बात यह कि मैं तुम्हारे साथ रहना चाहता था" और भी ज्यादा शरमाते हुए उसने आगे कहा।

"तुम भी मजेदार आदमी हो!" बड़े भाई ने अपने सिगरेट केस की तरफ हाथ बढ़ाते और उसकी निगाह को बचाते हुए कहा, "फिर भी यह बड़ी करुणाजनक स्थिति है कि हम दोनों साथ नहीं रह सकेंगे।"

"मगर यह बताओ कि मोर्चे पर क्या स्थिति बहुत ही भयंकर है?" अचानक छोटा भाई पूछ बैठा।

"पहले पहल तो रहती है मगर जब तुम उसके आदी हो जाते हो तो इतनी खराब नहीं लगती। तुम खुद ही देख लोगे।"

"मैं एक बात और पूछना चाहता हूं: क्या तुम्हारा ख्याल है कि दुश्मन सेवास्तोपोल पर कब्जा कर लेगा? मेरा ख्याल है वह कभी भी कामयाब नहीं हो सकेगा।"

"भगवान जाने !"

"मुझे सिर्फ एक बात से परेशानी होती है। रास्ते में दुर्भाग्य से हमारा एक थैला चोरी चला गया, और मेरी फौजी टोपी इसी में थी। अब मैं बड़ी परेशानी में पड़ गया हूं—वहाँ जाकर हाजिरी कैसे दे सकूँगा। अब हमारी टोपी एक नए ढंग की बनी है—और और भी बहुत सी तब्दीलियाँ हुई हैं—सब भलाई के ही लिए। मैं सारी बातें बता सकता हूं। मैं सारे मास्को में घूमा था……"

छोटे कोजेल्तसोव–व्लादीमीर–और उसके बड़े भाई मिखायल की रूपरेखा में बहुत समानता थी, लेकिन यह समानता वैसी ही थी जैसी कि गुलाब की एक खिलती हुई कली और मुरझाये तथा छितराये हुए गुलाब के फूल में होती है। उसके बाल भी उतने ही सुन्दर मगर ज्यादा घने और कनपटियों पर घुँघराले थे। उसकी सुन्दर सफेद गर्दन के पीछे बालों का हल्का सा गुच्छा था—एक सौभाग्य का चिन्ह जैसा कि दाईयाँ कहा करती हैं। उसके गालों पर स्वास्थ्य की लाली नहीं थी मगर उसके प्रत्येक भाव के साथ, उन्हें व्यक्त करती हुई वह उसके गालों पर फैल जाती थी और गायब हो जाती थी। आँखें भाई की ही तरह मगर ज्यादा बड़ी और चमकीली थीं और उनमें रह रह कर एक आद्रता सी छा जाती थी। उसके गालों और लाल ओठों पर एक हल्की सी सुन्दर लालिमा थी। उसके ओंठ प्रायः हल्की सी शर्मीली मुस्कराहट के साथ खुल कर उसके चमकते हुए सफेद दाँतों की झलक दिखा देते थे। इकहरा बदन, चौड़े कन्धे, कोट के बटन खुले हुए जिनके नीचे खड़े कॉलर की लाल कमीज चमक रही थी, उगलियों में सिगरेट दबाये सहन की छड़ों पर झुक कर खड़ा होना और चेहरे तथा अंग-संचालन से व्यक्त होने वाली निश्छल प्रसन्नता—उसका यह रूप एक आकर्षक,

सुदर्शन लड़के का चित्र उपस्थित कर रहा था जिसकी तरफ पर से आँखें हटा लेना किसी के भी वश की बात नहीं थी। वह अपने भाई को देख कर अत्यधिक प्रसन्न था और उसे सम्मान और श्रद्धा के साथ देख रहा था क्योंकि उसकी दृष्टि में वह एक हीरो था। मगर कुछ बातों में—जैसे कि शिक्षा, जिसमें, सच बात तो यह है कि वह स्वयं भी पारंगत नहीं था, फ्रांसीसी भाषा बोलने की योग्यता और सभ्य समाज में व्यवहार करने की कला, नृत्य आदि का जहाँ तक सम्बन्ध था, उसे अपने भाई को देखकर कुछ लज्जा सी होती थी। इसके लिए वह उसे नीची निगाह से देखता था और यह आशा करता था कि अगर हो सका तो वह उसे इन बातों में कुशल बना देगा। उसके मस्तिष्क पर अभी तक पीतर्सवर्ग का, एक सम्भ्रन्त महिला का, जो सुन्दर नवयुवकों की शौकीन थी और जिसने छुट्टियों में उसे अपने घर आने का आमंत्रण दिया था, उसके भवन का और मास्को वाले उस सिनेटर के भवन का जहाँ उसने एक विशाल नृत्य समारोह में भाग लिया था, प्रभाव छा रहा था।

## ७

जी भर कर बातें करने के उपरान्त और उस स्थिति तक पहुँच कर, जो कभी कभी उस समय आ जाती है जब तुम यह सोचते हो कि यद्यपि तुम एक दूसरे को प्यार करते हो फिर भी तुममें समानता बहुत कम है, वे दोनों भाई खामोश हो गए और काफी देर तक वातावरण मौन बना रहा।

"अच्छा, अपनी चीजें इकट्ठी करो, हम लोग फौरन चल देंगे," बड़े भाई ने कहा।

छोटा भाई एकाएक शर्माया और हिचकिचाया।

"क्या, सीधे सेवास्तोपोल को ?" कुछ देर चुप रह कर उसने पूछा।

"बेशक। तुम्हारे पास ज्यादा सामान तो है नहीं। मेरा ख्याल है गाड़ी में सब आ जायेगा।"

"बहुत अच्छी बात है! चलो, फौरन चल दें," छोटे भाई ने गहरी साँस लेते हुए कहा और कमरे में चला गया।

मगर वह रास्ते में ठिठक गया और दरवाजे को बिना खोले ही उसने उदास होकर अपना सिर लटका लिया और सोचा :

"हम लोग सीधे सेवास्तोपोल को जा रहे हैं। सीधे उस भट्टी में। यह बहुत भयानक है। ओह, कुछ भी हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे वहाँ कभी न कभी तो पहुँचना ही है। इस समय, कम से कम मैं अपने भाई के साथ तो हूँगा······"

सिर्फ इसी समय, इस विचार के आते ही कि एक बार वह गाड़ी में सवार हुआ तो फिर सेवास्तोपोल पहुँचने तक नहीं उतर सकेगा और यह कि कोई भी घटना इसे नहीं रोक सकती, उसके सम्मुख उस खतरे का वास्तविक चित्र उपस्थित हुआ जिसे उसने अपनाया था। वह कांपा और उसके इतने निकट होने की सम्भावना से भयभीत हो उठा। शक्ति भर अपने को शान्त कर वह कमरे में घुसा मगर पन्द्रह मिनट बीत गईं, फिर भी वह अपने भाई के पास नहीं लौटा। वह एक अपराधी स्कूल के बच्चे की तरह प—नगर से आये अफसर से कुछ बातें कर रहा था। जब उसके भाई ने दरवाजा खोला तो वह बुरी तरह परेशान हो उठा।

"अभी एक मिनट में आया!" अपने भाई की तरफ इशारा करते हुए उसने कहा। "कृपया मेरा वहीं बाहर इन्तजार करो।"

वह एक मिनट बाद ही निकल आया और एक गहरी साँस भरते हुए भाई के पास पहुँचा।

"सच भाई, इस समय मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता," वह बोला।

"क्यों? कैसी वाहियात बात करते हो?"

"मैं तुम्हें सारी बातें सच-सच बता दूंगा, मिशा! हम में से किसी के पास एक पैसा भी नहीं बचा है और हम सब के सब प—नगर वाले उस लेफ्टीनेन्ट-कप्तान के कर्जदार हैं। बहुत बुरी बात है।"

बड़े भाई ने भौंहों में बल डाले और काफी देर तक खामोश खड़ा रहा।

"तुम्हारे ऊपर बहुत ज्यादा पैसे चाहिए क्या?" अपने भाई को कठोरता के साथ देखते हुए उसने पूछा।

"हाँ काफी है······नहीं, बहुत ज्यादा नहीं। मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। उसने तीन स्टेशनों पर मेरे पैसे चुकाए थे और हम लोग पूरे समय तक उसी की चीनी का स्तैमाल करते रहे हैं······इसलिए मुझे ठीक तरह नहीं मालूम······ओह, और हम लोग ताश खेले थे······इसलिए मुझे उसका काफी देना है।"

"यह बुरी बात है, वोलोदिया! अगर मुझसे मुलाकात न होती तो तुम क्या करते?" अपने भाई की तरफ से निगाहें हटाते हुए बड़े भाई ने गम्भीर होकर पूछा।

"मैंने यह सोचा था कि सेवास्तोपोल पहुँच कर मुझे सफर का भत्ता मिल जायेगा और मैं उसका कर्ज चुका दूंगा। ऐसा करना सम्भव था, था न? इसलिए अच्छा यही होगा कि मैं कल सुबह उसी के साथ जाऊँ।"

बड़े भाई ने अपना बटुआ निकाला और हल्की कांपती हुई उंग-लियों से दो दस-दस रूबल के और एक तीन रूबल का नोट निकाला।

"मेरे पास सिर्फ इतना ही पैसा है," उसने कहा, तुम्हें कितना देना है ?"

यह बताते हुए कि उसके पास सिर्फ इतना ही पैसा है बड़ा भाई सच नहीं बोल रहा था। उसने वक्त-वेवक्त के लिए अपनी आस्तीन में चार सोने के सिक्के और सीं रखे थे मगर वह कसम खा चुका था कि उनसे हाथ भी नहीं लगायेगा।

हिसाब लगाने पर मालूम पड़ा कि छोटा भाई उस अफसर का आठ रूबल का कर्जदार था जिसमें ताश और चीनी दोनों के पैसे भी शामिल थे। उसके भाई ने उसे उतने रूबल दे दिए और साथ ही यह भी कहा कि जब पास पैसे न हों तब ताश नहीं खेलने चाहिए।

"तुम कितने का दाँव लगा कर खेले थे ?"

छोटे भाई ने जवाब नहीं दिया। भाई का सवाल उसकी ईमानदारी पर चोट कर रहा था। अपने ऊपर उसकी खीज और ऐसे काम से उत्पन्न हुई लज्जा जो उसके भाई के मन में जिसे वह इतना प्यार करता था, उसके प्रति अविश्वास और अपमान की भावना भर दे; इस बात ने उसकी भावुक प्रकृति पर इतना दुखद प्रभाव डाला कि वह खामोश रह गया। उसे इस बात का भय हो रहा था कि कहीं वह अपने उठते हुए रुदन को रोकने में असमर्थ न हो जाए। उसने बिना देखे ही पैसे ले लिए और अपने साथियों के पास लौट गया।

## ८

दुवान्कोय में वोदका के दो गिलास चढ़ाने के बाद, जो उसने पुल पर एक सिपाही से खरीदे थे, निकोलाएव ने घोड़े की लगाम

खींची और वह छोटी सी गाड़ी उस पथरीली और कहीं-कहीं छायादार सड़क पर तेजी से चल दी। यह सड़क बेल्वेक के पास होती हुई सेवास्तोपोल को चली गई थी। दोनों भाई, जिनके घुटने एक दूसरे से टकरा रहे थे, एक तनाव पूर्ण खामोशी में बैठे थे हालाँकि दोनों ने क्षणभर के लिए भी दूसरे के विषय में सोचना बन्द नहीं किया।

"इसने मेरा अपमान क्यों किया ?" छोटे भाई ने सोचा, "क्या वह इस बात को कहने से बचा नहीं सकता था ? ऐसा दिखाई पड़ा मानो वह सोच रहा हो कि मैं चोर था और मेरा ख्याल है कि वह अब भी मुझसे नाराज है। मुझे डर है कि हम भले के लिए ही नहीं मिले हैं। मगर यह कितना अच्छा हो अगर हम दोनों सेवास्तोपोल में एक साथ ही रहें। दो भाई, गहरे दोस्त और दोनों ही दुश्मन के खिलाफ लड़ते हुए: उनमें से एक उमर में बड़ा, शिक्षा में शायद कम, मगर फिर भी एक वीर सिपाही, और दूसरा—एक नौजवान मगर वह भी एक अच्छा आदमी......हफ्ते भर में ही मैं यह दिखा दूंगा कि मैं इतनी कम उमर का नहीं हूं, मैं शरमाना भी बन्द कर दूंगा: मेरे चेहरे पर वीरता झलकने लगेगी और मूँछें भी आ जायेंगी, शायद छोटी छोटी सी ही, मगर फिर भी काफी बड़ी हो जायेंगी, और उसने मुँह के पास मसों के एक गुच्छे को मरोड़ा। "शायद हम लोग इसी शाम को वहाँ पहुँच जायेंगे और फौरन ही लड़ाई के लिए चल देंगे। वह तो एक बहुत ही अक्खड़ और बहादुर आदमी है—बातें कम करता है मगर हर बात में आगे ही रहता है। मैं यह जानना चाहता हूं," उसने आगे सोचा, "कि वह मुझे जानबूझ कर गाड़ी के कौने में दबाये जा रहा है या वैसे ही ? उसे यह मालूम होना चाहिए कि मैं तकलीफ में बैठा हूं। और

वह मेरी उपेक्षा सी करने का दिखावा कर रहा है। और इस तरह हम लोग शाम तक पहुँच जायेंगे," उसने गाड़ी के कोने से चिपट कर, और इस बात की कोशिश करते हुए कि वह तब तक नहीं हिलेगा जब तक कि उसका भाई उसकी इस असुविधा को न देख ले, आगे सोचा, "और मैं सीधा मोर्चे पर चला जाऊंगा—मैं अपनी तोपों के साथ और भाई अपनी कम्पनी के साथ और हम दोनों साथ ही साथ काम शुरू कर देंगे। फिर फ्रांसीसी अचानक हमारे ऊपर हमला करेंगे। मैं धुंआधार गोले बरसाऊंगा और काफी दुश्मनों को मार डालूंगा; मगर वे लोग लगातार सीधे मेरी तरफ बढ़ते आयेंगे। मैं और ज्यादा गोले चलाने लायक नहीं रहूंगा—मेरी स्थिति निराश हो उठेगी—मगर एकाएक भाई अपना खंजर लिए टूट पड़ेगा और मैं एक बन्दूक उठा लूँगा, फिर हम दोनों सिपाहियों के साथ आगे बढ़ेंगे। तब फ्राँसीसी मेरे भाई पर टूट पड़ेंगे। मैं दौड़ूंगा, एक फ्रांसीसी को मार डालूँगा, फिर दूसरे को भी और भाई को बचा लूँगा। और आगे दौड़ पड़ूँगा। उसी समय, भाई मेरी बगल में ही एक गोली से मारा जाएगा। मैं क्षण भर के लिए रुकूँगा, दुखी होकर उसकी तरफ देखूँगा फिर खड़ा होकर चीखूंगा, "मेरे साथ आओ, हमें इसका बदला लेना है! मैंने अपने भाई को दुनियाँ में सबसे ज्यादा प्यार किया था," मैं कहूँगा, "और अब वह मुझसे बिछुड़ गया है। हमें उसका बदला लेना है और दुश्मन को मार डालना है या मर जाना है।" प्रत्येक सिपाही दहाड़ उठेगा और मेरे साथ आगे बढ़ेगा। अब पूरी फ्राँसीसी सेना मैदान में आ जायेगी, पेलीजियर खुद भी सामने आ जाएगा। हम उनको चुन चुन कर मार डालेंगे मगर मेरे फिर चोट लग जाएगी और एक बार फिर तीसरी बार मैं घायल हो जाऊंगा और सांघातिक रूप से घायल होकर गिर पड़ूँगा। हरेक भागा आएगा। गोर्चाकोव आएगा और

मुझसे पूछेगा कि मैं कुछ चाहता हूं। मैं कहूंगा मैं सिर्फ यही चाहता हूँ कि मुझे मेरे भाई के पास ही दफनाया जाय—मैं उसी की बगल में मरना चाहता हूँ। मुझे ले जाकर भाई की खून से लथपथ लाश के नजदीक लिटा दिया जायेगा। मैं कुहनी के बल उठूँगा और सिर्फ इतना ही कहूँगा : 'तुम लोग उन दो आदमियों की इज्जत न कर सके जो सचमुच अपने देश को प्यार करते थे; अब दोनों घायल हो गए हैं......भगवान तुम्हें क्षमा करें।" और इतना कह कर मैं मर जाऊंगा।"

कौन जानता है कि इस सपने का कितना हिस्सा सच निकलेगा ?

"क्या तुमने कभी आमने-सामने की लड़ाई लड़ी है ?" उसने अचानक अपने भाई से पूछा, यह भूलते हुए कि वह उससे बातें नहीं करना चाहता था।

"नहीं, एक बार भी नहीं," बड़े भाई ने जबाव दिया, "हमारी रेजीमेन्ट के दो हजार आदमी मारे गए थे, सब किलेबन्दी के ही काम में लगे थे। मैं भी उसी तरह घायल हुआ था। लड़ाई उस तरह नहीं होती जैसा कि तुम सोचते हो, वोलोदिया।"

शब्द 'वोलोदिया' ने छोटे भाई के हृदय को छू लिया; वह अपने भाई से साफ-साफ बातें करना चाह रहा था और उसका भाई इस बात से पूर्णरूपेण अनभिज्ञ था कि उसने उसका अपमान किया था।

"तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो, मिशा, हो क्या ?" उसने कुछ देर बाद पूछा।

"किसलिए ?"

"नही, मैं वैसे ही पूछ रहा हूँ हमारे बीच में जो घटना घटी थी उसके लिए। यह कोई बात नहीं है।

"जरा भी नहीं," बड़े भाई ने छोटे भाई की तरफ घूम कर उसकी टाँग को थपथपाते हुए कहा।

"मुझे माफ कर दो मिशा, अगर मैंने तुम्हें किसी बात से नाराज कर दिया हो," आँखों में उमड़ आए आँसुओं को छिपाने के लिए मुंह फेरते हुए छोटे भाई ने कहा।

## ९

"क्या यही सेवास्तोपोल है?" छोटे भाई ने पूछा जब वे एक पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे। वहाँ उनके सामने खाड़ी में जहाजों के सीधे खड़े मस्तूल, दूर समुद्र में दुश्मन का जहाजी बेड़ा, किनारे की रक्षा करने वाले सफेद तोपखाने, बैरकें, समुद्र का बढ़ा हुआ जल, बन्दरगाह, और शहर की इमारतें और पीला बैंगनी से रंग का धुंआ जो शहर को चारों तरफ घेर कर खड़ी हुई पहाड़ियों की बगल में से निरन्तर उठता चला आ रहा था, आदि वस्तुएं दिखाई पड़ रहीं थीं। ये पहाड़ियाँ, सूरज की गुलाबी किरणों में नीले आकाश की तरफ उठ रही थीं। सूरज पूरी तेजी से चमकता हुआ समुद्र के अन्धकारमय क्षितिज की ओर ढलता चला जा रहा था।

वोलोदिया स्थिर होकर इस भयानक स्थल को देख रहा था जिसके विषय में उसने इतना अधिक सोचा था। परन्तु इसके विपरीत उसने इस वास्तविक रूप से सुन्दर और भव्य दृश्य को श्रद्धा मिश्रित आनन्द और वीरत्व की भावना से भर कर देखा, यह जानते हुए कि आधा घन्टे में ही वह वहाँ पहुँच जायेगा। और वह उसकी तरफ मुग्ध दृष्टि से तब तक देखता रहा जब तक कि उनकी गाड़ी सेवेरनाया न पहुँच गई। यहीं उसके भाई की रेजीमेन्ट का सामान ढोने वाला काफिला पड़ा हुआ था। यहीं उन्हें अपनी रेजीमेन्ट और तोपखाने का पता लगाना था।

सामान ढोने वाले उस काफिले का अफसर उस स्थान पर ठहरा हुआ था जो 'नया नगर' कहलाता था। यहाँ विवाहित नाविकों के परिवारों के रहने के लिए झोपड़ियों की कतारें बनी हुई थीं। वह अफसर एक तम्बू में ठहरा हुआ था, जो शाहबलूत की हरी टहनियों से बनी एक विशाल झोंपड़ी के बगल में था। वे टहनियाँ अभी तक हरी थीं।

उन दोनों भाइयों ने उस अफसर को झोंपड़ी के भीतर, एक पीली सी गन्दी कमीज पहने एक मुड़ने वाली मेज पर बैठे हुए पाया। मेज पर ठन्डी हुई चाय का एक गिलास रखा था जिसकी सतह पर सिगरेट की राख तैर रही थी। इसके अलावा मेज पर एक ट्रे में वोदका की एक बोतल, सूखी हुई खिचड़ी के दाने और रोटी के टुकड़े पड़े हुए थे। वह अफसर गिन्ती गिनने वाले एक यन्त्र की सहायता से नोटों की गड्डी का गिन रहा था। मगर उस अफसर की रूपरेखा और उसके बोलने के ढङ्ग की व्याख्या करने से पहले हमें झोपड़ी के भीतरी हिस्से को ध्यान से देख लेना चाहिए जिससे हम उसके रहन-सहन और काम के विषय में थोड़ा बहुत जान सकें। वह नई झोपड़ी लम्बी चौड़ी और मजबूत थी। उसमें घास की बनी हुई छोटी-छोट मेजें और बेंचें, जैसी कि सिर्फ जनरलों या रेजीमेन्ट के कमान्डरों के लिए बनाई जाती हैं, पड़ी हुई थीं। पत्तियों को नीचे गिरने से रोकने के लिए दीवालों पर और छत के नीचे तीन गलीचे लगा लगा दिए थे जो बहुत ही भद्दे मगर नए और कीमती थे। लोहे की खाट पर, जो सबसे बड़े कालीन के नीचे बिछी थी, ( कालीन पर एमाजोन की तस्वीर बनी हुई थी ) एक चमकीले रंग का लाल कम्बल, एक गन्दा और फटा हुआ चमड़े का तकिया और रेकून

नामक जानवर के बालों का बना एक कोट रखा हुआ था। मेज पर चाँदी के चौखटे में जड़ा एक शीशा, एक बहुत ही गन्दा चाँदी की मूठ वाला ब्रुश, टूटा और गन्दे बालों से भरा हुआ एक सींग का कंघा, एक चाँदी की मोमबत्ती, एक शराब की बोतल जिस पर एक बड़ा लाल और सुनहरी लेबल लगा था, पीटर प्रथम की मूर्त्ति वाली एक सुनहरी घड़ी, दो सोने की अंगूठियाँ, दवाइयों वाला एक डिब्बा, रोटी का एक टुकड़ा और अनेक बिखरे हुए ताश के पत्ते पड़े हुए थे। खाट के नीचे शराब की अनेक भरी और खाली बोतलें बिखरी पड़ी थीं। यह अफसर रेजीमेन्ट का सामान ढोने वाले काफिले और दाने-चारे का इन्चार्ज था। उसके साथ बुढ़िया जैसा एक कमिश्नर रहता था। जब वे दोनों भाई झोपड़ी में घुसे तब वह कमिश्नर तम्बू में सो रहा था, अफसर रेजीमेन्ट का हिसाब-किताब ठीक कर रहा था क्योंकि महीने का आखीर था। वह काफिले का अफसर लम्बा, लम्बी मूंछों और शानदार शरीर वाला होने के कारण एक सुन्दर सिपाही की सी आकृति वाला लग रहा था। उसके शरीर में, उसका पसीने से भरा और फूला हुआ चेहरा जिसमें उसकी छोटी भूरी आँखें लगभग छिप सी गईं थीं, सबसे बड़ा दिखाई पड़ता था। वह इस तरह लग रहा था मानो शराब के नशे में धुत हो। और उसके हल्के तेल पड़े बालों से लेकर स्लीपर पहने बड़े बड़े पैरों तक ऊपर से लेकर नीचे तक, चारों ही ज्यादा गंदगी बहुत तरफ का आलम था।

"ओह! नोटों का कितना बड़ा ढेर है!" झोपड़ी में घुसते ही नोटों की उन गड्डियों पर एक लालची निगाह डालते हुए बड़ा भाई कह उठा। "काश कि मुझे इसका आधा पैसा भी उधार मिल जाता, वासिली मिखायलिच!"

अपने मेहमानों को देखते ही वह काफिले का अफसर चौंक उठा मानो चोरी करता हुआ पकड़ा गया हो; और नोटों को समेटते हुए उसने बिना उठे ही सलाम की।

"ओह, अगर यह मेरा अपना होता······मगर यह सरकारी पैसा है, भाई! यह तुम्हारे साथ कौन है?" उस अफसर ने गड्डियों को कुहनी के पास रखी सन्दूकची में बन्द करते और वोलोदिया की तरफ गौर से देखते हुए कहा।

"मेरा भाई है—अभी ट्रेनिंग लेकर आया है। हम लोग यह पूछने आए हैं कि रेजीमेन्ट कहाँ है?"

"बैठिए, सज्जनो," उस अफसर ने कहा और आगे बिना कुछ कहे वह मेज से उठा और बगल के तम्बू में चला गया। "शराब पीओगे? थोड़ी सी पोर्टर?" उसने वहीं से पूछा।

"कोई मुजायका नहीं, वासिली मिखायलिच!"

वोलोदिया उस काफिले के अफसर की शान, उसके शान्त व्यवहार और जिस सम्मान के साथ उसके भाई ने उससे बातें की थीं, आदि बातों से प्रभावित हो उठा।

"यह अवश्य ही बहुत अच्छा अफसर होना चाहिए जिसकी कि हरेक इज्जत करता है। यह निस्संदेह सीधा, बहादुर और मेहमान-नवाज है," उसने संकोच और नम्रता के साथ सोफे पर बैठते हुए सोचा।

"अच्छा, अपनी रेजीमेन्ट कहाँ है?" बड़े भाई ने वहीं से पूछा।

"क्या कहा?"

उसने अपना प्रश्न दुहराया।

"आज जैफर यहाँ आया था और उसी से मालूम हुआ कि वह कल पाँचवें बुर्ज पर चली गई थी।"

"ठीक मालूम है ?"

"जब मैं ऐसा कह रहा हूँ तो ऐसा होना ही चाहिए। मगर शैतान जाने! उसे झूठ बोलने की क्या पड़ी थी। खैर, थोड़ी सी पोर्टर पीओगे ?" अब भी तम्बू में से ही बोलते हुए काफिले के उस अफसर ने पूछा।

"हाँ, थोड़ी सी पी लेंगे," कोजेल्तसोव ने जबाव दिया।

"तुम्हारा क्या इरादा है ओसिप इग्नात्येविच," वह आवाज तम्बू में गूँजती रही। यह स्पष्ट था कि वह उस कमिश्नर से कह रहा था। "तुम काफी देर सो लिए, सात बज चुके।"

"तुम मुझे परेशान क्यों कर रहे हो! मैं सो नहीं रहा हूँ," एक पतली, सुस्त आवाज आई जिसमें 'स' और 'र' का उच्चारण सुनने में मधुर लगता था।"

"अच्छा, उठ बैठो! तुम्हाने बिना मजा नहीं आता।"

यह कह कर वह काफिले का अफसर अपने मेहमानों के पास लौट आया।

"थोड़ी सी बीयर लाओ! सिम्फेरोपोल की पोर्टर लाओ!" उसने आवाज दी।

कठोर आकृति वाला एक अर्दली, या सम्भव है वोलोदिया को ही ऐसा लगा हो कि उसकी आकृति कठोर थी, झोंपड़ी में घुसा और नीचे झुक कर और ऐसा करते समय उस अफसर को धकेलते हुए, उसने खाट के नीचे से पोर्टर की एक बोतल निकाल ली।

"हाँ, भाई," गिलासों को भरते हुए अफसर ने कहा, "अब हमारी रेजीमेन्ट का एक नया कमान्डर आ गया है। उसे काफी पैसा चाहिए। वह हर चीज खरीदना चाहता है।"

"ओह! मेरा ख्याल है वह एक विशेष प्रकार का कमान्डर है, नए लोगों में से एक है," कोजेल्तसोव ने सम्मान पूर्वक अपना गिलास उठाते हुए कहा।

"हाँ, नए लोगों में से ही है। वह भी औरों की ही तरह मक्खी-चूस है। जब वह एक बटालियन को आज्ञायें दे रहा था तो पागल की तरह चीख रहा था मगर अब दूसरे ही स्वर में बोलने लगा है। यह ठीक नही है, भाई।"

"मैं तुमसे सहमत हूँ।"

छोटा भाई कुछ भी नहीं समझ सका कि वे लोग किस बारे में बातें कर रहे थे, मगर उसे इस बात का हल्का सा आभास हो रहा था कि उसका भाई वह नहीं कह रहा था जो उसने सोचा था और सिर्फ इसलिए उस तरह की बातें कर रहा था क्योंकि उस अफसर की शराब पी रहा था।

बोतल अब खत्म हो चुकी थी और बातचीत काफी देर तक उसी तरह की होती रही। कुछ देर बाद तम्बू का पर्दा हटा और एक ठिगना, साफ रंग वाला आदमी फीता लगा हुआ गहरे नीले रंग का ड्रेसिंग गाऊन, पहने तथा एक लाल पट्टी और झब्बेदार टोपी लगाए भीतर आया। भीतर घुसते समय उसने अपनी छोटी सी काली मूंछों पर हाथ फेरा, कालीन पर एक जगह गौर से देखा और उन अफशरों की सलाम का जवाब तनिक कन्धे हिला कर दिया।

"एक गिलास मुझे भी," उसने मेज पर बैठते हुए कहा। "तुम पीतर्सबर्ग से आ रहे हो, नौजवान ?" उसने वोलोदिया से कोमल स्वर में पूछा।

"हाँ, श्रीमान, मैं सेवास्तौपोल जा रहा हूँ।"

"क्या तुमने अपनी इच्छा से भर्त्ती होना मंजूर किया था ?"

"हाँ, श्रीमान।"

"तुम्हे ऐसा करने की क्या जरूरत आ पड़ी, सचमुच यह बात मेरी समझ में नहीं आती।" उस कमिश्नर ने कहना जारी रखा, "अगर वे लोग मुझे इजाजत दे दें तो मैं पैदल ही पीतर्सबर्ग के लिए चल पड़ूँ। मैं इस कुत्तों जैसी जिन्दगी से परेशान हो उठा हूँ, भगवान की कसम, बहुत ही परेशान हो उठा हूँ।"

"तुम्हें किस बात की शिकायत है," कमिश्नर की तरफ घूमते हुए बड़े भाई ने पूछा, "यहाँ तो तुम्हारी मजे से कटनी चाहिए।"

कमिश्नर ने उसे घूर कर देखा और मुँह फेर लिया।

"शिकायत खतरे की है ( कोजेल्तसोव ने सोचा कि यह यहाँ केवेरनाया में पड़ा हुआ किस खतरे की बात कर रहा है ), एकाकी जीवन—कोई भी चीज नहीं मिलती," कमिश्नर ने पहले की तरह वोलोदिया की तरफ मुखातिब होते हुए कहना जारी रखा, "तुम यहाँ क्यों आना चाहते हो, सचमुच यह बात मैं नहीं समझ पाता सज्जनो! अगर ऐसा करने से कोई लाभ होता तो भी समझ में आता; मगर सिर्फ इसी तरह चले आना! तुम्हारी इस उमर में ही लंगड़ा लूला हो जाने में भी कोई अक्लमन्दी है ?"

"कुछ फायदा देखते हैं और दूसरे इज्जत के लिए काम करते हैं," कुछ नाराज सा होते हुए बड़े भाई ने फिर टोका।

"जब खाने को ही कुछ न मिले तब इज्जत कहाँ रही, "कमिश्नर ने काफिले के अफसर की तरफ मुड़ते हुए, जो खुद भी हंस पड़ा था, घृणा सूचक हंसी के साथ कहा। "जूसिया' पर कुछ लगा दो तो मजा भी आए," उसने ग्रामोफोन की तरफ इशारा करते हुए कहा। "मुझे यह बहुत पसन्द है······"

"यह वासिली मिखायलिच क्या ईमानदार आदमी है ?" वोलोदिया ने अपने भाई से पूछा जब अंधेरा होने पर वे झोपड़ी से बाहर निकले और सेवास्तोपोल की तरफ चल दिए।

"ठीक है, मगर बहुत ही ज्यादा कंजूस है। उसे तीन सौ रूबल माहवार मिलते हैं फिर भी सुअर की तरह रहता है। यह तुम खुद ही देख चुके हो। जहाँ तक उस कमिश्नर का सवाल है, मुझे उसकी शकल से भी नफरत है। मैं किसी दिन उसकी मरम्मत करने वाला हूं। यह बदमाश तुर्की से कम से कम बारह हजार रूबल लेकर आया था···"

और कोजेल्त्सोव अधिक ब्याज लेने के विषय में गर्म होकर बताने लगा। उसे गुस्सा इस बात पर नहीं था कि वह ज्यादा ब्याज लेने के खिलाफ था मगर वह इस बात से नाराज था कि ऐसे भी आदमी हैं जो इस काम को करते हैं।

## १०

वोलोदिया जब रात होने पर उस बड़े पुल पर पहुँचा जो खाड़ी पर बना हुआ था तो उदास तो नहीं था लेकिन उसका हृदय भारी था। जो कुछ भी उसने देखा और सुना था वह सब उसके अभी हाल तक बने हुए विचारों से नितान्त भिन्न था। वह विशाल प्रकाशित चिकने फर्श वाला परीक्षा भवन, उसके साथियों

का सहृदय वार्तालाप और मुक्त हास्य, उसकी नई यूनीफार्म, उसका प्यारा जार जिसे वह सात साल से देखने का आदी था और जिसने उन्हें विदा करते समय आँखों में आँसू भर कर उन्हें अपना बच्चा कह कर पुकारा था। यहाँ पर सब कुछ उसके उन सुन्दर, मादक, भव्य स्वप्नों के नितान्त विपरीत था।

"अच्छा, हम लोग पहुँच गए!" बड़ा भाई बोला जब वे मिखायलोव्स्की तोपखाने के पास पहुँचे और गाड़ी से नीचे उतर पड़े। "अगर उन्होंने हमें पुल पार करने की इजाजत दे दी तो हम लोग सीधे निकोलाएव्स्की बैरकों में चले चलेंगे। तुम वहाँ सुबह होने तक ठहरना और मैं रेजीमेन्ट में जाकर इस बात का पता लगाऊँगा कि तुम्हारा तोपखाना कहाँ पर तैनात है और फिर सुबह तुम्हें लेने आऊँगा।"

"मगर हम लोग साथ-साथ क्यों नहीं जा सकते?" वोलोदिया ने प्रार्थना सी करते हुए कहा। "मैं तुम्हारे साथ ही बुर्ज पर जाऊँगा। किसी तरह हमें इसका आदी तो बनना ही है। अगर तुम जा सकते हो तो मैं भी जा सकता हूं।"

"अच्छा यही होगा कि तुम न जाओ।"

"नहीं, चलूँगा, कम से कम मुझे यह तो मालूम हो जायगा कि किस तरह ···" उसने मिन्नतें करते हुए कहा।

"मैं तुम्हें यही सलाह देता हूँ कि मत जाओ। फिर भी अगर तुम······"

आकाश अन्धकार पूर्ण किन्तु निर्मल था। तारे, उड़ते हुए बम और निरन्तर तोपों के चलने की चमक उस अन्धकार में प्रज्ज्वलित हो उठती थीं। तोपखाने की विशाल सफेद इमारत और पुल का आगे का हिस्सा अन्धकार में धुंधले से चमक रहे थे।

बन्दूकों की आवाजें, बम फटने के धमाके, एक के बाद एक तेजी से या एक ही साथ हो रहे थे। उनका शोर हवा में भर रहा था और हर क्षण पश्चात् वे और भी ज्यादा तेज और साफ सुनाई पड़ने लगते थे। इस शोरगुल के बीच, मानो उसका समर्थन कर रहा हो, इस तरह समुद्र का गर्जन सुनाई पड़ रहा था। समुद्र की तरफ से हवा बह रही थी और उसमें तरी थी। दोनों भाई पुल की तरफ चले। एक फौजी ने भद्दे ढंग से अपनी बन्दूक खड़खड़ाई और पुकारा :

"कौन जा रहा है ?"

"एक सिपाही !"

"मुझे हुक्म मिला है कि किसी को भी न जाने दूँ।"

"क्या मतलब ? हमारा दूसरे किनारे पर पहुँचना जरूरी है !"

"अफसर की इजाजत ले आओ।"

वह अफसर जो एक लंगर पर बैठा झपकियाँ ले रहा था, खड़ा हो गया और उसने सन्तरी को उन्हें निकल जाने देने का हुक्म दिया।

"तुम उस पार जा सकते हो, मगर वापस नहीं आ सकते। तुम लोग किधर चले जा रहे हो ?" उसने मिट्टी की खचिया से भरी हुई गाड़ियों की उस लम्बी कतार की तरफ मुंह करके जोर से कहा जो पुल के दरवाजे पर भीड़ लगाए हुए थी।

पुल की पहली नाव पर चढ़ते ही वे दोनों भाई कुछ सिपाहियों से टकरा गए जो दूसरी तरफ से तेजी से बातें करते हुए आ रहे थे।

"जब उसे गोला-बारूद के लिए पैसा मिला तो उसने अपना हिसाब साफ कर लिया, मैं कहता हूँ......"

"क्यों जवानो !" दूसरी आवाज ने कहा। "जैसे ही तुम सेवेरनाया में आते हो वैसे ही यह महसूस करने लगते हो कि एक दूसरी

दुनिया में पहुँच गए हो, भगवान की कसम! यहां तक कि हवा में भी दूसरी तरह की गन्ध आने लगती है।"

"चुप रहो!" पहली आवाज बोली। "उस दिन एक कम्बख्त बम उड़ता हुआ यहाँ आया और दो मल्लाहों की टाँगें उड़ा गया, इसलिए बातें मत करो!"

दोनों भाई पहली नाव को पार कर गए और दूसरी पर जाते ही ठिठक गए जो गाड़ी के इन्तजार में पानी में काफी डूबी हुई थी। हवा, जो मैदान में इतनी हल्की मालूम पड़ रही थी यहाँ बहुत तेज और तीखी थी। पुल हिल रहा था और लहरें भयंकर रूप से शहतीरों से टकरातीं, लंगर और रस्सियों से टकरा कर बिखर जातीं और तख्तों पर पानी भर जाता। दाहिनी तरफ काले सागर की भयंकर, दुष्टतापूर्ण गरज सुनाई पड़ रही थी। एक सीधी और असीम काली रेखा उसे, तारों भरे, हल्के नीले रंग के आसमान से पृथक कर रही थी; और बहुत दूर पर दुश्मन के जहाजी बेड़े की रोशनियाँ चमक रहीं थीं। बांयी तरफ हमारे एक युद्धपोत की काली चिमनी दिखाई पड़ रही थी और लहरें उसकी बगल से टकराती हुईं सुनाई पड़ रही थीं। एक स्टीमर शोर मचाता हुआ तेजी से सेवेरनाया से दूर चला जा रहा था। उसके पास ही फटने वाले एक बम की रोशनी में उसके डेक पर रखी हुई मिट्टी की खचियाँ, उनके ऊपर खड़े हुए दो आदमी और उसके अगले हिस्से में चिपका हुआ सफेद झाग और छिड़काव सा करती हुईं हरी सी लहरें क्षणभर के लिए दिखाई दे गईं। पुल के किनारे पर बाँहोंदार कमीज पहने बैठा एक मल्लाह, पानी में पैर लटकाये किसी चीज को कुल्हाड़ी से काट रहा था। आगे, सेवास्तोपोल के ऊपर, वे ही चमकें दिखाई पड़ रही थीं और वह भयानक शोर और भी ज्यादा

बढ़ता चला जा रहा था। एक लहर, जो समुद्र से आई थी, पुल की दाहिनी तरफ आकर टकराई और ऊपर चढ़ गई। उसने वोलोदिया के पैरों को भिगो दिया। दो सिपाही बगल में से पानी में पैर छपछपाते हुए निकल गए। एकाएक वहाँ एक धड़ाका हुआ और चमक उठी जिसकी रोशनी में पुल का अगला हिस्सा, उस पर जाती हुई एक गाड़ी और घोड़े पर सवार एक व्यक्ति दिखाई पड़ा और बम के टुकड़े सनसनाते हुए पानी में गिरे जिनसे फौब्बारे से उड़ने लगे।

"अरे, यह तो मिखायल सेमियोनिच है !" घुड़सवार ने बड़े कोजेल्तसोव के सामने लगाम खींचते हुए कहा। "तुम बिल्कुल ठीक हो गए ?"

"देख ही रहे हो। तुम किधर चल दिए ?"

"गोला-बारूद लेने सेवेरेनाया को। मैं इस समय रेजीमेन्ट के एड्जूटेन्ट के पद पर काम कर रहा हूँ······हम लोग अपने ऊपर किसी भी क्षण हमला होने की आशंका कर रहे हैं और हमारे सिपाहियों के पास पाँच बार से ज्यादा चलाने के लिए गोला बारूद ही नहीं है। कैसी हालत हो गई है, क्यों ?"

"मार्तसोव कहां हैं ?"

"कल उसका पैर उड़ गया था······और वह भी शहर में अपने कमरे में सोते हुए······शायद वह तुम्हें अभी भी ड्रेसिंग-स्टेशन पर मिल जाय।"

"रेजीमेन्ट पाँचवें बुर्ज पर है, ठीक है न ?"

"हाँ, हम लोग म—की जगह वहाँ गए हैं,। ड्रेसिंग-स्टेशन में देख लेना, वहाँ अपने कुछ आदमी मिल जायेंगे, वे तुम्हें वहाँ पहुँचा देंगे।"

"और मोर्सकाया वाले मेरे मकान का क्या हाल है ? ठीक ठाक है न ?"

"ओह, भाई, वह जगह बहुत दिन हुए उड़ा दी गई थी। तुम अब सेवास्तोपोल को पहचान भी नहीं सकोगे : न औरतें हैं, न सरायें रही हैं और न गाना ही सुनाई पड़ता है। कल आखिरी परिवार भी बाहर चला गया । अब तो वहाँ भयानक सुनसान है। अच्छा, विदा !"

और वह अफसर दुलकी चाल से आगे बढ़ गया ।

वोलोदिया एकाएक भयभीत हो उठा। उसने कल्पना की कि कोई तोप का गोला या बम का टुकड़ा उड़ता हुआ अभी सीधे उसके सिर में लगेगा। ठन्डी हवा, अन्धकार, आवाजें और विशेष रूप से लहरों की भारी मर्मर की ध्वनि उसे आगे न बढ़ने के लिए चेतावनी सी देती लग रही थी। उनसे ऐसी ध्वनि सी उठ रही थी कि वहाँ आगे जाने से उसे कुछ भी लाभ नहीं होगा, कि उसके कदम फिर कभी भी इस पार रूस की धरती पर नहीं पड़ सकेंगे और अच्छा यह होगा कि वह वापस भाग जाय और इस भयंकर मौत के जाल से जितनी भी ज्यादा दूर जा सके चला जाय। "लेकिन शायद अब बहुत ज्यादा देर हो चुका है, शायद मेरे भाग्य अंक लिखे जा चुके हैं," उसने कुछ तो इस विचार से और कुछ इस बात से कि पानी ने उसके बूटों में घुस कर उसके पैरों को भिगो दिया है, काँपते हुए सोचा ।

वोलोदिया ने एक गहरी सांस ली और अपने भाई से थोड़ी दूर जाकर खड़ा हो गया ।

"भगवान ! क्या मैं यहीं मारा जाऊँगा ? भगवान, मेरे, ऊपर रहम करो !" वह अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाते हुए बुदबुदाया ।

"अच्छा, वोलोदिया, चलना चाहिए," बड़े भाई ने जैसे ही गाड़ी पुल पर चढ़ी कहा। "तुमने उस बम को देखा था ?"

पुल पर उन भाइयों को घायल आदमियों या खच्चियों से भरी हुई गाड़ियाँ मिलीं। एक गाड़ी, जिसे एक औरत हांक रही थी, फर्नीचर से लदी हुई थी। पुल की दूसरी तरफ उन्हें नहीं रोका गया।

अपने आप ही निकोलाएव्स्की तोपखाने की दीवाल से चिपके हुए और चुपचाप इस समय अपने ऊपर फटते हुए बमों और ऊपर से बरसते हुए उनके टुकड़ों की सनसनाहट को सुनते हुए दोनों भाई तोपखाने की उस मजार पर पहुँचे जहाँ पवित्र देवी माता की मूर्त्ति रखी हुई थी। यहाँ उन्हें पता चला कि पाँचवीं पल्टन जिसमें वोलोदिया की नियुक्त हुई थी, कोरबेलनाया में थी। खतरे को जानते हुए भी बड़े भाई ने वह रात पाँचवे बुर्ज पर स्थित अपने क्वार्टर में ही बिताने का निश्चय किया और यह भी कि फिर दूसरे दिन वहाँ से वे लोग तोपखाने के लिए चले जायंगे। एक गलियारे के घुमाव पर मुड़ कर और तोपखाने की दीवाल के नीचे फर्श पर सोते हुए सिपाहियों की टांगों के ऊपर से होते हुए अन्त में वे ड्रेसिंग-स्टेशन जा पहुँचे।

## ११

जैसे ही वे पहले कमरे में घुसे, दो नर्सें उनकी तरफ आईं। इस कमरे में खाटें पड़ी हुई थीं जिन पर घायल सिपाही लेटे हुए थे और एक ऐसी दम घोंटने वाली सी भयंकर और घृणित गन्ध वहाँ भर रही थी जो कि प्रायः अस्पतालों में पाई जाती है।

उन नर्सों में से एक, पचास के आसपास की अवस्था वाली एक स्त्री जिसकी आँखें काली और चेहरा कठोर था, पट्टियाँ और

घाव पर बांधने वाला मुलायम कपड़ा लिए थी और एक छोटे से लड़के को हुक्म देती जा रही थी जो उसके पीछे-पीछे चल रहा था। दूसरी, लगभग बीस साल की एक अत्यन्त सुन्दर लड़की जिसका चेहरा पीला, सुन्दर और कोमल था जो उसकी सफेद टोपी से ढका हुआ बड़ा मधुर और निरीह सा दिखाई देता था, अपने कोट की जेब में हाथ डाले और आँखें नीची किए और इस तरह देखती हुई मानो पीछे छूट जाने की कल्पना से भयभीत हो, बड़ी नर्स की बगल में चल रही थी।

कोजेल्तसोव उनके पास गया और पूछा: कि उन्हें मालूम है कि मार्तसोव, जिसकी टांग एक दिन पहले टूट गई थी कहाँ है।

"प–रेजीमेन्ट वाला आदमी ?" बड़ी नर्स ने पूछा। "क्या वह तुम्हारा रिश्तेदार है ?"

"नहीं, मैडम। मेरा साथी है।"

"हुँ! इन्हें उसके पास ले जाओ," उसने छोटी नर्स से फ्रांसीसी भाषा में कहा। "इधर," और यह कह कर वह उस छोटे लड़के के साथ एक घायल सिपाही की खाट की तरफ चली गई।

"चलो, चलें। क्या देख रहे हो ?" कोजेल्तसोव ने वोलोदिया से पूछा जो भौंह चढ़ाए और चेहरे पर दुख का एक भाव लिए घायलों को देख रहा था। उन पर से उसकी आखें नहीं हट सकीं।

"चलो, चलें !"

वोलोदिया भाई के पीछे-पीछे चल दिया और चलता हुआ चारों तरफ आँखें फाड़फाड़ कर देखता और मन ही मन बड़बड़ाता चला जा रहा था:

"ओह, भगवान ! ओह, भगवान !"

"मेरा ख्याल है कि यह अभी आया है," नर्स ने वोलोदिया की तरफ, जो अब भी आहें भरता हुआ गलियारे में उनके पीछे पीछे चल रहा था, इशारा करते हुए कोजेल्तसोव से पूछा।

"हाँ, अभी आया है।"

उस सुन्दर नर्स ने वोलोदिया की तरफ देखा और एकाएक रो पड़ी।

"हे भगवान ! हे भगवान ! यह सब कब समाप्त होगा !" उसने निराशा भरे स्वर में कहा।

वे लोग अफसरों के वार्ड में घुसे। मार्तसोव पीठ के बल लेटा हुआ था। उसकी मांसल भुजा, कुहनी तक खुली हुई उसके सिर के पीछे पड़ी हुई थी और उसका उतरा हुआ चेहरा उस व्यक्ति का सा भाव धारण किए हुए था जो कहीं दर्द से चीख न पड़े इस भय से अपने दाँतों की भिच्ची मारे हुए हो। उसकी साबुत टाँग जिस पर मोजा चढ़ा हुआ था कम्बल के नीचे से निकल रही थी और यह साफ दिखाई पड़ रहा था कि वह बराबर अपने पंजे को मरोड़ रहा था।

"क्यों, कैसी तबियत है ?" उस नर्स ने उसके गंजे से सिर को अपने पतले, कोमल हाथ से उठाते हुए पूछा और उसका तकिया ठीक कर दिया। वोलोदिया ने गौर किया कि वह नर्स एक उंगली में सोने की अंगूठी पहने हुए थी। "तुम्हारे कुछ दोस्त तुम्हें देखने आए हैं।"

"बड़ी तकलीफ होती है !" मरीज ने गुस्से के साथ कहा। "मुझे अकेला रहने दो ! मैं ठीक हूँ।" मोजे में पंजे और भी तेजी से इंठने लगे। "हलो ! मुझे अफसोस है, तुम्हारा क्या नाम है ?" उसने खुद ही कोजेल्तसोव से पूछा। "ओह, हाँ—यहाँ तो व्यक्ति सब

कुछ भूल जाता है," उसने कहा जब कोजेल्तसोव ने उसे अपना नाम बताया। "हम लोग रहते थे, रहते थे न ?" उसने बिना किसी तरह की प्रसन्नता प्रकट किए पूछा और वोलोदिया की तरफ प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखा।

"यह मेरा भाई है। अभी पीतर्सबर्ग से आया है।"

"हूँ! अच्छा है! मुझे बिल्कुल छुट्टी मिल गई है," उसने दर्द से मुँह को सिकोड़ते हुए कहा। "ओह, कितनी तकलीफ होती है!... जल्दी मौत आ जाय तो छुट्टी मिल जाय।"

उसने इठते हुए अपने पैर को झटका दिमा और हाथों से चेहरा ढक लिया।

"अच्छा हो कि इन्हें अकेला छोड़ दो," आँखों में आंसू भरे हुए नर्स ने फुसफुसा कर कहा। "इनकी हालत खराब है।"

सेवेरनाया में दोनों भाइयों ने साथ-साथ पाँचवें बुर्ज पर जाने का प्रबन्ध किया था, मगर निकोलाएव्स्की तोपखाने से निकलने के बाद उन्होंने तय किया कि दोनों अलग-अलग रास्ते से जायेंगे मानो कि उनमें यह मूक समझौता हो गया हो कि बेकार खतरे में क्यों पड़ा जाय।

"मगर तुम जगह का पता कैसे लगाओगे वोलोदिया ?" बड़े भाई ने पूछा। "ठीक! वहाँ निकोलाएव है, वह तुम्हें कोराबेलनाया तक पहुँचा देगा। मै अकेला ही जाऊँगा और कल सुबह तुमसे मिलूंगा।"

इस, अपनी अन्तिम विदाई के समय, दोनों भाइयों ने एक दूसरे से और कुछ भी नहीं कहा।

## १२

तोपें पूरी तेजी से गरज रहीं थी मगर एकातेरिनिनस्काया सड़क, जिस पर निकोलाएव के साथ वोलोदिया चुपचाप चला जा रहा था, सूनी और शान्त थी। इस अंधेरे में वह सिर्फ यही देख पा रहा था कि उस चौड़ी सड़क के दोनों ओर विशाल, सफेद इमारतें बनीं थीं, जिनकी दीवालें जगह-जगह से टूटी हुई थीं, और पत्थरों की बनी वह पगडंडी थी जिस पर वह बढ़ा चला जा रहा था। थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसे मार्ग में कुछ सिपाही और अफसर मिल जाते थे। सड़क के बाँयी तरफ चलते हुए और नाविक-सेना के प्रधान कार्यालय के बगल से गुजरते हुए उसने एक दीवाल के पीछे जलती हुई साफ रोशनी में बबूल के वृक्षों को जो सड़क के दोनों किनारों पर लगाये गए थे, उनकी हरी टहनियों और मुरझायी हुई धूल भरी पत्तियों को देखा। वह अपने पीछे गहरी साँसें लेते और चलते हुए निकोलाएव के और अपने कदमों की आवाज को साफ सुन रहा था। वह किसी विशेष वस्तु के विषय में नहीं सोच रहा था : वह सुन्दर नर्स, मार्तसोव की इठती हुई मोजे वाले पैर की उंगलियाँ, वह अन्धकार, वे बम और मृत्यु की अन्य अनेक मूर्त्तियां उसके दिमाग में धुंधली सी आकृति धारण कर घूम रहीं थीं। उसका प्रभावित हो उठने वाला युवक हृदय डूबा जा रहा था और उसके हृदय में एकाकीपन और ऐसे संकट के समय सम्पूर्ण विश्व द्वारा उसकी उपेक्षा किए जाने से एक टीस सी उत्पन्न हो रही थी। "मैं मारा जाऊँगा, मुझे तकलीफ होगी, मैं भुगतूँगा और कोई एक भी आँसू नहीं बहायेगा!" उसने युद्ध के जिस वीरता पूर्ण जीवन और कोमल सहानुभूति के जो मधुर स्वप्न देखे थे उनके बदले में उसे यह सब मिल रहा था। बम उसके और भी ज्यादा नजदीक फटने

ग्रौर सनसनाने शुरू हो गए थे। निकोलाएव ग्रौर भी जल्दी जल्दी गहरी साँसें लेने लगा था मगर बोल कुछ भी नहीं रहा था। जैसे ही उन्होंने माली सोराबेल्नी पुल को पार किया, वोलोदिया ने किसी चीज को ग्रपने बिल्कुल पास होकर उड़ते ग्रौर खाड़ी में गिरते हुए देखा। उसने बैंगनी रंग की लहरों को क्षण भर के लिए लाल चमक से भर दिया फिर गायब हो गई ग्रौर फौरन ही एक ऊँचे फुब्बारे के साथ ऊपर उठी।

"इसका पलीता कटा हुग्रा नहीं था, तुमने गौर किया था?" निकोलाएव ने कहा।

"हाँ," वोलोदिया स्वतः ही कह उठा ग्रौर ग्रपनी पतली ग्रौर कूकती हुई ग्रावाज से ग्राश्चर्य चकित हो उठा।

रास्ते में उन्हें घायलों के कई स्ट्रेचर ग्रौर मिट्टी की खचियों से भरी ग्रनेक गाड़ियाँ मिलीं। कोराबेलनाया में उन्हें एक रेजीमेन्ट मिली। घुड़सवार बगल में से गुजरे। घुड़सवारों में एक ग्रफसर एक कज्जाक के साथ 'कदम' चाल से चला जा रहा था मगर वोलोदिया को देखकर उसने लगाम खींची, लड़के के चेहरे को गौर से देखा, एक तरफ को मुड़ा ग्रौर घोड़े के चाबुक फटकारता हुग्रा चला गया। "ग्रकेला, बिल्कुल ग्रकेला! कोई भी परवाह नहीं करता कि मैं जिन्दा हूं या नहीं," बेचारे लड़के ने हताश होकर सोचा—ग्रौर उसे ऐसा लगा कि वह रो पड़ेगा।

एक पहाड़ी पर चढ़ कर ग्रौर एक सफेद दीवाल की बगल में से गुजरते हुए वह एक सड़क पर मुड़ा जिसके दोनों तरफ टूटे हुए मकान थे जो बमों की चमक से प्रकाशित हो उठते थे। एक शराबी गन्दी ग्रौरत एक मल्लाह के साथ फाटक में से निकली, वोलोदिया से टकराई ग्रौर बड़बड़ाई :

"काश कि वह एक भला आदमी होता''माफ करना मिस्टर अफसर, हुजूर।"

जैसे जैसे काले क्षितिज पर चमकें और भी तेजी से चमकने लगीं और बम उसके चारों तरफ और भी ज्यादा संख्या में फटने और सनसनाने लगे वैसे ही वैसे उस बेचारे लड़के के हृदय में और भी ज्यादा दर्द बढ़ने लगा। निकोलाएव ने एक गहरी साँस ली और अचानक ऐसे स्वर में बोलने लगा जो वोलोदिया को मृत्यु-संगीत सा प्रतीत हुआ।

"उसे देहात छोड़ने की इतनी भयङ्कर जल्दी थी! हमें जाना ही चाहिए! हमें जाना ही चाहिए! और हम इस तरफ तेजी से बढ़े जा रहे थे! जो समझदार लोग है, जब उन्हें जरा सी भी खुरसट लग जाती है तो ज्यादा दिनों तक अस्पताल में पड़े रहते हैं। यही हालत है! इससे अच्छा और क्या हो सकता था?"

"मगर भाई ठीक हो गया था। वह और कर ही क्या सकता था?" वोलोदिया ने उत्तर दिया, यह आशा करते हुए कि बातें करने से उसके हृदय पर जो भार सा पड़ रहा है उससे छुटकारा मिल जाएगा।

"ठीक हो गए! जब वह सचमुच बीमार हैं तब तुम कैसे कह सकते हो कि ठीक हो गए? कुछ लोग जो सचमुच ठीक हैं और अक्लमन्द हैं ऐसे मौके पर अस्पताल में रहते हैं। यहाँ रहने में क्या मजा है? तुम्हारी एक टाँग या बाँह उड़ सकती है—और फिर सब खत्म हुआ समझो! और तुम्हें इसका ज्यादा देर तक इन्तजार भी नहीं करना पड़ता! यहाँ शहर में ही जब हालत काफी खराब है तो उन बुर्जों पर तो न जाने कैसी होगी? पूरे समय तक तुम बरबस प्रार्थना ही करते रहो''''''शैतान! सनसनाता

हुआ ठीक बगल से निकला है !" उसने बगल में होकर उड़ते हुए एक बम के टुकड़े की सनसनाहट को सुनकर आगे कहा । "देखिए, मुझे आपको यहां तक पहुँचाने के लिए कहा था," उसने कहना जारा रखा । "यह सच है कि हम अपना काम जानते हैं : जैसा कहा जाता है वैसा ही करना पड़ता है मगर परेशानी की बात यह है कि हम लोग गाड़ी को एक सिपाही के साथ और बंडलों को खुला हुआ छोड़ आए हैं । जाओ, वह कहते हैं, जाओ ! लेकिन अगर कोई चीज खो गई तो निकोलाएव को ही दोष लगेगा ।"

कुछ और कदम चलने के बाद वे लोग एक चौक में आ पहुँचे । निकोलाएव ने एक गहरी साँस ली और बिल्कुल खामोश हो गया ।

"यह आपका तोपखाना है हुजूर !" निकोलाएव ने एकाएक कहा । "सन्तरी से पूछ लीजिए, वह आपको बता देगा कि कहाँ जाना है ।" वोलोदिया कुछ कदम आगे बढ़ गया । अब उसे निकोलाएव की आहें सुनाई नहीं पड़ रही थीं ।

अचानक उसने अपने आपको नितान्त एकाकी पाया । एकाकीपन और संकट की यह अनुभूति उसके हृदय पर एक ठंडे और भयंकर रूप से भारी पत्थर के समान भार डाल रही थी । उसे लगा कि वह मौत के दरवाजे पर खड़ा है । वह चौक के बीच में जाकर खड़ा हो गया, चारों तरफ देखा कि कोई देख रहा है या नहीं फिर अपने हाथों में सिर छिपा लिया और भय से काँपते हुए बड़बड़ाया: "हे भगवान ! क्या मैं सचमुच कायर हूं ? एक घृणित, पशु के समान नीच कायर हूं ? क्या मैं अपने देश के लिए, जार के लिए, जिसके विषय में मैंने अभी अत्यन्त उमंग के साथ मरने का स्वप्न देखा

था, सम्मान के साथ नहीं मर सकता ? नहीं, मैं एक दीन हीन प्राणी हूं !" और स्वयं के प्रति निराशा और भ्रम की सच्ची भावना से भर कर उसने सन्तरी से तोपखाने के कमान्डर के क्वार्टर की तरफ जाने का रास्ता बताने के लिए कहा और उस तरफ चल पड़ा।

## १३

तोपखाने के कमान्डर का क्वार्टर, जिसकी तरफ सन्तरी ने इशारा किया था, एक छोटा सा दो मंजिला मकान था जिसका दरवाजा अहाते में खुलता था। एक मोमबत्ती की धुंधली सी रोशनी खिड़की पर चिपकाए गए कागज में से चमक रही थी। सहन में एक अर्दली बैठा पाइप पी रहा था। वह वोलोदिया के आने की सूचना देने भीतर गया और फिर वापस आकर उसे एक कमरे में ले गया। कमरे में, दो खिड़कियों के बीच, एक टूटे हुए शीशे के नीचे, सरकारी कागजातों से भरी एक लिखने की मेज रखी थी। साथ ही कुछ कुर्सियां, एक लोहे का पलंग भी था जिस पर साफ विस्तर बिछा था और विस्तर की ही बगल में फर्श पर एक छोटा सा कम्बल पड़ा था।

दरवाजे पर घनी मूंछों वालों एक सुन्दर पुरुष खड़ा था। वह सार्जेन्ट-मेजर था। बगल में पड़ी हुई म्यान में उसकी संगीन लटक रही थी। वह एक बड़ा कोट पहने हुए था जिस पर 'सन्त जार्ज क्रॉस' और हंगरी का तमगा लगा हुआ था। कमरे के बीच में इधर से उधर घूमता हुआ एक ठिगना सा स्टाफ अफसर था। उसकी उमर चालीस के लगभग होगी। वह एक पतला, पुराना कोट पहने हुए था। उसका एक गाल सूज रहा था जिस पर उसने एक रूमाल बांध रखा था।

"पताकावाहक कोजेल्तसोव जूनियर, फिफ्थ लाईट बैटरी में तैनात ड्यूटी पर हाजिर हुआ है," वोलोदिया ने फौजी ढंग से कहा।

तोपखाने के कमान्डर ने रूखे ढङ्ग से उससे मिलाने के लिए बिना हाथ बढ़ाये जबाब दिया वोलोदिया की सलाम का और बैठने के लिए कहा।

वोलोदिया सहमा हुआ सा मेज के पास वाली एक कुर्सी पर बैठ गया और एक कैंची से खेलने लगा जो उसने अनजान में ही उठाली थी। कमान्डर पीठ पीछे हाथ बांधे, सिर नीचा किए और रह रह कर कैंची से खेलते उन हाथों पर निगाह डालते हुए, एक ऐसे व्यक्ति की मुद्रा में कमरे में इधर से उधर घूमता रहा जो किसी बात को याद करने की कोशिश कर रहा हो।

कमान्डर काफी तगड़ा व्यक्ति था। उसकी खोपड़ी पर बीच में बाल नहीं थे, मूछें घनी और लम्बी थीं जिन्होंने उसके मुँह को छिपा सा लिया था, आँखें बड़ी सुन्दर और चमकीली थीं। हाथ सुडौल, साफ और मोटे थे; छोटी और बाहर की तरह मुड़ी हुई सी टांगों से वह मजबूत कदम रखता हुआ अक्खड़ता के साथ चलता था जिससे यह स्पष्ट होता था कि वह संकोची व्यक्ति नहीं है।

"हाँ," उसने सार्जेन्ट-मेजर के सामने रुकते हुए कहा "अच्छा यह होगा कि हम कल से ही तोपखाने के घोड़ों का चारा थोड़ा सा और बढ़ा दें; वे बहुत दुबले हो गए हैं। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"हम थोड़ा सा बढ़ा सकते हैं, हुजूर। क्यों नहीं बढ़ा सकते? जौ अब सस्ता हो गया है" सार्जेन्ट-मेजर ने अपनी उंगलियों को मरोड़ते हुए, हाथों को बगल में लटकाए जबाब दिया। उसकी

हरकतों से यह लग रहा था मानो वह वार्तालाप के समय अपने हाथों को हिलाने की अपनी आदत पर काबू पाना चाह रहा हो।

"हुजूर, कल, हमारे चारे के अध्यक्ष फ्रांसचुक ने काफिले से एक चिट्ठी यह लिख कर भेजी थी कि हमें गाड़ी की कुछ धुरियां खरीदनी हैं। वह कहता है कि वे सस्ती हैं। आपकी क्या आज्ञा है?"

"अच्छा, थोडी सी खरीद लेने दो। उसके पास पैसा तो है ही।" कमरे में इधर से उधर पुनः घूमता प्रारम्भ करते हुए कमान्डर ने कहा।···तुम्हारा सामान कहाँ है! उसने एकाएक वोलोदिया के सामने रुकते हुए पूछा।

वोलोदिया अपने इस विचार से कि वह कायर है, इतना उद्विग्न था कि वह अपनी तरफ़ उठी हुई हर निगाह और अपने से कहे गए हर शब्द में घृणा की भावना देखने लगा था। उसे ऐसा लगा कि कमान्डर उसका रहस्य जान गया है और उसका मजाक उड़ा रहा है। अपनी हड़बड़ाहट से लज्जित होते हुए उसने जबाव दिया कि उसका सामान ग्राफ्सकाया में है और यह कि उसके भाई ने उसे दूसरे दिन पहुंचा देने का वायदा किया है।

मगर लेफ्टीनेन्ट-कर्नल उसकी बातें नहीं सुन रहा था। सार्जेन्ट-मेजर की तरफ मुड़ते हुए उसने पूछा:

"हमें इस पताकावाहक को कहाँ रखना चाहिए?"

"पताकावाहक को हुजूर?" सार्जेन्ट-मेजर ने दुहराया और ऐसा करते समय उसने वोलोदिया की तरफ एक उड़ती हुई निगाह डाल कर उसे और भी हड़बड़ाहट में डाल दिया। उसकी निगाह मानो कह रही थी: "कौन सा पताकावाहक? और क्या यह कहीं भी रखे जाने के योग्य है?"

"हम उसे नीचे रख सकते हैं, हुजूर, उस लेफ्टीनेन्ट-कप्तान वाले कमरे में," उसने कुछ रुक कर कहा, "लेफ्टीनेन्ट-कप्तान मोर्चे पर है इसलिए उसका विस्तर खाली है।"

"क्यों, तब तक इससे काम चल जायेगा," कमान्डर ने वोलोदिया से पूछा, "तुम थक गए होगे। कल तुम्हें किसी अच्छी जगह रख दिया जायेगा।"

वोलोदिया उठा और सलाम की।

"चाय पीओगे," जब वोलोदिया दरवाजे पर पहुँच चुका था, कमान्डर ने पूछा। "समोवार अभी तैयार हो जायेगा।"

वोलोदिया ने सलाम की और बाहर चला गया। कर्नल का अर्दली उसे नीचे ले गया और एक गन्दे, तरह तरह के सामानों से भरे, खाली कमरे में ले पहुँचा। इसमें बिना चादर और कम्बल वाला एक लोहे का पलंग पड़ा था। गुलाबी कमीज पहने और एक भारी फौजी कोट ओढ़े एक आदमी उस पर सो रहा था।

वोलोदिया ने उसे मामूली सिपाही समझा।

"प्योत्र निकोलायच," उस आदमी का कन्धा पकड़ कर हिलाते हुए अर्दली ने आवाज दी। "यहां पताकावाहक अफसर सोयेगा... यह हमारे कैडेट हैं," उसने वोलोदिया की तरफ मुड़ते हुए उस सोते हुए व्यक्ति के विषय में बताया।

"ओह, परेशान मत होइये!" वोलोदिया ने कहा, मगर वह कैडेट जो एक लम्बा, भारी भरकम शरीर वाला नौजवान था तथा जिसका चेहरा सुन्दर परन्तु बिल्कुल मूर्खों का सा था, विस्तर से उठ खड़ा हुआ, कोट कन्धे पर डाला और औंघता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

"ठीक है, मैं अहाते में सो जाऊँगा," वह बड़बड़ाया।

## १४

वोलोदिया जब अपने विचारों में डूबा हुआ अकेला रह गया तो उसने सबसे पहले अपने मन में अपनी उस व्यग्रता और निराशा की स्थिति के प्रति घृणा अनुभव की। वह सब कुछ भूल कर, विशेष रूप से अपने को भूल कर सोना चाह रहा था। उसने मोमबत्ती बुझाई, कोट उतारा, विस्तर पर लेटा और ऊपर से कोट ओढ़ कर अपना मुँह उसके भीतर कर लिया जिससे कि वह उस अँधेरे के भय से मुक्त हो जाय जो उसकी बचपन की आदत थी। मगर एकाएक उसके मन में यह विचार उठा कि कोई बम उड़ता हुआ आए, छत को तोड़ डाले और उस पर फट उसका खात्मा कर दे। वह उठा और कान लगा कर सुनने लगा। उसने अपने ठीक ऊपर उस कमान्डर के कदमों के चलने की आवाज सुनी।

"अगर एक बम उड़ता हुआ आता ही है," उसने सोचा, "तो सबसे पहले ऊपर वालों को मारेगा और उसके बाद मुझे, कम से कम मरने वालों में मैं ही अकेला तो नहीं हूंगा।" इस विचार ने उसे थोड़ी सी शान्ति दी और वह ऊंघने लगा......"लेकिन अगर आज रात को ही सेवास्तोपोल पर कब्जा हो गया और फ्रांसीसी अराति चले आए? तो मैं अपनी रक्षा किस चीज से करूँगा?" वह फिर विस्तर से उठ खड़ा हुआ और कमरे में घूमने लगा। तुरन्त ही वह सम्भावित भय अंधेरे के उस रहस्यपूर्ण भय पर हावी हो गया। एक घोड़े की काठी और एक समोवार के अलावा उस कमरे में और कोई भी ठोस चीज नहीं थी। "मैं नीच हूं, मैं बुजदिल हूँ, बहुत ही बड़ा कायर!" एकाएक उसने सोचा और फिर उसके मन में स्वयं अपने प्रति विरक्ति और घृणा की भावना भर उठी। वह फिर लेट गया और विचारों से मुक्ति पाने का प्रयत्न करने लगा

मगर बमबारी के शोर ने जो उस कमरे की एकमात्र खिड़की के काँचों को खड़खड़ा देता था, उसके मस्तिष्क में पुनः दिन भर की घटनाओं की स्मृति जगा दी और उसके सामने पुनः खतरा आकर खड़ा हो गया। उसने कल्पना द्वारा देखा कि उस कमरे में घायल और उनका खून पड़ा हुआ है, बम और उनके टुकड़े उड़ते चले आ रहे हैं, वह सुन्दर नर्स उसके ऊपर झुकी उसकी मलहम पट्टी करती हुई रो रही है, वह मर रहा है उसकी माँ उसके देहाती नगर में उसे विदा दे रही है, वह बुरी तरह रोती हुई आँखों में आँसू भरे एक पवित्र चित्र के सम्मुख जोर जोर से प्रार्थना करती जा रही है। और पुनः उसने अनुभव किया कि नींद का आना असम्भव है। वह घुटनों के बल बैठ गया; अपने ऊपर पवित्र क्रॉस का निशान बनाया और उस तरह हाथ बाँध लिए जैसा कि उसे बचपन में सिखाया गया था। इस कार्य ने उसकी बहुत देर से खोई शान्ति को पुनः प्राप्त करा दिया।

"अगर सिर्फ मरने के लिए ही मुझे जिन्दगी मिली है तो हे भगवान जल्दी से उठा ले," उसने प्रार्थना की, "लेकिन अगर साहस और दृढ़ता की आवश्यकता है, जिसकी कि मुझमें कमी है, तो वह मुझे दे दे मगर इस लज्जा और तिरस्कार से मुझे बचा ले जो मेरी सहन शक्ति से परे है। मुझे यह बता कि तेरी इच्छा को पूरा करने के लिए मुझे क्या करना है!"

उसके हृदय से बचकानेपन का, भय का और संकीर्णता का भाव तुरन्त तिरोहित हो गया और अब वह एकाएक एक वीर मनुष्य बन गया। अब उसका हृदय हल्का था। उसके सम्मुख एक नवीन, विस्तृत और प्रकाशमान क्षितिज स्पष्ट हो उठा। अनेक विचार और भावनायें उसके मस्तिष्क में, थोड़े समय में ही जब तक उस बात का प्रभाव

रहा, उठ खड़ी हुई। मगर फौरन ही वह उन बराबर हो रहे धड़ाकों, बमबारी के भयङ्कर गर्जन और खिड़की की खड़खड़ाहट की आवाजों से बेखबर होकर गहरी नींद में सो गया।

महान ईश्वर! केवल तू ही मृत्यु के इस भयङ्कर क्रीड़ा स्थल से उठने वाली निरपराध लोगों की सच्ची और हृदयस्पर्शी प्रार्थनाओं को, उनकी अस्पष्ट प्रायश्चित की भावनाओं को और उनके कष्टों को सुनता और जानता है। वह जनरल जो सिर्फ क्षण भर पहले नाश्ता और 'सन्त जार्ज क्रॉस' प्राप्त करने की बात सोच रहा था मगर भयभीत होकर जिसने तेरे अस्तित्व का अनुभव किया था, से लेकर उस थके मांदे, भूखे, जुओं से भरे सिपाही तक ने जो निकोलाएव्स्की तोपखाने के नंगे फर्श पर सीधा पड़ा हुआ तुझसे प्रार्थना कर रहा है कि तू उसे जल्दी से जल्दी वह इनाम बख्श दे जिसकी वह अनजान में ही अपनी इन तकलीफों के बदले में उम्मीद कर रहा है, तेरी उपस्थिति को महसूस किया है। हाँ तू अपने बच्चों की प्रार्थनायें सुनता सुनता कभी नहीं थकता और तू उनके पास हर जगह एक फरिश्ता भेज देता है जो उनके दिलों में साहस, कर्त्तव्य की भावना और आशा के पूर्ण होनें की आशा भर देता है।

## १५

अपनी रेजीमेन्ट के एक सिपाही से मुलाकात होने पर कोजेल्तसोव (बड़ा भाई) उसे साथ ले सीधा पाँचवें बुर्ज पर चल दिया।

"दीवाल के सहारे-सहारे चलिए, सरकार!" सिपाही ने कहा।

"क्यों?"

"खतरा है, सरकार। उस आने वाले की तरफ देखिए," उस सिपाही ने एक तोप के गोले की सनसनाहट को सुनते हुए कहा जो

सन्नाता हुआ आया और सड़क की दूसरी तरफ सूखी जमीन पर गिर पड़ा।

सिपाही की तरफ कोई ध्यान न देकर कोजेल्तसोव बहादुरी के साथ सड़क के बीच में चलने लगा।

ये वे ही सड़कें थीं, वे ही, शायद ज्यादा चहल पहल वाली तथा तोपों की चमक, लोगों की कराहों, घायलों से होने वाली मुलाकातों से भरी हुई, वे ही तोपखाने, दीवालें और खाइयाँ जैसी कि तब थीं जब वह बसन्त में सेवास्तोपोल में आया था लेकिन अब चारों तरफ उदासी छा रही थी मगर जोश ज्यादा था। इमारतें ज्यादा टूट फूट गई थीं और खिड़कियों में रोशनियाँ दिखाई नहीं पड़ती थीं। सिर्फ कुश्चिन के घर में, जो एक अस्पताल था, रोशनी हो रही थी। रास्ते में उसे एक भी औरत नहीं मिली। पहले की स्वाभाविकता के स्थान पर अब भयंकर आशंका, थकावट और मायूसी का दौर दौरा था।

अन्त में वे आखिरी खाई पर जा पहुँचे और उन्होंने प–रेजीमेन्ट के एक सिपाही की आवाज सुनी जिसने अपने पहले कम्पनी कमान्डर को पहचान लिया था। तीसरी बटालियन एक दीवाल से चिपटी पड़ी थी। रह रह कर तोपों की चमक से वहाँ उजाला हो उठता था। उसे हल्के स्वर में होने वाले वार्तालाप और बन्दूकों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी।

"रेजीमेन्ट के कमान्डर साहब कहाँ हैं ?" कोजेल्तसोव ने पूछा।

"नाविक सेना के पड़ाव पर, सरकार ! अगर आप चाहें तो मैं आपको पहुँचा दूँ," एक नम्र स्वभाव वाले सिपाही ने कहा।

वह सिपाही कोजेल्तसोव को खाइयों में होकर ले चला और अन्त में वे एक गुफा में पहुँचे जिसमें एक सिपाही बैठा हुआ पाइप

पी रहा था। उसके पीछे एक दरवाजा दिखाई पड़ रहा था जिसकी दरारों में से रोशनी बाहर आ रही थी।

"मैं भीतर जा सकता हूँ ?"

"एक मिनट ठहरिए साहब, मैं आपके आने की इत्तिला कर दूँ," उस मल्लाह ने दरवाजे में घुसते हुए कहा।

दरवाजे के उस पार दो आदमियों के बातें करने की आवाज आ रही थी।

"अगर प्रशा तटस्थ रहता है," उनमें से एक कह रहा था, "आस्ट्रिया भी रहेगा···"

"आस्ट्रिया का क्या सवाल है," दूसरे ने जबाब दिया, "जब स्लाविक प्रदेश······अच्छा, उसे भीतर बुलाओ।"

कोजेल्तसोव इस स्थान पर पहले कभी भी नहीं आया था। वह इसकी शान शौकत और सजावट को देख कर दंग रह गया। फर्श लकड़ी का था, तथा दरवाजे पर एक पर्दा पड़ा था। वहाँ दो पलंग थे, अलग अलग दीवालों के सहारे। एक कोने में सुनहरी चौखटे में जड़ी हुई माता मरियम की पवित्र मूर्ति टंगी हुई थी जिसके सामने गुलाबी काँच का बना तेल का एक लैम्प जल रहा था। एक पलंग पर एक जहाजी-अफसर पूरी पोशाक पहने सो रहा था और दूसरे के पास एक मेज रखे, जिस पर दो शराब की खुली बोतलें रखीं थीं, वे दोनों व्यक्ति बैठे थे जो बातें कर रहे थे। उनमें एक रेजीमेन्ट का नया कमान्डर था और दूसरा एक ए० डी० सी०। कोजेल्तसोव यद्यपि कायर नहीं था और उसने सरकार या रेजीमेन्ट के कमान्डर के प्रति कभी भी कोई अपराध नहीं किया था, फिर भी वह कर्नल को देखकर भयभीत हो उठा और कांपने लगा। यह कर्नल अभी कुछ दिन पहले तक उसका साथी रहा था।

कारण यह था कि उस कर्नल ने बुरी तरह क्रुद्ध होकर उठते हुए उसकी ड्यूटी पर लौटने की बात सुनी। और वह ए० डी० सी० भी वहाँ बैठा हुआ अपनी मुद्रा और दृष्टि से उसे विचलित करने लगा मानो कह रहा हो : "मैं तुम्हारे कमान्डर का मित्र हूं। तुम मेरे पास नहीं आए हो, इसलिए न तो मैं तुमसे विनय की अपेक्षा करता हूं और न चाहता हूँ।" "विचित्र बात है," कोजेल्तसोव ने कमान्डर की तरफ गौर से ताकते हुए सोचा, "इसने रेजीमेन्ट की कमान अभी सिर्फ सात हफ्ते पहले ही सम्हाली है, मगर फिर भी उसकी हर बात में, उसकी पोशाक में, उसकी मुद्रा और दृष्टि में एक रेजीमेन्ट के कमान्डर का गर्व और शक्ति झलकने लगी है। यह शक्ति अवस्था द्वारा, ज्यादा लम्बी नौकरी द्वारा, या सामरिक योग्यता द्वारा इतनी अधिक नहीं आती जितनी कि धन के द्वारा आती है। अभी ज्यादा दिन नहीं बीते हैं," उसने सोचा, "कि यही बेत्रिश्चेव हमारे साथ रंग-रेलियाँ मनाता था, हफ्तों तक सिर्फ एक काली कमीज पहने रहता था और अकेला ही भूखों की तरह गोश्त के टुकड़े और पकौड़े उड़ा जाता था। और अब ! उसकी चौड़ी आस्तीनों वाली कपड़े की जाकेट के नीचे एक कीमती हालैन्ड मार्का कमीज चमक रही है, दस रूबल वाली एक सिगार उसकी उंगलियों में लगी है, और मेज पर छः रूबल वाली 'लाफिते' नामक शराब की बोतल रखी है—और यह सारा सामान सिम्फेरोपोल के क्वार्टरमास्टर से बहुत बड़ी कीमतें देकर खरीदा गया है। और उसके नेत्रों में एक अमीर आभिजात्य वर्गीय व्यक्ति की सी शान्त कठोरता झलकने लगी है जो मानो कह रही हो : "मैं तुम्हारा साथी भले ही हूँ क्योंकि मैं नई पीढ़ी वाला रेजीमेन्ट का कमान्डर हूं मगर इस बात को मत भूलना कि तुम्हें तुम्हारे वेतन का एक तिहाई हिस्सा—साठ रूबल मिलता है जब कि मेरे हाथों से हजारों खर्च

होते रहते हैं। मेरा विश्वास करो, मैं जानता हूँ कि तुम मेरा स्थान पाने के लिए अपने आधे जीवन का बलिदान देने को प्रस्तुत हो जाओगे।"

"तुम बहुत दिनों से अस्पताल में थे," कर्नल ने उदासीन दृष्टि से कोजेल्तसोव की तरफ घूरते हुए कहा।

"मैं बीमार था कर्नल, और अभी मेरा घाव पूरी तरह ठीक नहीं हुआ है।"

"तो तुम्हें आना ही नहीं चाहिए था," कर्नल ने उस अफसर के गठीले शरीर की तरफ अविश्वास पूर्वक देखते हुए कहा। "तुम अपनी ड्यूटी पूरी तरह अदा कर सकोगे?"

"जरूर कर सकूँगा, साहब!"

"अच्छा, मुझे यह सुन कर बड़ी प्रसन्नता हुई, साहब। ऐसी हालत में पताकावाहक जेत्सेव से नवीं कम्पनी की कमान सम्हाल लो जो पहले भी तुम्हारे पास थी। तुम्हें फौरन हुक्म भेज दिया जायेगा।"

"बहुत अच्छा साहब!"

"और जब तुम जाओ तो रेजीमेन्ट के एड्जूटेन्ट को मेरे पास भेजते जाना," एक हल्के से झटके के साथ यह दर्शाते हुए कि मुलाकात खत्म हो गई, कर्नल ने कहा।

वहाँ से चलते हुए कोजेल्तसोव अपने आप कुछ बड़बड़ाया और उसने अपने कन्धे इस तरह उचकाये मानो किसी बात से उनमें दर्द हो रहा हो या वह असुविधा अनुभव कर रहा हो। लेकिन वह उस कमान्डर से नाराज नहीं था (नाराज होने का कोई कारण भी नहीं था) बल्कि स्वयं अपने से नाराज था और ऐसा लगा कि वह अपने चारों तरफ छाई हरेक चीज से नाराज हो उठा हो।

अन्य सारे सम्बन्धों की तरह जो कानून, व्यवस्था और सहकारिता की भावना द्वारा स्थापित किए जाते हैं, आज्ञा पालन केवल उसी स्थिति में उचित समझा जाता है जब कि—यह बात दूसरी है कि वे आपसी समझौते द्वारा आवश्यक मान लिए गए हों—अधीन कर्मचारी यह स्वीकार कर लेता है कि उसके ऊपर काम करने वाले अधिकारी अनुभव, सामरिक योग्यता या केवल चारित्रिक दृष्टि से उससे श्रेष्ठ हैं लेकिन जैसे ही व्यवस्था का आधार, जैसा कि प्राय: हम लोगों में होता है, दैवाधीन या आर्थिक सम्पन्नता बन जाता है तो आज्ञा पालन की भावना सदैव उद्दंडता या गुप्त द्वेष और घृणा का स्वरूप धारण कर लेती है और परिणाम यह होता है कि अनेकत्व में एकत्व का सङ्गठन कर उससे लाभ उठाने के स्थान पर हानि की सम्भावना ही अधिक रहती है। वह व्यक्ति जो यह अनुभव नहीं करता कि वह अपने स्वाभाविक गुणों के बल पर सम्मान प्राप्त कर सकता है अपने सहकारियों के साथ घनिष्ठता रखने में भयभीत रहता है और अपने महत्व का प्रदर्शन कर आलोचना से बचना चाहता है। और सहकारी, उसका यह बाहरी और अपमान करने वाला रूप देख कर, अधिकाँशत: उससे किसी शुभ परिणाम की आशा नहीं करते।

## १६

अपने साथी अफसरों से मिलने से पहले, कोज़ेल्तसोव अपनी कम्पनी का कुशल-क्षेम पूछने और यह देखने कि वह कहाँ तैनात है, चल दिया। मिट्टी की खचियों से बनी मोर्चे की दीवालें, खाइयों की कतारें, वह तोप जो उसे रास्ते में मिली थी और यहाँ तक कि वे बम और उनके इधर उधर बिखरे हुए टुकड़े जिनसे उसने ठोकरें खाईं और जो सब तोप चलने की चमक से बराबर

प्रकाशित हो रहीं थीं, आदि सभी वस्तुएँ उसके लिए चिर-परिचित थीं। यह सब तीन महीने पहिले उसकी स्मृति पर छाई रहती थीं जब उसने लगातार दो हफ्ते इसी मोर्चे पर बिताए थे। और यद्यपि इन सारी स्मृतियों में बहुत कुछ भयङ्करता भरी हुई थी फिर भी वे उसके सम्मुख बीते हुए दिनों के प्रति एक विशेष मोह उत्पन्न कर रहीं थीं। उसने उन परिचित स्थानों और वस्तुओं को प्रसन्नता के साथ पहचाना मानो कि उन दो हफ्तों का समय, जो उसने यहाँ बिताया था, सचमुच आनन्द का समय था। वह कम्पनी छठवें मोर्चे की रक्षा करने वाली दीवाल के सहारे तैनात थी।

कोजेल्तसोव एक लम्बे सुरक्षा-गृह में घुसा, जो प्रवेश द्वार पर पूरी तरह खुला हुआ था। उसे बताया गया कि वहाँ नवीं कम्पनी रहती थी। वह स्थान इतना ठसाठस भरा हुआ था कि उसमें एक पग रखने को भी स्थान नहीं था। एक तरफ एक टेढ़ी मोमबत्ती टिमटिमा रही थी जिसे फर्श पर लेटा हुआ एक सिपाही थामे था। एक दूसरा सिपाही एक किताब मोमबत्ती के पास रखे, अटक-अटक कर पढ़ रहा था। उस दुर्गंध से भरे अंधेरे कमरे में अनेक खोपड़ियाँ ऊपर को उठी हुईं गौर से उस पढ़ने वाले की बातें सुन रहीं थी। कोजेल्तसोव ने निम्नलिखित वाक्य सुने :

"मौत...का...डर...मनुष्य...में...स्वा...भाविक होता...है।"

"मोमबत्ती का गुल झाड़ दो," एक आवाज आई। "यह बहुत अच्छी किताब है!"

"मेरे...भगवान..." पढ़ने वाले ने आगे पढ़ा।

कोजेल्तसोव ने जब सार्जेन्ट-मेजर के विषय में पूछा तो पढ़ने वाला खामोश हो गया और सिपाही लोग कसमसाने, खाँसने और नाक

साफ करने लगे जैसा कि लोग गहरी खामोशी के बाद प्रायः किया करते हैं। सार्जेन्ट-मेजर, कोट के बटन बन्द करता हुआ, पढ़ने वाले को घेर कर बैठे हुए झुन्ड में से उठा और कुछ लोगों के पैरों को कुचलता जो जगह की कमी के कारण उन्हें हटाने में असमर्थ थे, तथा कुछ को लांघता हुआ अफसर के पास आया।

"कैसे हाल-चाल हैं, भाई! क्या यह सब अपनी ही कम्पनी है?

"भगवान आपको सुरक्षित रखे! आपका स्वागत है, सरकार!" सार्जेन्ट-मेजर ने स्नेह और सम्मान के साथ कोजेल्तसोव की तरफ देखते हुए कहा। "अब आप ठीक हैं, सरकार? भगवान को धन्यवाद देना चाहिए। हमें आपकी बड़ी याद आती थी।"

यह जाहिर था कि कोजेल्तसोव अपनी कम्पनी में बहुत लोक प्रिय था।

सुरक्षा-गृह के भीतरी हिस्से में आवाजें सुनाई दीं: "हमारे पुराने कमान्डर वापस आ गए हैं; वही जो घायल हो गये थे; कोजेल्तसोव; मिखायल सेमियोनिच," आदि। कुछ उसके पास भी आ खड़े हुए और वह ढोल बजाने वाला उसका स्वागत करने आगे बढ़ा।

"हलो, ओबान्युक!" कोजेल्तसोव बोला,। "अब भी जिन्दा हो और बजाये जा रहे हो? कहो जवानो!" उसने अपनी आवाज को ऊंचा करते हुये फिर कहा।

"भगवान आपका भला करे!" पूरा सुरक्षा-गृह प्रत्युत्तर में गूँज उठा।

"कैसे हो, साथियो?"

"बुरा हाल है, हुजूर। फ्रांसीसी तो हमें परेशान किये दे रहे हैं। वे अपनी खाइयों के पीछे छिपे हम पर आग बरसाते रहते हैं—मगर खुले में आने की उनकी हिम्मत नहीं होती।

"अच्छा, कोई बात नहीं। शायद मैं तुम्हारे लिए सौभाग्य लेकर ही लौटा हूँ और भगवान करेगा तो वे खुले में आ जायेंगे, जवानो!" कोजेल्तसोव बोला। "यह पहला मौका तो होगा नहीं जब हम उससे मोर्चा लेंगे है। हम उन्हें फिर एक अच्छा सा इनाम देंगे।"

"हम अपनी शक्ति भर मुकाबला करके खुश होंगे, हुजूर!" कई आवाजें आईं।

"वह बड़े बहादुर हैं, हमारे सरकार बड़े बहादुर हैं," ढोल बजाने वाले ने धीमे मगर इतने ऊंचे स्वर में कहा कि सब सुन लें और कहते समय वह एक दूसरे सिपाही की तरफ मुड़ा मानो कम्पनी कमान्डर ने जो कहा था उसकी ताईद कर रहा हो और उस सिपाही को विश्वास दिला रहा हो कि इस बात में जरा भी डींग या अनहोनी बात नहीं है।

सिपाहियों को छोड़कर कोजेल्तसोव सुरक्षा-बैरक की तरफ गया जहाँ उसके साथी अफसर रहते थे।

## १७

वह लम्बा चौड़ा कमरा सब तरह के अफसरों से भरा हुआ था: जहाजी, तोपखाने के और पैदल सेना के अफसरों से। कुछ सो रहे थे, कुछ बक्सों और किले की तोप की गाड़ी पर बैठे हुए बातें कर रहे थे और कुछ भूमिगृह के उस पार जमीन पर दो बुरका बिछाये शराब पी रहे थे और ताश खेल रहे थे। इस झुण्ड में सबसे ज्यादा आदमी थे और सबसे ज्यादा शोर हो रहा था।

"ओह! कोजेल्तसोव आ गया। कोजेल्तसोव। खुशी की बात है कि तुम आ गए। बहुत अच्छे! अब घाव कैसा है?" चारों तरफ से

आवाजें आईं। यहाँ भी वह स्पष्ट हो रहा था उसे सब पसन्द करते थे और इस बात से खुश थे कि वह वापस आ गया है।

अपने परिचितों से हाथ मिला कर कोजेल्तसोव उन शोर मचाने वाले अफसरों के झुण्ड में जा मिला जो ताश खेल रहे थे और लगभग सभी उसके साथी थे। एक सुन्दर, दुबला पतला साँवले रंग का व्यक्ति जिसकी नाक लम्बी और पतली, मूछें घनी और फूली हुई और गलमुच्छे थे, अपनी सुन्दर, सफेद उंगलियों से, जिनमें से एक में वह एक बड़ी सी अधिकार चिन्ह वाली, सोने की अंगूठी पहने था, ताश बाँट रहा था। वह ताश जल्दी-जल्दी और लापरवाही से बाँट रहा था। और स्पष्ट रूप से किसी बात से परेशान नजर आ रहा था मगर ऐसा भाव दिखा रहा था मानो उसे कोई चिन्ता नहीं। उसके पास, दाहिनी तरफ भूरे बालों वाला एक मेजर कुहनी टेके लेटा हुआ था। उसने ज्यादा शराब पी रखी थी। वह बनावटी शान्ति के साथ आधा रूबल की चाल चल रहा था और तुरन्त भुगतान भी करता जाता था। बांयी तरफ पसीने से भरे चेहरे और लाल खापड़ी वाला एक अफसर पालथी मार कर बैठा हुआ हंस रहा था और जब कभी उसका पत्ता पिट जाता था तो बनावटी हंसी हंसने लगता था। वह एक हाथ से बराबर अपनी पतलून की जेब टटोल रहा था, ऊँचे दाँव लगा रहा था मगर चाल नकद नहीं चल रहा था और यही बात उस साँवले सुन्दर व्यक्ति को परेशान कर रही थी। एक दुबला-पतला, पीले चेहरे वाला गंजा मुछमुन्डा अफसर, जिसका मुंह बड़ा और कठोर था, हाथ में नोटों की एक बड़ी सी गड्डी थामे कमरे में इधर से उधर घूम रहा था और रह रह कर दांव लगा देता था और हमेशा जीत जाता था।

कोजेल्तसोव ने थोड़ी सी वोदका पी और खिलाड़ियों के पास बैठ गया।

'तुम भी खेलो, मिखायल सेमियोनिच ?" खजांची ने उसे आमंत्रित किया। "तुम तो ढेर सारा धन लाए होगे, क्यों ?"

"मुझे पैसा कहाँ से मिल सकता था भाई ? इसके विपरीत मैं तो सब कुछ शहर में ही खर्च कर आया।"

"यह कैसे हो सकता है ? सिम्फेरोपोल में तुमने जरूर किसी न किसी को मूंड़ा होगा।"

"ज्यादा नहीं, विश्वास मानो," कोजेल्तसोव ने जवाब दिया मगर जाहिर था कि वह यह चाहता था कि उसकी बात पर विश्वास न किया जाय और यह कहते हुए उसने कोट के बटन खोले और मैले से ताश के पत्ते निकाले।

"शायद मैं भी भाग्य आजमाऊँ। यह कभी भी पता नहीं चलता कि शैतान क्या चाल चलने वाला है। यहाँ तक कि एक मच्छर भी कोई अनहोनी घटना घटा सकता है। फिर भी मैं हिम्मत बांधने के लिए थोड़ी सी शराब पी लूँ।"

और फौरन ही तीन गिलास वोदका और कई पोर्टर के पीकर वह इस लायक हो गया कि साथियों का साथ अच्छी तरह दे सके। मतलब यह है कि वह अपने अन्तिम तीनों रुबलों को हारने के लिए तैयार हो गया।

उस पसीने से डूबे हुए अफसर पर डेढ़ सौ रुबल चढ़ गए थे।

"तकदीर साथ नहीं दे रही" उसने उदास होकर दूसरे ताश की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"देखो चुका देना," खंजाची ने ताश बांटने से रुकते और उसके चेहरे की तरफ कड़ी निगाह से घूरते हुए कहा।

"कल तक की मोहलत दे दो," उस अफसर ने उठते हुए और अपनी खाली जेबों को काँपते हाथों से टटलते हुए जबाब दिया।

"हुँ !" गुस्से के साथ दाहिने बाँये ताश बाँटता हुआ खजांची घुर्राया। "नही ! ऐसे काम नही चलेगा !" उसने पत्तों को नीचे रखते हुए कहा। "मै खेल बन्द कर दूंगा। यह ठीक बात नही जखार इवानिच ! हम लोग नकद खेल रहे थे, उधार नही।"

"क्या ? क्या तुम्हे शक है कि मै चुकाऊँगा नही ? अजीब बात है।"

"मुझे मेरा पैसा कौन देगा," मेजर बड़बड़ाया जो इस समय तक नशे में धुत्त हो चुका था और लगभग आठ रूबल जीत रहा था। "मै बीस रूबल से ज्यादा हार चुका मगर जब जीतता हूँ तब कुछ भी नही मिलता।"

"जब रुपया जमा नही है तो मैं कहाँ से दे दूँ," खजांची ने आपत्ति की।

"इससे मुझे कोई मतलब नही !" फर्श पर से उठते हुए मेजर चीखा। "मै तुम्हारे साथ खेल रहा हूं, भले आदमियों के साथ, उसके साथ नही।"

पसीने से नहाया हुआ अफसर एकाएक उत्तेजित हो उठा।

"मैंने कहा न कि कल दे दूंगा। तुम मुझसे इस बदतमीजी के साथ बात करने की हिम्मत कैसे करते हो ?"

"मेरा जैसा मिजाज चाहेगा वैसे करूंगा। ईमानदार लोग ऐसे काम नहीं करते, मैं यही कहता हूं !" मेजर ने चीख कर जबाब दिया।

"अब रहने दो, फ्योदोर फ्योदोरिच !" मेजर को रोकते हुए वहाँ उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति चिल्ला उठा। "मामला खत्म करो !"

ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मेजर जैसे सिर्फ इसी बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि सब लोग उससे शान्त होने के लिए कहें और वह और भी ज्यादा जोश दिखाए। वह एकाएक उछला और लड़खड़ाता हुआ उस अफसर की तरफ बढ़ा।

"बदतमीज हूं, मैं ? यहाँ बड़ा कौन है ? तुम या मैं ? मैंने जार की बीस साल सेवा की है ! बदतमीज ? नीच कहीं के !" अपने ही स्वर से और भी ज्यादा उत्तेजित होते हुए वह जोर से चीख उठा। "बुजदिल !"

लेकिन इस गन्दे दृश्य पर पर्दा डाल देने दो। कल, या शायद आज ही रात को, इन लोगों में से प्रत्येक प्रसन्नता और गर्व के साथ मौत की तरफ बढ़ रहा होगा और शान्त होकर दृढ़ता के साथ मौत का दामन चूम लेगा। सबसे शान्त कल्पनाओं में भी भयभीत कर देने वाली इन अमानुषिक और निराश परिस्थितियों में जीवन का केवल एक ही सन्तोष प्राप्त होता है और वह सन्तोष है विस्मृति, अथवा चेतना का लोप हो जाना। प्रत्येक मनुष्य की आत्मा की भीतरी तह में वह प्रेरणा छिपी रहती है जो उसे एक 'हीरो' बना देती है। लेकिन यह प्रेरणा सदैव क्रियमाण नहीं रहती। जब उचित मनोवैज्ञानिक अवसर उपस्थित होता है तो यह चिनगारी एक अग्निशिखा में परिवर्तित होकर महान कार्य करने की प्रेरणा देती है।

## १८

दूसरे दिन बमबारी पहले दिन की ही तरह तेज होती रही। सुबह लगभग ग्यारह बजे वोलोदिया कोजेल्तसोव तोपखाने के कुछ अफसर के साथ बैठा हुआ था और उनके साथ रहने का अभ्यस्त हो जाने के

कारण नए आने वालों को गौर से देख रहा था, सवाल पूछ रहा था और अपने अनुभवों को बता रहा था। उसे तोपखाने के अफसरों की सीधी सादी बातें अच्छी लगीं जो वैज्ञानिक ढङ्ग की सी थीं और इससे वह उनका सम्मान करने लगा। साथ ही वे अफसर भी उस शर्मीले, भोले और सुन्दर पताकावाहक को पसन्द करने लगे थे। तोपखाने का सबसे सीनियर अफसर एक ठिगना और लाल बालों वाला कप्तान था। उसके बाल छोटे और गलमुच्छे चिकने थे और वह पुराने ढर्रे के तोपखाने के अफसरों की शिक्षा पाए हुए था। वह औरतों में ज्यादा उठने-बैठने वाला आदमी था और विद्वान के रूप में प्रसिद्ध था। उसने वोलोदिया के तोपखाना और नवीनतम आविष्कारों सम्बंधी ज्ञान की परीक्षा ली, उसे उसके सुन्दर चेहरे और कच्ची उमर के लिए छेड़ा और साधारणतः उसके साथ एक पिता का सा व्यवहार किया जिससे वोलोदिया बहुत प्रसन्न हुआ। सब-लेफ्टीनेंट दयादेन्को, फटा हुआ कोट और बिखरे बालों वाला एक नौजवान अफसर जो 'ओ' शब्द का उच्चारण बहुत लम्बा खींचकर करता था और जिसके बोलने में यूक्रेन वासियों का सा लहजा आ जाता था, जोर जोर से और बराबर बोले जा रहा था। वह बेकार की बहस करने का मौका ढूँढ़ता रहता था और जंगलियों की तरह हाथ पैर फटकारता था। फिर भी वोलोदिया को वह पसन्द आया क्योंकि वोलोदिया ने उसके इस बाहरी उजड्ड व्यवहार के नीचे छिपी हुई उस व्यक्ति की अत्यधिक दयालुता और ईमानदारी का आभास पा लिया था। दयादेन्को बराबर वोलोदिया की मदद करने को प्रस्तुत रहता और सारे समय उसके सामने यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता रहता कि सेवास्तोपोल में लगी हुई सारी तोपें नियमों के विरुद्ध लगाई गई हैं। उस समूह में वोलोदिया को सिर्फ एक ही आदमी पसन्द नहीं आया, वह था लेफ्टीनेन्ट शेरनोवित्स्की। इस व्यक्ति की भौंहें

चढ़ी रहती थीं। वह एक ऐसा कोट पहने था जो नया तो नहीं था मगर साफ और ढंग से सिला हुआ था। उसकी साटन की वास्कट में एक सुनहली जंजीर लटकती रहती थी। यद्यपि वह व्यक्ति औरों की अपेक्षा वोलोदिया से अधिक नम्रता के साथ पेश आता था। वह बराबर पूछता रहता कि महाराजाधिराज और युद्ध मन्त्री क्या कर रहे थे और फिर उसे बड़े जोश के साथ वीरता की उन घटनाओं के विषय में सुनाता जो सेवास्तोपोल में घटी थीं, साधारणतः दिखाई पड़ने वाली देशभक्ति की निन्दा करता, मूर्खता से भरी हुई आज्ञाओं की आलोचना करता आदि। और इस तरह कुल मिला कर यथेष्ठ अध्ययन, ज्ञान, बौद्धिक कुशाग्रता और पवित्र भावनाओं का प्रदर्शन करता परन्तु न जाने क्यों वोलोदिया को उसकी ये सब बातें बनावटी सी लगतीं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उसने इस बात पर गौर किया था कि दूसरे अफसर शेरनोवित्स्की से बहुत कम बात करते थे। कैडेट व्लांग भी, जिसे उसने पिछली रात को खाट पर से हटा दिया, वहीं था। उसने इन सब बातों में कोई भाग नहीं लिया बल्कि चुपचाप एक कोने में बैठा रहा। जब कोई हंसी की बात कही जाती तो वह हंसने लगता, जब कोई बात भूल जाता तो याददाश्त पर जोर देता, वोदका लाने का हुक्म देता और सारे अफसरों के लिए सिगरेटें बनाता। यह वोलोदिया की नम्रता और उदारता थी कि व्लांग उसे अफसर मानकर ही उसके साथ पेश आता था न कि उसे एक छोकरा समझ कर बदतमीजी से पेश आता, या उसकी सुन्दरता थी जिसने 'व्लांगा'— जैसे कि उसके साथी उसे पुकारते थे—को प्रभावित कर रखा था। व्लांग अपने नाम को इस तरह स्त्रीलिंग के रूप में पुकारा जाना पसन्द नहीं करता था। असलियत यह थी कि वह अपनी बड़ी बड़ी, कोमल, बैलों जैसी मूर्खतापूर्ण आँखों को उस नये अफसर के

चेहरे पर से हटाने में अपने को असमर्थ पाता था। वह उससे अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं की तृप्ति की आशा करने लगा था और पूरे समय प्रेमानन्द में मग्न रहता था। अफसरों ने इस बात को भाँप लिया था इसलिए उसे और भी बढ़ावा दिया।

खाने के समय से ठीक पहले बुर्ज पर तैनात लेफ्टीनेन्ट-कप्तान को ड्यूटी से छुट्टी मिली और वह कम्पनी में आ गया। लेफ्टीनेन्ट-कप्तान क्राउत एक सुन्दर बालों वाला, खूबसूरत और खुशमिजाज अफसर था। उसकी मूंछें लाल थीं और गालों पर गलमुच्छे थे। वह बिल्कुल साफ रूसी बोलता था, ऐसी साफ जो एक रूसी के लिए भी अत्यधिक अलंकृत और शुद्ध होती। अपनी नौकरी और साधारण जीवन में भी वह उतना ही पूर्ण था जितना कि अपनी रूसी भाषा में। वह अपनी ड्यूटी बहुत अच्छी तरह अदा करता था, एक अच्छा साथी था और रुपये-पैसे के मामले में बहुत ही विश्वास-पात्र था; मगर विशेष रूप से इसलिये कि उसकी सब बातें पूर्ण रूप से ठीक थीं फिर भी एक स्पष्ट और सीधा व्यक्ति होने के कारण उसमें कुछ कमी भी थी। अन्य सभी रूसी–जर्मनों की तरह वह जर्मनी के आदर्श जर्मनों के विपरीत कुछ सीमा तक व्यावहारिक अधिक था।

"यह हमारा हीरो आया!" कप्तान ने कहा जब क्राउत हाथ हिलाता और एड़ियाँ खटखटाता हुआ कमरे में भीतर घुसा। "क्या पीओगे, फ्रेडरिच क्रिस्तियानिच, चाय या वोदका ?"

"मैं चाय लाने का हुक्म दे चुका हूँ," उसने जबाब दिया, "मगर तब तक तुम लोगों को खुश करने के लिए थोड़ी सी वोदका नुकसान नहीं करेगी। तुम से मिल कर बहुत खुशी हुई। मैं आशा करता हूं कि हम लोग दोस्त बन जायेंगे," उसने वोलोदिया से कहा जब

वोलोदिया ने उठकर उसे सलाम की। "लेफ्टीनेन्ट—कप्तान क्राउत। मोर्च पर सार्जेन्ट—मेजर ने मुझे बताया था कि तुम कल आ गए थे।"

"जी हाँ, और आपका बिस्तर इस्तैमाल करने के लिये धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं रात को उस पर सोया था।"

"उम्मीद है कि आराम से सोये होंगे। उसका एक पाया टूटा हुआ है मगर कोई ठीक करने वाला ही नही है—घेरे की हालत जो है, तुम जानते ही हो, उसे सहारे से खड़ा करना पड़ा है।"

"तुम्हारी रात की ड्यूटी तो ठीक रही?" द्यादेन्को ने पूछा।

"बुरी तो नही रही, सिर्फ स्क्वोरत्सोव घायल हो गया था और कल तोप की एक गाड़ी में गोला लगा था। उसके टुकड़े-टुकड़े उड़ गए थे।"

वह खड़ा हो गया और कमरे में इधर से उधर घूमने लगा। स्पष्टतः वह उस व्यक्ति की प्रसन्न मुद्रा में था जो खतरे से अछूना बच कर निकल आया हो।

"अच्छा, द्मित्री गाब्रीलिच," उसने कप्तान के घुटने को हिलाते हुए कहा, "तुम्हारा क्या हाल है, भाई? अभी तक तुम्हारी तरक्की की कोई खबर नहीं आई?"

"नहीं, अभी तक कुछ भी नहीं हुआ?"

"और न होगी," द्यादेन्को बीच में बोल उठा, "मैंने कहा था नहीं होगी।"

"क्यों नहीं होगी?"

"क्योंकि उस खत में ठीक-ठीक शब्द नही लिखे गये थे।"

"ओह, बातून!" क्राउत ने प्रसन्नता से मुस्कराते हुए कहा। "तुम सचमुच एक पक्के अक्खड़ यूक्रेन निवासी हो। कुढ़ाने के लिए कह रहा हूँ, तुम लेफ्टीनेन्ट हो जाओगे।"

"नही, नही होऊँगा।"

"ओह, व्लाग ! मेरा पाइप ले जाओ और भर लाओ," उसने उस कैडेट से कहा जो उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए उत्सुकता के साथ उठ खडा हुआ।

क्राउत ने बमबारी के अपने किस्से सुना कर और उसकी गैरहाजिरी में जो कुछ वहाँ हुआ था उसके विषय में प्रश्न कर उस समूह में जान सी डाल दी। उसके पास हरेक से कहने के लिए कुछ न कुछ बात थी।

## १६

"कहो, तुम्हे यहाँ कैसा लगा ?" क्राउत ने वोलोदिया से पूछा। "क्षमा करना, तुम्हारा अपना और खान्दानी नाम क्या है ? तुम जानते हो कि यह यहाँ का रिवाज है। तुम्हे अपने लिए घोड़ा मिला ?"

"नही," वोलोदिया बोला, "और मेरी समझ में नही आता कि क्या करूँ। मैंने कप्तान से कह दिया था कि मेरे पास घोडा नही है और तब तक मेरे पास पैसा भी नही होगा जब तक कि मुझे सफर का और चारे का भत्ता नही मिल जायेगा। मैं यह चाहता हूँ कि तोपखाने के कमान्डर से कहू कि तब तक के लिए मुझे एक घोड़ा दे दे मगर मुझे डर है कि वह इन्कार कर देगा।"

"कौन, एपोलोन सर्जीइच ?" उसने अपने होठो से ऐसी आवाज निकाली जिसमें सन्देह की ध्वनि थी और कप्तान की तरफ प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा। "मुझे शक है।"

"और अगर उसने इन्कार भी कर दिया तो भी कोई बात नही है," कप्तान बोला, "दरअसल तुम्हे यहाँ घोड़े सी जरूरत ही नही

है मगर कोशिश करने में कोई नुकसान नहीं । मैं आज उससे कहूँगा ।"

"क्या कहा ? तुम उसको नहीं जानते," दूयादेन्का ने टोका, "वह और सब चीजों के लिए इन्कार कर सकता है मगर इसके लिए नहीं···शर्त बद लो ?"

"ओह, तुम हमेशा बहस करते हो !"

"मैं बहस उस बात पर करता हूं जिसे जानता हूं। और मामलों में वह मक्खीचूस है मगर घोड़ा जरूर उधार दे देगा क्योंकि इससे उसे लाभ ही होगा ।"

"लाभ ही होगा, इस बात से तुम्हारा क्या मतलब जब कि उसे जौ के लिए आठ रूबल भी देने होंगे ?" क्राउत ने कहा, "एक ज्यादा घोड़ा न रखने से उसे लाभ होगा ।"

"उससे कहना कि स्कवोरेत्स घोड़े को दे दे, ब्लादीमीर सेमियो-निच !" क्राउत का पाइप लेकर आते हुए व्लांग ने वोलोदिया से कहा, "वह बहुत अच्छा घोड़ा है !"

"वह, जो सोरोकी में तुम्हें लेकर खाई में गिर पड़ा था, क्यों, व्लांग ?" लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने चटकारी भरते हुए कहा ।

"तुम यह कैसे कहते हो कि जौ की कीमत आठ रूबल होगी जब कि उसके पास साढ़े दस की रसीदें हैं," दूयादेन्को ने जोर देते हुए कहा, "बेशक उसे लाभ होगा ।"

"और उसे थोड़ा सा ज्यादा क्यों नहीं मिलना चाहिए ? अगर तुम एक तोपखाने के कमान्डर होते तो क्या एक आदमी को शहर जाने के लिए एक घोड़ा भी नहीं लेने देते ?"

"जब मैं तोपखाने का कमान्डर बन जाऊँगा, तो प्यारे, मेरे घोड़ों में हरेक को चार बोरी जौ मिला करेगा। मैं बचाऊँगा नहीं, फिकर मत करो।"

"इन्तजार करो और देखो," लेफ्टीनेन्ट कप्तान ने कहा। "तुम थोड़ा सा ही बचाओगे और जब वह तोपखाने का कमान्डर बचायेगा तो बची हुई रकम को भी जेब के हवाले कर लेगा," उसने वोलोदिया की तरफ इशारा करते हुए आगे कहा।

"मगर क्यों, फ्रेडरिच क्रेस्तियानिच, क्या तुम यह सोचते हो कि वह पैसा बचाना चाहेगा ?" शेरनोवित्स्की ने टोकते हुए कहा, "शायद वह अमीर है; ऐसी हालत में वह पैसा बचाना क्यों चाहेगा ?"

"ओह नहीं, साहब, मैं...क्षमा करना, कप्तान," शर्म से लाल पड़ते हुए वोलोदिया कह उठा, "मेरे ख्याल में यह बेईमानी है।"

"ओह भोले बच्चे !" क्राउत बोला, "ठहरो जब तक कि कप्तान न बन जाओ। तब तुम इस तरह की बातें नहीं करोगे।"

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं बस इतना ही जानता हूँ कि अगर पैसा मेरा नहीं है तो मुझे उसे लेने का कोई हक नहीं है।"

"मैं तुम्हें इस बात को बताऊँगा, नौजवान," लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने गम्भीर स्वर से कहना प्रारम्भ किया। "शान्ति के समय में जब तुम एक तोपखाने के कमान्डर होते हो और अगर ठीक तरह से काम चलाते हो तो हमेशा तुम्हारे पास पाँच सौ रूबल बच रहते हैं। लड़ाई के जमाने में इसकी संख्या सात या आठ हजार से कम नहीं रहती। और यह बचत सिर्फ घोड़ों पर ही होती है। अच्छा, ठीक ! तोपखाने के कमान्डर को सिपाहियों के भोजन आदि से कोई मतलब नहीं रहता। यह प्रथा बहुत पुराने जमाने से तोपखानों

में चली आ रही है। अगर तुम्हें ठीक तरह से इन्तजाम करना नही आता तो तुम एक फूटी कौड़ी भी नहीं बचा सकते। अब देखो: तुम्हें नाल जड़वाने के लिए अपनी जेब से पैसा देना पड़ेगा—यह हुआ एक" (उसने एक उंगली मोड़ ली), "और दबाई के लिए—दो" (उसने दूसरी उंगली मोड़ी) "और कागज वगैरह के लिए तीन; तुम्हारे बेकार घोड़ों की कीमत पाँच सौ फी घोड़ा होती है, भाई, मगर उन्हें फिर से ठीक करवाने की कीमत पचास रूबल है और तुम्हें वे ठीक करवाने ही पड़ेंगे—यह हुआ चार। तुम्हें अपने आदमियों के कॉलर बदलवाने पड़ेंगे—यह भी अपनी ही जेब से—कोयले के लिए तुम्हें अन्दाज से ज्यादा देना पड़ेगा और फिर अफसरों का मेस भी है। तोपखाने का कमान्डर होने के नाते तुम्हें ढंग से रहना पड़ेगा: तुम्हें एक गाड़ी की, एक बालों वाले कोट की और अन्य प्रकार की दर्जनों चीजों की जरूरत पड़ेगी आदि···ज्यादा बात करने से क्या फायदा।"

"और सबसे खास बात यह है, व्लादीमीर सेमियोनिच," कप्तान ने कहा जो इस पूरे समय तक खामोश रहा था: "मिसाल के लिए जैसे उस आदमी को ही ले लो जो दो सौ रूबल की तनख्वाह पर बीस साल नौकरी करता रहा है और हमेशा फटेहाल रहा है। अपनी सेवाओं के बदले क्या उसे इतना भी अधिकार नहीं है कि अपने बुढ़ापे की रोटियों के लिए थोड़ा सा बचा कर रखे जब कि ठेकेदार लोग एक हफ्ते में लाखों कमा लेते हैं?"

"बहस करने से क्या लाभ," लेफ्टीनेन्ट-कप्तान ने फिर टोकते हुए कहा। "अपनी राय कायम करने में जल्दी मत करो। तब तक इन्तजार करो जब तक कि नौकरी का थोड़ा सा अनुभव न कर लो।"

वोलोदिया इस तरह बिना सोचे समझे बोल पड़ने के कारण बुरी तरह शर्मिन्दा और परेशान हो उठा और कुछ बुदबुदाता हुआ चुपचाप द्यादेन्को की बहस को सुनने लगा जो उत्तेजित होकर इसके विपरीत सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा था।

इस वाद-विवाद में कर्नल के अर्दली के आने से विघ्न पड़ गया जिसने आकर घोषणा की कि भोजन परोसा जा चुका है।

"एयोलोन सर्जीइच से कहना कि आज शराब की एक बोतल रख दें," शेरनोबित्स्की ने कोट के बटन बन्द करते हुए कप्तान से कहा। "वह उसे छिपा कर क्यों रखे हुए है? अगर हम लोग मारे गए तो उसे कोई भी नहीं पी पायेगा।"

"तुम खुद कह दो," कप्तान ने गुस्से में भर कर जबाब दिया।

"नहीं, तुम सीनियर अफसर हो: हमें हर मामले में नियम का पालन करना चाहिए।"

## २०

उसी कमरे में, जिसमें एक दिन पहले वोलोदिया कर्नल से मिला था, मेज को दीवाल से हटा कर एक मैले मेजपोश से ढक दिया गया था। इस समय तोपखाने के कमान्डर ने उससे हाथ मिलाया और उससे पीतर्सबर्ग और उसकी यात्रा के विषय में पूछा।

"अच्छा, सज्जनो, जो वोद्का पीते हों, कृपया प्रारम्भ कर दें। पताकावाहक शराब नहीं पिया करते," उसने मुस्करा कर वोलोदिया की तरफ देखते हुए कहा।

कमान्डर, जैसा कि पहले दिन लगा था तनिक भी कठोर और नीरस नहीं था। इसके बिपरीत वह एक बिनम्र तथा

खातिरपसन्द मेजवान और बड़े भाई की तरह व्यवहार कर रहा था। फिर भी, सारे अफसर, बड़े कप्तान से लेकर बातून द्यादेन्को तक, वार्तालाप में प्रदर्शित अपनी विनम्रता और कमान्डर की ओर देखने के ढंग से यह प्रकट कर रहे थे कि वे सब उससे भय खाते थे। वे डरते हुए से, एक एक कर, दीवाल से सटे हुऐ अपना अपना वोदका का गिलास लेने के लिए आगे बढ़ने लगे।

भोजन में गोबी के शोरवे से भरा एक बड़ा प्याला था जिसमें गोश्त के बड़े बड़े टुकड़े, काली मिर्च और तेजपत्ते तैर रहे थे। इसके अलावा सरसों के साथ पकी हुई एक विशेष प्रकार की सब्जी और बदबूदार मक्खन में तला हुआ 'कोल्दनी' नामक एक खाद्य पदार्थ और था। सामने लगाने वाले तौलिया ( नेपकिन्स ) नही थे, चम्मच टीन या लड़की के थे, गिलास सिर्फ दो ही थे और मेज पर सिर्फ एक ही बोतल रखी हुई थी जिसका कांच भूरा और गर्दन चपटी थी। इसमें पानी भरा हुआ था। मगर भोजन के समय नीरसता नही रही, बातें क्षरण भर को भी बन्द नहीं हुईं। पहले उन्होने 'इन्करमान' के युद्ध पर बातें कीं जिसमें तोपखाने ने भाग लिया था। हरेक ने अपने अनुभव सुनाए और असफलता के कारणों पर प्रकाश डालते हुए अपनी अपनी राय जाहिर की। अन्त में कमान्डर ने बोलना शुरू किया। इसके बाद बातें स्वाभाविक रूप से हल्की तोपों की शक्ति, और हल्के बजन वाली नई बन्दूकों की तरफ मुड़ गई जिससे वोलोदिया को तोपखाने विषयक अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर मिल गया। परन्तु किसी ने भी सेवास्तोपोल की वर्तमान भयंकर अवस्था के विषय में एक बात भी नही की जैसे कि प्रत्येक इस विषय पर बहुत अधिक मनन कर चुका था इसलिए इस पर बातें करने से कतराता था। वोलोदिया को यह देखकर बड़ा आश्चर्य और निराशा हुई कि किसी ने भी

अपने कर्त्तव्य के प्रति एक शब्द भी नहीं कहा और इस बात से हरेक यह सोच सकता था कि वह इतना लम्बा रास्ता तय कर के सेवास्तोपोल क्या केवल इसीलिए आया था कि यहाँ हल्की तोपों के विषय में बातें करे और तोपखाने के कमान्डर के साथ खाना खाये। भोजन के समय मकान के पास एक बम आकर गिरा। फर्श और दीवालें ऐसे कांप उठीं जैसे धरती हिली हो और खिड़की के सामने धुंए का एक बादल उठने लगा।

"मेरा ख्याल है कि पीतर्सवर्ग में तो तुम्हें यह चीजें देखने को नहीं मिलती होंगीं, परन्तु हम लोगों को यहाँ कभी-कभी एकाएक ऐसे दृश्य देखने को मिल जाते हैं," कमान्डर ने कहा। "व्लांग! देखो तो यह कहाँ फटा है!"

व्लांग देखने गया और लौट कर बताया कि यह चौक में फटा है और इसके बाद उस बम के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा गया।

भोजन समाप्त होने के ठीक पहले एक बुड्ढा जो तोपखाने का क्लर्क था तीन सीलबन्द लिफाफे लिये कमरे में घुसा और उन्हें कमान्डर को सौंप दिया। "यह बहुत जरूरी है, इसे तोपखाने के अध्यक्ष के यहाँ से एक कज्जाक लाया था। जब कमान्डर ने ऐसी कुशलता के साथ, जो लम्बे अभ्यास के बाद आती है, सील को तोड़ा और उस 'बहुत जरूरी' कागज को बाहर निकाला तो सारे अफसर बड़ी उत्सुकता के साथ उसे देखने लगे। "यह क्या हो सकता है?" हरेक ने मन ही मन सोचा। हो सकता है कि यह सेवास्तोपोल से विश्राम करने के लिये हटने का आज्ञा पत्र हो या सारे तोपखाने को मोर्चे पर तैनात करने का हुक्म हो।

"फिर वही!" कागज को मेज पर फेंकते हुये कमान्डर बोला।

"क्या बात है, एपोलोन सर्जीइच?" सीनियर अफसर ने पूछा।

"वे लोग किसी 'मोर्टार' तोपखाने के लिये एक अफसर और गोलान्दाज मांग रहे हैं। मेरे पास कुल मिला कर चार अफसर हैं और गोलन्दाजों का एक भी पूरा दल नहीं है और वे लोग और मांग रहे हैं," कमान्डर बड़बड़ाया। "फिर भी किसी न किसी को तो जाना ही पड़ेगा, सज्जनो," उसने कुछ देर खामोश रह कर कहा। "हुक्म यह है कि सात बजे रोगात्का पर पहुँच जाना चाहिये······सार्जेन्ट–मेजर को बुलाइये ! कौन जायेगा, तय करिए," उसने कहा।

"इसके बारे में क्या ख्याल है ? अभी तक इसे कहीं भी नहीं भेजा गया है," शेरनोवित्स्की ने वोलोदिया की तरफ इशारा करते हुए कहा।

कमान्डर ने कोई राय जाहिर नही की।

"जी हाँ, मैं जाना पसन्द करूँगा," अपनी पीठ और गर्दन पर उमड़ते हुए ठंडे पसीने को महसूस करते हुए वोलोदिया ने कहा।

"नहीं, नहीं, तुम क्यों जाओगे !" कप्तान ने टोका, "दरअसल कोई भी इन्कार नहीं करेगा, मगर किसी को भी जाने की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए; जब कि एवोलोन सर्जीइच ने यह बात हम लोगों पर छोड़ दी है तो हमें चिट्ठी डाल कर फैसला कर लेना चाहिए जैसा कि पिछली बार किया गया था।"

प्रत्येक इस बात पर सहमत हो गया। क्राउत ने कागज के छोटे छोटे टुकड़े काटे, उन्हें मोड़ा और अपनी टोपी में रख दिया। कप्तान ने मजाक किए और इस अवसर से लाभ उठाते हुए कर्नल से यह कहने का भी साहस किया कि 'प्रोत्साहित' करने के लिए शराब का एक दौर हो जाना चाहिए। दयादेन्को निराशा की मुद्रा में बैठ गया।

वोलोदिया अपने सामने की ओर गौर से देखता हुआ किसी बात पर मुस्करा उठा: शेरनोवित्स्की इस बात जोर देने लगा कि चिट्ठी उसी के नाम खुलेगी ; क्राउत बिल्कुल खामोश रहा।

सबसे पहले वोलोदिया को चिट्ठी उठाने के लिए बुलाया गया। उसने पहले सबसे लम्बा टुकड़ा उठाया मगर फौरन ही विचार बदल कर एक छोटा सा और मोटा टुकड़ा उठाया। उसे खोला और पढ़ा : "जाओ !"

"मुझे जाना है," उसने गहरी साँस भरते हुए कहा।

"अच्छा, भगवान तुम्हारी रक्षा करे। यह तुम्हारी गोलाबारी की दीक्षा होगी," एक दया मिश्रित मुस्कराहट के साथ पताकावाहक के लाल चेहरे की तरफ देखते हुए कमान्डर ने कहा। "फौरन तैयार हो जाओ। और तुम्हारा साथ देने के लिए व्लांग प्रधान गोलन्दाज बन कर तुम्हारे साथ जायेगा।"

## २१

व्लाँग, अपनी नियुक्ति से अत्यन्त प्रसन्न होता हुआ तैयार होने के लिए भागा। पूरे कपड़े पहन कर वह वोलोदिया की सहायता के लिए गया और उससे प्रार्थना की कि वह अपना विस्तर, बालों वाला कोट, एक अखबार की कुछ प्रतियाँ, स्प्रिट वाली काफीदानी और बहुत सी अन्य बेकार की चीजों को ले ले। कप्तान ने वोलोदिया को सलाह दी कि वह 'मोर्टार' तोप चलाने के ऊपर लिखी गई एक पुस्तक देख ले और उसमें से निशाना लगाने के नियमों को लिख ले। वोलोदिवा फौरन काम पर बैठ गया और उसने अत्यन्त आश्चर्य और प्रसन्नता के साथ यह अनुभव किया कि

यद्यपि संकट के भय ने तथा उससे भी बड़े स्वयं को कायर मानने वाले भय ने अभी तक उसका पीछा नहीं छोड़ा है फिर भी यह भय उतना अधिक नहीं रहा है जितना कि एक दिन पहले था। इसका एक कारण तो उसके दिन भर के विभिन्न अनुभव और कार्य थे तथा दूसरा, और सबसे बड़ा कारण यह था कि भय की भावना अधिक लम्बे समय तक एक सी ही गहराई से कभी भी नहीं रह सकती। संक्षेप में यह कहना चाहिए कि वह इस समय तक भय से मुक्त हो चुका था। शाम को सात बजे के लगभग, जब सूर्य निकोलाएव्स्की बैरकों के पीछे छिप रहा था, सार्जेंट-मेजर कमरे में घुसा और बोला कि गोलन्दाज तैयार हैं और उसका इन्तजार कर रहे हैं।

"मैंने 'व्लांगा' को लिस्ट दे दी थी। उससे मांग लीजिए, हुज़ूर!" उसने कहा।

लगभग बीस सिपाही बगल में म्यानदार छोटी तलवारें लटकाये मगर बिना फौजी वर्दी पहने मकान के कौने पर खड़े थे। वोलोदिया और व्लांग उनके पास गए। वोलोदिया ने मन ही मन सोचा, "इनके सामने छोटा सा व्याख्यान दूँ या सिर्फ इतना ही कहूँ, 'ठीक तरह से तो हो जवानो!' या कुछ भी न कहूँ यह क्यों न कहूं, कैसे हो जवानो! दरअसल मुझे यह कहना ही चाहिए।" और वह अपनी सुरीली आवाज में जोर से कह उठा, "अच्छी तरह से हो, जवानो!" सिपाहियों ने प्रसन्न होकर उत्तर दिया; वह सुन्दर आवाज उनके कानों को बहुत प्यारी लगी। वोलोदिया बहादुरी के साथ उनके आगे-आगे चल दिया यद्यपि उसका हृदय इस तरह धड़क रहा था मानो वह मीलों तक पूरी तेजी से दौड़ा हो। उसके कदम हल्के और खुल कर पड़ रहे थे और चेहरा प्रसन्नता से चमक रहा

था। जब वे मालाखोव कुरगान के पास पहुँचे और पहाड़ी पर चढ़ने लगे, तो उसने देखा कि व्लांग जो अब तक उसके साथ कदम से कदम मिलाये बराबर चला आ रहा था और घर पर इतना बहादुर लगा था, इस समय बराबर इधर उधर भाग रहा था और अपने सिर को छिपा रहा था मानो कि सारे बम और तोप के गोले, जो यहाँ बहुत कम आ रहे थे, सीधे उसी की तरफ उड़ते चले आ रहे हों। उनमें से कुछ सिपाही भी वैसा ही कर रहे थे और ज्यादातर चेहरों पर भय नहीं तो कम से कम व्यग्रता के भाव अवश्य झलक उठे थे। इस दृश्य ने वोलोदिया को पूरी तरह से शान्त कर दिया और उसका साहस बढ़ गया।

"और अब मैं, यहाँ, मालाखोव कुरगान पर हूँ जिसे मैंने बेकार ही इतना भयानक स्थान समझ रखा था। मैं तोप के गोलों के सामने बिना सिर झुकाए चल सकता हूँ और दूसरों की अपेक्षा कम भयभीत हो रहा हूं। इसलिए मैं कायर नहीं हूं," उसने उमंग में भर कर प्रसन्नता से सोचा।

यह उमंग और प्रसन्नता की भावना उस दृश्य को देखकर जो उसने शाम होने पर कोर्नीलोव तोपखाने पर देखा, फौरन ही गायब हो गई। वह वहाँ मोर्चे के कमान्डर को ढूँढ़ रहा था। चार मल्लाह दीवाल के पास एक खून से लतपथ शरीर को जिसका कोट और बूट उतार लिए गए थे, चारों हाथ पैरों से पकड़े, दीवाल के उस पार फेंकने के लिए झुला रहे थे। (बमबारी के दूसरे दिन उन्हें मुर्दों को बुर्ज पर से लाने का अवसर नहीं मिला था इसलिए रास्ता साफ करने के लिए वे मुर्दों को खाई में फेक रहे थे।) वोलोदिया ने जब देखा कि वह मुर्दा दीवाल के ऊपर टकराया और फिर धीरे-धीरे खाई में लुढ़क चला तो वह भय से मुँह बाये खड़ा रह गया।

सौभाग्य से मोर्चे का कमान्डर उसी समय आ पहुँचा। उसने उसे हिदायतें दीं और उसे तोपखाने तथा गोलन्दाजों को सुरक्षा-गृह तक पहुँचाने के लिए उसके साथ एक आदमी कर दिया। यहाँ यह नहीं बताया जायेगा कि उस शाम को हमारे इस वहादुर को कितने अधिक संकटों, निराशाओं और आतंक का सामना करना पड़ा। कैसे, बौल्कोव फील्ड पर होने वाली गोलाबारी, जिसका संचालन पूरी तैयारी और चुस्ती के साथ किया गया था, और जिसकी वह यहाँ भी उम्मीद कर रहा था, के स्थान पर यहाँ उसे दो छोटी टूटी हुई मोर्टार तोपें मिलीं जिनका निशाना लगाने वाला यंत्र गायब था। जिनमें से एक के मुँह पर एक तोप का गोला आकर लगा था तथा दूसरी अपनी टूटी हुई चर्खी पर खड़ी थी; किस तरह वह अगली सुबह तक उनकी मरम्मत करने वाले आदमियों को प्राप्त करने में असमर्थ था; कैसे एक भी वम किताब में दिए गए वजन के मुताविक नहीं था; कैसे उसके दो आदमी घायल हो गए थे और किस तरह वह खुद कम से कम बीस बार मौत के मुँह में जाने से बाल-बाच बचा था। सौभाग्य से उसे सहायक के रूप में एक जहाजी गोलन्दाज मिला था जो काफी लम्बा चौड़ा था और शहर का घेरा पड़ने के समय से ही मोर्टार तोपों को चला रहा था। उसने इस बात पर जोर दिया कि टूटी हुई तोपें अभी भी ठीक की जा सकती हैं। वह रात को रास्ता दिखाने के लिए एक लाल्टेन लिए हुए वोलोदिया को सारा बुर्ज दिखाता फिरा था मानो उसे अपनी तरकारी का बगीचा दिखा रहा हो और उसने उससे वायदा किया था कि सुबह होने तक सब ठीक हो जायेगा। वह सुरक्षा-गृह जहाँ उसका पथ-प्रदर्शक उसे ले गया था, एक आयताकार गड्ढा था जिसे पथरीली जमीन में चौबीस वर्ग गज के आयत में खोद कर तैयार किया गया था और उस पर अट्ठाईस इंच मोटे लट्ठों

की छत डाली गई थी। उसने अपने सारे साथियों के साथ यहीं अड्डा जमा लिया। व्लांग ने जैसे ही उस अट्ठाईस इंच वाले नीचे सुरक्षा-गृह के दरवाजे को देखा तो वह सबसे पहले उसमें सिर के बल डुबकी सी लगाता हुआ घुस गया। ऐसा करते समय उसका सिर पथरीले फर्श से बुरी तरह टकराया और वह एक कोने में सरक कर वहीं बैठ गया। वोलोदिया तब तक इन्तजार करता रहा जब तक कि उसके सारे आदमी भीतर घुस कर दीवालों के सहारे न जा बैठे और कुछ ने तो अपने पाइप भी सुलगा लिए। तब वह भीतर घुसा, एक कोने में अपना बिस्तर खोला, एक मोमबत्ती जलाई और सिगरेट सुलगा कर आराम करने के लिए लेट गया। उसे अपने ऊपर बराबर होने वाली गोलाबारी की आवाज, जो ज्यादा तेज नहीं थी, सुनाई पड़ती रही। परन्तु एक तोप की आवाज जो पास ही लगी हुई थी, उस सुरक्षा-गृह को इस बुरी तरह हिला देती थी कि छत में से मिट्टी झड़ने लगती थी। सुरक्षा-गृह में पूरी खामोशी थी। सिर्फ कुछ आदमी, जो अपने नए अफसर का अब भी लिहाज कर रहे थे, कभी-कभी आपस में बातें कर लेते थे। कभी कोई अपने पड़ोसी से थोड़ा सा खिसक जाने के लिए कहता या पाइप सुलगाने के लिए आग माँगता या कोई चूहा पत्थरों को खरोंचता या व्लाँग, जो अभी तक पूरी तरह होश में नहीं आया था और चारों तरफ आँखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था, गहरी साँस लेने लगता था। एक ही मोमबत्ती के प्रकाश में आदमियों से भरे हुए एक कौने में अपने विस्तर पर लेटा हुआ वोलोदिया उस मधुर और सुखद भावना से भर उठा जिसका, वह बचपन में आँख मिचौनी खेलते समय किसी आलमारी या माँ के लंहगे के नीचे छिप कर साँस रोके उस अन्धकार से भयभीत परन्तु फिर भी आनन्द लेते हुए, अनुभव किया करता था। उसके हृदय में

किंचित भय और प्रसन्नता दोनों ही प्रकार की भावनायें भर रहीं थीं।

## २२

लगभज दस मिनट बाद उन लोगों का साहस थोड़ा सा और बढ़ा और वे आपस में बातें करने लगे। उनमें से दो ज्यादा महत्वपूर्ण व्यक्ति —दो गोलन्दाज—रोशनी और अफसर के विस्तर के सबसे ज्यादा नजदीक लेटे हुए थे। उनमें से एक भूरे वालों वाला पुराना सिपाही था जिसके सीने पर 'सन्त जार्ज क्रॉस' को छोड़कर और सभी तरह के तमगे और क्रॉस लगे हुए थे और दूसरा छावनी से आया हुआ एक नौजवान सिपाही था जो हाथ की बनी सिगरेट पी रहा था। ढोल बजाने वाला, हमेशा की तरह, अफसर का अर्दली बना हुआ था। गोलन्दाज और गाड़ी वाले कुछ और पास लेटे हुए थे और दरवाजे के पास अँधेरे में शेष साधारण व्यक्ति पड़े हुए थे। इन्हीं लोगों ने उस समय बातें शुरू कीं जब एक आदमी के भाग कर भीतर घुसने का शोर हुआ।

"तुम्हें बाहर रहना अच्छा नहीं लगता, भाई? या यह बात है कि छोकरियाँ मजेदार गाना नहीं गा रहीं?" एक व्यक्ति ने पूछा।

"वे तो बहुत ही सुन्दर गा रहीं हैं। अपने गाँव में हमने ऐसा गाना कभी भी नहीं सुना," उस आदमी ने हंसते हुए कहा जो भाग कर भीतर आया था।

"ओह! वासिन बमों को पसन्द नहीं करता। नहीं, वे उसे कतई पसन्द नहीं!" बड़े लोगों वाले उस कौने में लेटा हुआ एक आदमी बोला।

"लेकिन जब पसन्द करना पड़ता है तब कहानी का रुख कुछ दूसरा ही हो जाता है !" वासिन ने धीमी घरघराती सी आवाज में कहा जिसे सुन कर और सब खामोश हो गए। "चौबीस को तो जरूर थोड़ी सी आतिशबाजी छूटी थी मगर बेकार भुन जाने में कोई मजा नहीं। सरदार लोग इसके लिए हमें धन्यवाद थोड़े ही देंगे !"

यह सुन कर सब खिलखिलाकर हंस पड़े।

"वह मेल्नीकोव वह रहा। मेरा ख्याल है कि वह अभी तक बाहर ही है," कोई कह उठा।

"उसे भीतर भेज दो वरना बेकार ही मारा जायेगा," भूरे बालों वाले गोलन्दाज ने कहा।

"यह मेल्नीकोव कौन है ?" वोलोदिया ने पूछा।

"ओह, अपना ही एक आदमी है, हुज़ूर। वह कुछ झक्की सा है। किसी चीज से नहीं डरता और पूरे समय तक बाहर ही बना रहता है। आप जरा उसे देखिए तो सही। वह रीछ जैसा है !"

"वह जादू जानता है," दूसरे कौने से वासिन की आवाज आई।

मेल्नीकोव भीतर गया। वह बहुत तगड़ा था (सिपाहियों में ऐसे कम होते हैं) उसका सिर और मुँह लाल था, माथा बहुत विशाल और बाहर की तरफ उभरा हुआ था, आंखें नीली, चमकीली और बड़ी बड़ी थीं।

"तुम्हे बमों से डर नहीं लगता ?" वोलोदिया ने उससे पूछा।

"डर की क्या बात है ?" कन्धे उचकाते और अपने को खुजाते हुए मेल्नीकोव ने जबाब दिया। "मै बमों से नही मरूँगा, इस बात को अच्छी तरह जानता हूं।"

"तुम यहाँ रहना पसन्द करोगे ?"

"जरूर करूँगा। यहाँ बड़ा मजा आता है!" एकाएक खिलखिला कर हंसते हुए मेल्नीकोव ने जबाव दिया।

"इसे तो हमले के लिए ले जाना चाहिए। मैं जनरल से कहूँगा, कह दूँ?" वोलोदिया ने कहा यद्यपि वह एक भी जनरल को नहीं जानता था।

"क्यों नहीं? उससे जरूर कह दीजियेगा!"

मेल्नीकोव ने अपने को दूसरे लोगों में छिपा लिया।

"आओ नाक खींचने का खेल खेलें! किसी के पास पत्ते हैं?" वह जल्दी जल्दी किसी से पूछता हुआ सुनाई पड़ा। फौरन ही पिछले कोने में खेल शुरू हो गया और हारने वालों की नाकें खींचे जाने की, हंसने की और पत्ते फेंटे जाने की आवाजें आने लगीं। वोलोदिया ने अर्दली द्वारा बनाई हुई चाय समोवार में से निकाल कर खुद पी, थोड़ी सी गोलन्दाजों को दी, स्वयं को प्रिय बनाने के लिए उनके साथ मजाक किया तथा और तरह की बातें कीं और उनके द्वारा अपने प्रति प्रदर्शित सम्मान से बहुत प्रसन्न हुआ। वे लोग यह देखकर कि यह बनता नहीं है, खुलकर बातें करने लगे। एक ने अपनी राय प्रकट करते हुए बताया कि सेवास्तोपोल का घेरा बहुत ही जल्द खत्म हो जाएगा और कहा कि उसके जान पहचान वाले एक बहुत यकीन वाले मल्लाह ने उसे बताया है कि जार का भाई किस्तेन्तिन (कॉन्स-तानताइन) हमारी मदद करने के लिए अमेरीकन जहाजी बेड़ा लेकर आ रहा है और उसने यह भी कहा कि जल्दी ही ऐसा इन्तजाम हो जायेगा कि दो हफ्तों तक बिल्कुल लड़ाई बन्द रहेगी जिससे हरेक को थोड़ा सा आराम मिल सकेगा और यह कि अगर किसी ने भी गोली चलाई तो उस पर फी गोली पचहत्तर कोपेक (एक पैसे के बराबर सिक्का) जुर्माना किया जाएगा।

वासिन, जैसा कि वोलोदिया ने उसे देखा, बड़ी और मृदुल आँखों वाला एक छोटा सा आदमी था। उसके गलमुच्छे भी थे। उसने पहले तो पूरी खामोशी के वातावरण में और बाद में सबकी गूंजती हुई हंसी के साथ बताया कि जब वह छुट्टी पर घर गया था तो किस तरह उसे देख कर पहले पहल सब खुश हुए थे मगर बाद में उसके बाप ने उसे काम पर भेज दिया और जंगलात का सहायक अफसर उसकी (वासिन की) बीबी को लाने के लिए बराबर अपनी गाड़ी भेजता रहा। यह सब सुनकर वोलोदिया को बड़ा मजा आया। इस भीड़ भाड़ से भरे और घुटनदार सुरक्षा-गृह में भय या असुविधा अनुभव करने के स्थान पर वह स्वयं को अत्यन्त शान्त, स्वस्थ और प्रसन्न अनुभव करने लगा।

उनमें से बहुत से आदमी इस समय तक खर्राटे भरने लगे थे। व्लांग भी फर्श पर लम्बा पड़ा हुआ था और भूरे बालों वाला गोलन्दाज अपना कोट बिछाने के बाद सोने से पहले प्रार्थना कर रहा था। इसी समय वोलोदिया के मन में आया कि बाहर चलकर देखा जाय कि क्या हो रहा है।

"अपने अपने पैर सिकोड़ लो!" जैसे ही वह उठा लोगों ने जोर से एक दूसरे से कहा और उसे रास्ता देने के लिए पैर सिकोड़ लिए गए।

व्लांग ने, जो गहरी नींद में सोया हुआ मालूम पड़ रहा था, एकाएक सिर ऊपर उठाया और वोलोदिया का कोट पीछे से पकड़ लिया।

"बाहर मत जाइए! कृपया–मत जाइये!" उसने रुंधे गले से मिन्नतें करते हुए कहा। "आप नहीं जानते कि यहाँ कैसी हालत है—

सारे समय बम बरसते रहते हैं। अच्छा यही होगा कि यहीं ठहरे रहें......"

व्लाँग के मिन्नतें करने पर भी वोलोदिया रास्ता बनाता हुआ बाहर निकला और दरवाजे की चौखट पर जाकर बैठ गया जहाँ मेल्नीकोव बैठा अपने बूट बदल रहा था।

उसे हवा ताजी और साफ लगी खास तौर से उस घुटनदार स्थान से बाहर निकलने पर तो और भी ज्यादा अच्छी लगी। गाड़ियों के पहियों की चरमराहट और बारूदखाने में काम करने वाले मजदूरों की शोर करने की आवाजें सुनाई पड़ रहीं थीं। ऊपर तारों से भरा आकाश था जिसमें उड़ते हुए जलते बमों से एक कभी न समाप्त होने वाला भयंकर मार्ग सा बन गया था। बाँयी तरफ एक छोटी सी दरार दूसरे सुरक्षा-गृह में जाने का रास्ता बना रही थी जिसमें से उसमें रहने वाले मल्लाहों के पैर और पीठें दिखाई दे रही थीं और उनकी नशे से लड़खड़ाती आवाजें सुनाई पड़ रहीं थीं। सामने बारूदखाने की धुंधली इमारत दीख रही थी जिसके इधर उधर आदमियों की शकलें घूम रहीं थीं। और उसके ऊपर गोलियों और बमों की भयंकर बौछार के नीचे, जो उस जगह विशेष रूप से गहरी थी, एक काला बड़ा कोट पहने एक लम्बा सा व्यक्ति, जेबों में हाथ डाले, अन्य व्यक्तियों द्वारा बोरों में भर भर कर लाई हुई मिट्टी को अपने पैरों से दबा रहा था। रह रह कर कोई बम बारूदखाने के बिल्कुल पास होकर सन्नाता हुआ निकल जाता था। बोरे ढोने वाले नीचे झुक जाते थे या एक तरफ को भाग उठते थे मगर वह लम्बा आदमी जरा भी नहीं हिलता था और चुपचाप बिना स्थान या अपनी मुद्रा बदले मिट्टी को पैरों से दबाता रहा।

"वह वहाँ, काला सा आदमी कौन है?" वोलोदिया ने मेल्नीकोव से पूछा।

"मैं नहीं जानता। जाकर देखता हूं।"

"मत जाओ, कोई जरूरत नहीं।"

मगर मेल्नीकोव उसकी बात की तरफ कोई भी ध्यान न देकर उठ खड़ा हुआ, उस काली शकल के पास गया और काफी देर तक उसी की तरह बिना हिले डुले और शान्त उसके पास खड़ा रहा।

"वह बारूदखाने का आदमी है, हुजूर!" लौटने पर उसने बताया। "बारूदखाने में एक बम आकर लगा था इसलिए फौजी लोग वहाँ मिट्टी ले जा रहे हैं।"

रह-रह कर एक बम ऊपर उड़ता और ऐसा लगता जैसे सीधा उसी सुरक्षा-गृह के दरवाजे की तरफ आ रहा है।

उस समय वोलोदिया एक कोने के पीछे छिप जाता और फिर बाहर यह देखने के लिए झांकने लगता कि और तो नहीं आ रहे। यद्यपि व्लांग ने वोलोदिया से कई बार दरवाजे पर से हट जाने की प्रार्थना की मगर वह तीन घण्टे तक वहीं बैठा रहा। उसे अपने भाग्य को चुनौती देने में और बमों की उड़ान देखने में अजीब सा आनन्द आ रहा था। शाम खत्म होने तक वह इस बात को जान गया था कि कहाँ से इतनी तोपें दागी जा रही हैं और कहां उनके बम गिर रहे हैं।

## २३

सत्ताईस को बहुत सबेरे हा वोलोदिया दस घन्टे सोने के बाद खूब तरोताजा होकर बाहर दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। व्लांग उसके साथ बाहर जाना चाहता था मगर तोप की पहली ही आवाज पर वह पीछे की तरफ लड़खड़ा कर गिरा और सिर पर पैर रख सुरक्षा–गृह

में भीतर भाग गया। उन लोगों को यह देखकर बड़ा मजा आया जिनमें से बहुत से ताजी हवा खाने बाहर निकल आए थे। वासिन, भूरे वालों वाला वह गोलन्दाज और थोड़े से और भी ऐसे आदमी थे जो शायद ही कभी वहाँ से बाहर निकलते हों। दूसरे लोग अपने को रोक नहीं पाते थे। सब लोग उस घुटन से बाहर सुबह की ताजी हवा में निकल आए और बमबारी की परवाह न कर, जो पहले दिन की तरह भयंकर रूप से हो रही थी, दरवाजे पर या दीवाल के सहारे जाकर बैठ गए। मेल्नीकोव दिन निकलते ही विना झिझके तोपखाने में घूमने चल दिया और बिना डरे आसमान की तरह ताकता रहा।

दो बड़ी उमर के सिपाही और घुंघराले बाल और यहूदियों के से चेहरे वाला एक नौजवान दरवाजे की चौखट के पास बैठे हुए थे। उस नौजवान ने एक धूल में पड़ी गोली उठा ली, उसे पत्थर पर रखा और बम के एक टुकड़े से पीट पीट कर चपटा किया फिर एक चाकू की मदद से 'सन्त जार्ज क्रॉस' की शकल में छील छील कर काटने लगा। दूसरे आपस में बातें करते हुए उसे अपने काम में लगा देखते रहे। वह क्रॉस सचमुच बहुत सुन्दर रूप धारण करता जा रहा था।

"हम चाहे यहाँ जितने दिनों तक रहें मगर जब लड़ाई बन्द हो जायगी तो हमारी नौकरी भी पूरी हो लेगी," उन सिपाहियों में से एक ने कहा।

"हाँ! मेरे कुल चार साल और रह गए हैं और मुझे सेवास्तोपोल में आए पांच महीने हो चुके हैं।"

"छुट्टी मिलने में इस बात का ध्यान नहीं रख जाता," दूसरे आदमी ने कहा।

उसी समय एक बम सनसनाता हुआ उनके सिर पर आया और मेल्नीकोव से सिर्फ दो फुट की दूरी पर जमीन से टकराया और खाई में होकर उन्ही की तरफ बढ़ा।

"लगभग मारे ही गए होते मेल्नीकोव," एक बोला।

"यह मुझे नहीं मार सकता," मेल्नीकोव ने कहा।

"अच्छा, तो अपनी बहादुरी के लिए यह क्रॉस लो," उस नौजवान सिपाही ने, जिसने क्रॉस पूरा कर लिया था, उसे मेल्नीकोव को देते हुए कहा।

"नही भाई, यहाँ का एक महीना एक साल के बराबर गिन जाता है—ऐसा हुक्म निकल चुका है," एक ने बात को जारी रखते हुए कहा।

"चाहे जैसे गिना जाय मगर जैसे ही लड़ाई खत्म होगी तो जार वारसा में एक जाँच कमेटी बैठायेगा और अगर हम लोगों की नौकरी खत्म नही होती तो हमें निश्चय ही मन चाहे दिनों की लम्बी छुट्टी मिल जायेगी।"

उसी क्षण एक गोली उनके ठीक सिर के ऊपर सन्नाती हुई आई और एक पत्थर से टकरा कर चपटी हो गई।

"होशयार, दिन खत्म होने से पहले ही तुम्हें पूरी छुट्टी मिल जायेगी," उनमें से एक ने कहा।

इस बात पर हँसी का एक गहरा ठहाका गूंज उठा।

दिन छिपने से पहले तो नहीं मगर, उसके दो घन्टे बाद दो आदमियों को तो हमेशा के लिए छुट्टी मिल गई और पाँच और घायल हो गए मगर बाकी उसी तरह हंसी मजाक करते रहे।

सुबह होने तक वे दोनों मोर्टार तोपें सचमुच इतनी ठीक कर ली गई थीं कि उन्हें चलाया जा सके। सुबह दस बजने के करीब

मोर्चे के कमान्डर का हुक्म मिलते ही वोलोदिया ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और उन्हें तोपखाने की तरफ ले चला।

काम शुरू करते ही उनका वह सारा डर पूरी तरह दूर भाग गया जो उनमें कल दिखाई दिया था। सिर्फ अकेला व्लांग ही अपने पर काबू पाने में असमर्थ था। वह पहले की ही तरह रेंगता और आड़ ढूंढ़ने की कोशिश करता रहा। वासिन भी भयभीत हो उठा और सहम कर इधर उधर छिपने की कोशिश करने लगा। फिर भी वोलोदिया उत्साह से उमंगित हो रहा था। उसके दिमाग से भय के सारे विचार गायब हो चुके थे। इस ज्ञान से उत्पन्न हुई उसकी प्रसन्नता कि वह अपने कर्त्तव्य का पालन ठीक तरह से कर रहा है और यह कि वह कायर होना तो दूर रहा बल्कि सचमुच एक बहादुर आदमी है, तथा उन बीस आदमियों के ऊपर अपने अधिकार की भावना, जो, वह जानता था, कि उसकी तरफ बड़ी रुचि के साथ आँखें लगाए थे, आदि बातों ने उसे एक वीर योद्धा के रूप में बदल दिया। वह अपनी वीरता के गर्व में फूल उठा, आदमियों के सामने लड़खड़ाता हुआ सा झूमने लगा, चर्खी पर चढ़ गया तथा और भी ज्यादा बहादुरी दिखाने के लिए उसने अपने कोट के बटन भी खोल डाले। मोर्चे का कमान्डर जो आठ महीने इस स्थान पर रहने के कारण वीरता के हर प्रकार के कार्यों का अभ्यस्त हो गया था, उसी समय अपनी 'रियासत' में—जैसा कि वह उस स्थान के लिए कहा करता था—निरीक्षण के लिए निकला हुआ था। उसे यह सुन्दर लड़का बहुत पसन्द आया जिसके कोट के बटन खुले हुए थे और उसके नीचे लाल कमीज चमक रही थी, जिसका कॉलर उसकी सफेद नाज़ुक गर्दन में चिपका हुआ था और जो लाल चेहरे और चमकती हुई आँखों से ताली बजाता हुआ अपनी सुरीली आवाज में हुक्म दे रहा था: "पहला! दूसरा!" और फुर्ती के

साथ दीवाल पर चढ़ कर यह देखता जाता था कि उसके बम कहाँ जाकर गिर रहे थे। साढ़े ग्यारह बजे दोनों तरफ से गोलाबारी होनी बन्द हो गई और ठीक बारह बजे मालाखोव कुरगान और उसके दूसरे, तीसरे और पाँचवें बुर्जों पर हमला शुरू हो गया।

## २४

खाड़ी के इस तरफ, इन्करमान और सेवेरनाया मोर्चेबन्दी के बीच दो जहाजी आदमी तार वाली पहाड़ी पर खड़े थे। इनमें से एक अफसर था जो दूरबीन से सेवास्तोपोल का मुआयना कर रहा था और दूसरा वह आदमी था जो उस बड़े खम्भे के पास एक कज्जाक के साथ अभी अभी आया था। समय दोपहर के करीब था।

सूरज खाड़ी के ऊपर चमक रहा था जिसका पानी लंगर डाले पड़े हुए जहाजों के चारों ओर चमकता हुआ प्रसन्नता के साथ टकरा रहा था और तरह-तरह की नावें उसकी सतह पर दौड़ रही थीं। तार के खम्भे के पास खड़े एक मुरझाये हुए ओक वृक्ष के पत्तों को धीरे से हिलाती और नावों के पालों को फुलाती हुई मन्द वायु जल की सतह पर छोटी छोटी लहरें उत्पन्न कर रही थी। सेवास्तोपोल पहले की तरह अपने अधबने चर्च, खम्भों की पंक्ति, घाट, मस्तूलों से भरे छोटे-छोटे नीले पानी के टुकड़ों, पहाड़ी के नीचे बने सुन्दर हरे बागों और पुस्तकालय की सुन्दर इमारत, खाड़ी की शाखाओं के मेहराबदार सुन्दर दृश्यों और बारूद के धुए के उठते हुए नीले बादलों के साथ रह रह कर तोपों की चमक से प्रकाशित हो उठता था। सेवास्तोपोल पहले की ही तरह सुन्दर, उमंगों से भरा और शानदार था और धुंआ उठती हुई पीली पहाड़ियों से एक तरफ से घिरा हुआ था और उसके दूसरी तरफ धूप में चमकता हुआ तेज नीले रंग का समुद्र फैला हुआ था। ऐसा

सेवास्तोपोल खाड़ी के उस पार स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था। हवा के तेज होने की सूचना देने वाले लम्बे लम्बे सफेद बादल क्षितिज पर तैर रहे थे जिनके नीचे किसी जहाज से उठते हुए काले धुँए की एक रेखा लहराती हुई आकाश की तरफ उठ रही थी। उन मोर्चों की पूरी पंक्ति के सहारे सहारे और विशेष रूप से बाँई तरफ वाली पहाड़ियों से सफेद घने और ठोस धुँए की धारायें बराबर उठ रहीं थीं। ये धारायें कभी कभी घने रूप में बिजली की सी चमक के साथ जो दिन में भी तेज दिखाई पड़ती थीं, उठतीं और फैलने पर विभिन्न प्रकार के रूप धारण करती हुई आसमान की तरफ बढ़ रहीं थीं। ऊपर जाकर इनका रंग ज्यादा गहरा हो जाता था। धुँए के गुब्बार कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी पहाड़ियों में, कभी दुश्मन के तोपखानों में, कभी शहर में और कभी ऊपर आसमान में दिखाई पड़ते थे। बम फटने की आवाजें बराबर आ रहीं थीं जो गूंजतीं हुई हवा में फैल जातीं थीं।......

दोपहर के करीब धुंए के गुब्बार उठने कम हो गये। अब हवा भी उस भयंकर गरज से उतनी नहीं काँपती थी।

"दूसरे बुर्ज ने दुश्मन की गोलाबारी का जबाब देना बन्द कर दिया है," हुसार अफसर ने घोड़े पर बैठे हुए ही कहा। "वह पूरी तरह बर्बाद हो चुका है, भयानक स्थिति है।"

"हाँ और मालाखोव कुरगन भी दुश्मन के तीन गोलों के बदले में सिर्फ एक गोला ही छोड़ता हुआ दिखाई पड़ता है," दूरबीन वाले व्यक्ति ने जबाब दिया। "उनकी इस खामोशी पर मुझे बहुत भयंकर गुस्सा आ रहा है। वह देखो! एक दूसरा गोला फिर कोर्नीलोव गढ़ पर आकर लगा है और वे जबाब ही नहीं दे रहे हैं।"

"मैंने कहा था न कि दोपहर के करीब वे हमेशा गोलाबारी बन्द कर देते हैं। यही आज हो रहा है। चलो, चल कर खाना खा लें··· वे लोग हमारा इन्तजार कर रहे है···यहाँ अब और कुछ भी देखने को नहीं है।

"ठहरो ! मुझे परेशान मत करो !" दूरबीन वाले आदमी ने और ज्यादा गौर से सेवास्तोपोल की तरफ देखते हुए कहा।

"क्या बात है ? क्या देख रहे हो ?"

"खाइयों में हलचल हो रही है। दल के दल है।"

"ठीक है, मुझे वे बिना दूरबीन के ही दिखाई दे रहे है," जहाजी अफसर ने कहा। "वे लोग दल बाँध कर आगे बढ़ रहे हैं। हमें सिगनल दे देना चाहिए।"

"देखो, देखो। उन्होंने खाइयाँ छोड़ दी हैं।"

और सचमुच बिना दूरबीन के ही काले से धब्बे पहाड़ी के नीचे घाटी में होकर फ्रांसीसी तोपखाने से बुर्जों की तरफ बढ़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे। उन धब्बों के आगे कई काली पट्टियाँ हमारी पंक्तियों के लगभग पास जा पहुँची थी। बुर्जों पर से विभिन्न स्थानों से धुँए के गुब्बारे उठने लगे मानो उनमें दौड़ हो रही हो। तेजी से बन्दूकों के चलने की आवाज हवा में ऐसी मालूम पड़ रही थी जैसे खिड़की के काँच पर मेंह की बूँदों के गिरने से ढोल बजने की सी आवाज उठ रही हो। वे काली पट्टियाँ धुँए में आगे बढ़ीं तथा और भी पास आती चली गई। गोलाबारी की आवाज और भी तेज होती गई और अन्त में एक भयानक निरन्तर होने वाली गर्जन में बदल गई। धुँआ कभी कभी बहुत ज्यादा उठता हुआ तेजी से हमारी पंक्तियों पर छा गया और अन्त में एक बैंगनी रंग

के लहराते हुए बादल में बदल गया जिसमें जगह-जगह बिजली चमक उठती और काले धब्बे से दिखाई पड़ जाते। सारे शब्द एक भयंकर गूंजती हुई गरज में डूब गए।

"हमला हो रहा है!" पीले पड़ते हुए उस अफसर ने दूरवीन लिये उस जहाजी अफसर की तरफ बढ़ते हुये कहा।

कज्जाक लोग सड़क पर घोड़े दौड़ाते हुए आये; घोड़ों पर बैठे हुए अफसर वहाँ से गुजरे। अपनी गाड़ी में वैठा हुआ कमान्डर-इन-चीफ अपने स्टाफ से घिरा हुआ निकला। हरेक के चेहरे पर भयंकर व्यग्रता और आने वाले भयानक संकट की सम्भावना के भाव छा रहे थे

"वे लोग कब्जा नहीं कर सके होंगे!" अफसर ने कहा।

"झंडा! भगवान की कसम! देखो! देखो!" दूसरे ने हांफते और दूरबीन से अलग हटते हुए कहा। "मालाखोव पर फ्रांसीसी झंडा फहरा रहा है।"

"ऐसा नहीं हो सकता!"

## २५

पौ फटने से ठीक पहले जब कोजेल्तसोव, जो रात को किसी तरह अपना पैसा जीत गया था और फिर हार गया था—जिसमें उसकी आस्तीन में सिले हुए सोने के सिक्के भी थे—अभी तक एक बेचैनी भरी, भारी लेकिन गहरी नींद में पाँचवे बुर्ज की बैरकों में सो रहा था कि कई गलों से उठी हुई भयानक चीख की आवाज चारों तरफ गूंज उठी:

"होश्यार !"………

"मिखायलो सेमियोनिच ! उन्होंने हमला कर दिया है !" उसने किसी को चीखते हुए सुना, "उठो !"

"मेरा ख्याल है कोई स्कूल का लड़का शैतानी कर रहा है," उसने आँखें खोलते और जो कुछ सुना था उस पर अभी भी विश्वास न करते हुए कहा ।

मगर एकाएक उसने देखा कि एक अफसर पीला चेहरा लिए और डरा हुआ बिना किसी स्पष्ट कारण के इधर उधर भागता फिर रहा है । इससे वह फौरन समझ गया कि क्या घटना घटी थी । इस विचार ने, कि अगर ऐसे भयानक समय में वह अपनी कम्पनी में न पहुँचा तो उसे बुजदिल समझा जायेगा, उसे भयानक रूप से झकझोर कर उठा दिया । वह पूरी तेजी से अपनी कम्पनी की तरफ भागा । तोपों की आवाज बन्द हो गई थी । मगर बन्दूकों के छूटने की आवाज अपनी पूरी तेजी पर थी । गोलियाँ एक एक कर न आकर पतझर के मौसम में आसमान में उड़ते हुए पक्षियों की तरह झुंड बांध कर आ रही थीं । वह स्थान जिस पर कल उसकी बटालियन रही थी धुंए के पर्दे में छिप गया था और तरह तरह की आवाजें और चीखें सुनाई पड़ रहीं थीं । घायल और स्वस्थ सिपाही दल बांध कर उसके पास से गुजर रहे थे । तीस कदम और दौड़कर उसने अपनी कम्पनी को दीवाल से सटा हुआ देखा । उसके एक सिपाही का चेहरा मौत की तरह पीला और भयभीत दिखाई पड़ रहा था । दूसरे चेहरों की भी यही दशा थी ।

भय की भावना कोजेल्तसोव पर भी सवार हो गई । उसके सारे शरीर में एक ठण्डी कंपकंपी दौड़ गई ।

"उन्होंने स्कवार्त्ज गढ़ पर कब्जा कर लिया है !" एक नौजवान अफसर ने कहा जिसकी दाँती बज रही थी । "सब खत्म हो गया ।"

"वाहियात," कोजेल्तसोव ने गुस्से से में भर कर कहा और अपने को उत्साहित करने के लिए उसने एक झटके के साथ अपनी भोंथरी, छोटी सी लोहे की तलवार बाहर निकाल ली और चीखा :

"आगे बढ़ो, जवानो ! हुर्रा–आ–आ···!"

कोजेल्तसोव की आवाज इतनी तेज और गूँजती हुई थी कि इसका खुद उस पर बड़ा गहरा असर पड़ा। वह तेजी से नीचे की तरफ झपटा; लगभग पचास आदमी उसके साथ चीखते हुए दौड़ पड़े। जब वे मोड़ के अन्तिम छोर पर पहुँचे और वहां जाकर एक खुले स्थान में निकल आये तो गोलियाँ उन पर ओलों की तरह बरसने लगीं थी। और उनमें से दो कोजेल्तसोव के आकर लगीं मगर वे कहाँ लगीं थीं और उनसे उसके क्या चोट पहुँची थी—सिर्फ एक खुरसट या घाव—यह मालूम करने के लिए उसके पास समय नहीं था। अपने आगे, धुंए में उसे नीले कोट और लाल पतलूनें दिखाई पड़ रहीं थीं और ऐसी आवाजें आ रहीं थीं जो रूसी नहीं थीं। एक फ्राँसीसी दीवाल पर खड़ा तलवार हिलाता हुआ चिल्ला रहा था। कोजेल्तसोव को विश्वास हो गया था कि वह मारा जाएगा और इसने उसके साहस को और बढ़ा दिया। वह आगे दौड़ता चला गया। कई सिपाही उसके बराबर आ गए, कुछ एकाएक बगल में से निकले और आगे भागने लगे। नीले कोट वाले अपनी पहले की ही दूरी पर रहे। वे लोग वापस अपनी खाइयों की तरफ भाग रहे थे मगर वह मुर्दे और घायलों के शरीरों से टकरा गया। जब वह बाहरी खाई पर पहुँचा तो उसकी आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा और उसने सीने में दर्द महसूस किया। वह एक पत्थर पर बैठ गया और एक छेद में से प्रसन्न होते हुए उसने देखा कि नीले कोट वाले तितर-बितर होकर अपनी खाइयों की तरफ भागे चले जा रहे थे और सारा

मैदान मुर्दों और घायल होकर रेंगते हुए नीचे कोटों और लाल पतलूनों से भरा हुआ था।

आधा घन्टे बाद वह निकोलाएव्स्की बैरक के पास एक स्ट्रेचर पर लेटा हुआ था और जानता था कि वह घायल हो गया है मगर दर्द का अनुभव नही कर रहा था। वह सिर्फ यही चाहता था कि उसे पीने को कोई ठण्डी चीज मिल जाय और वह और ज्यादा आराम से लेट सके।

घने काले गलमुच्छों वाला एक तगड़ा सा ठिगना डाक्टर उसके पास आया और उसके कोट के बटन खोल दिए। अपनी नाक की नीचे की तरफ देखते हुए कोजेल्ससोव ने देखा कि डाक्टर उसके घाव के साथ कुछ कर रहा था। उसने डाक्टर के चेहरे को समझने की कोशिश की मगर अब भी उसे दर्द महसूस नही हुआ। डाक्टर ने उसके घाव को फिर कमीज से ढँक दिया, उसके कोट के किनारे से अपनी उङ्गलियाँ पोछी और बिना एक शब्द कहे या पायल की तरफ देखे वह दूसरे मरीज की तरफ घूम गया। कोजेल्तसोव की आंखें अपने आप घूमती हुई अपने सामने होने वाले कार्यों को देखती रही। पाँचवें बुर्ज पर जो कुछ भी हुआ उसे याद कर उसे बड़ा सन्तोष हुआ। वह इस बात से प्रसन्न हो उठा कि उसने अपने कर्त्तव्य का पालन ठीक तरह से किया था, कि उसने अपनी पूरी नौकरी में परिस्थितियों द्वारा प्रस्तुत किए गए अवसरों में से आज ही सबसे अच्छा काम किया था और उसे अपने आप से कोई शिकायत नही थी। डाक्टर ने एक दूसरे अफसर का घाव बांधते हुए एक पादरी से कुछ कहा और कोजेल्तसोव की तरफ इशारा किया। पादरी की दाढ़ी लाल और लम्बी थी। वह पास ही एक 'क्रॉस' हाथ में पकड़े खड़ा हुआ था।

"क्या मैं मर रहा हूं ?" जब पादरी कोजेल्तसोव के पास आया तो उसने उससे पूछा ।

पादरी ने कोई जबाब नही दिया परन्तु एक प्रार्थना कही और उस घायल के हाथ में वह 'क्रॉस पकड़ा दिया ।

कोजेल्तसोव मृत्यु के विचार से भयभीत नहीं हुआ । उसने 'क्रॉस' को अपने काँपते हाथों से पकड़ा, होठों से लगाया और उसकी आँखों से आँसू बह उठे ।

"क्या फ्राँसीसियों को सब जगहों से भगा दिया गया है ?" उसने दृढ़ स्वर में पादरी से पूछा ।

"सब मोर्चों पर हमारी विजय हुई है," पादरी ने कुछ विशेष अक्षरों पर विशेष बल देते हुए कहा और ऐसा करने में वह उस घायल व्यक्ति से यह तथ्य छिपा गया कि मालाखोव कुरगान पर इस समय तक फ्राँसीसी झंडा फहराने लगा था ।

"भगवान को धन्यवाद दो ! भगवान को धन्यवाद दो !" घायल ने कहा । वह इस बात को भूल गया कि उसके गालों पर आँसुओं की धार बह रही थी और इस बात को सोचकर वह अत्यधिक भावुक हो उठा कि उसने एक बहादुरी का काम किया था ।

उसके मस्तिष्क में अपने भाई का विचार कौंध गया । "भगवान करे कि वह भी ऐसा ही भाग्यशाली निकले," उसने प्रार्थना की ।

## २६

मगर वोलोदिया के भाग्य में कुछ और ही लिखा था । वह वासिन द्वारा कही जा रही एक कहानी को सुन रहा था कि चारों तरफ से "फ्रांसीसी आ रहे हैं !" की पुकारें उठने लगीं । क्षण भर के लिए

वोलोदिया का हृदय धड़क उठा और उसने अनुभव किया कि उसके गाल पीले और ठंडे पड़ गए हैं।

क्षण भर तक वह जड़ की भांति खड़ा रहा मगर मुड़ कर देखते ही उसने देखा कि सिपाही खामोशी के साथ अपने ओवर कोटों के बटन बन्द करते हुए भीतर से निकल एक पंक्ति में खड़े हो गए। उनमें से एक ने—उसने सोचा कि यह मेल्नीकोव था—मजाक करते हुए वह बात भी कही।

"चलो, चल कर उनका अच्छी तरह स्वागत करें, जवानो!"

वोलोदिया, व्लांग के साथ, जो उसका साथ कभी नहीं छोड़ता था, सुरक्षा-गृह से बाहर निकला और तोपखाने की तरफ बढ़ा। दोनों तरफ की तोपें खामोश थीं। उन आदमियों की शान्ति ने वोलोदिया को इतना उत्साहित नही किया जितना कि व्लांग की दीन एवं स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ने वाली कायरता ने किया "क्या मैं सचमुच उसी की तरह हो सकता हूँ?" उसने प्रसन्नता के साथ उस दीवाल की तरफ दौड़ते हुए अपने आप से पूछा, जहाँ उसकी छोटी मोर्टार तोपें लगी हुई थी। उसे यहाँ से बुर्जों की तरफ दौड़ते हुऐ फ्रांसीसी साफ दिखाई पड़ रहे थे। उनके दल के दल सबसे पास वाली खाइयों में घुस रहे थे। उनकी संगीनें धूप में चमक रही थी। उनमें फौजी पोशाक पहने और एक तलवार लिए चौड़े कन्धों वाला एक छोटा सा फ्राँसीसी बमों द्वारा बनाए गए गड्ढों पर उछलता हुआ सबसे आगे दौड़ रहा था। "छोटे गोले भरो!" वोलोदिया ने नीचे दौड़ते हुए हुक्म दिया। मगर गोलन्दाजों ने हुक्म का इन्तजार किए बिना ही तोपें भर ली थी और दूसरे ही क्षण छोड़े गए गोलों की आवाज ऊपर गूंज उठी। पहले पहली तोप से और फिर दूसरी से। "पहला! दूसरा!" उस धुंए में खतरे से पूरी तरह बेखबर होकर वोलोदिया एक तोप से तोप की

तरह दौड़ दौड़ कर हुक्म देने लगा । उसे अपने बिल्कुल पास ही बगल, में, आड़ लिए हुए हमारी फौजों द्वारा चलाई गई बन्दूकों की तथा मिली जुली खीच–चिल्लाहट की आवाजे सुनाई पड़ रहीं थी ।

अचानक कई व्यक्तियों द्वारा दुहराई गई भयंकर निराशा पूर्ण चीखें बांयी तरफ से उठी : "वे लोग हमारी बगल से निकले जा रहे हैं । वे लोग हमारी बगल से निकले जा रहे हैं !" इस आवाज को सुन कर वोलोदिया घूम गया और उसने अपने पीछे की तरफ लगभग बीस फ्रांसीसीयों को देखा । काली दाढ़ी वाला लाल टोपी लगाए एक सुन्दर सा व्यक्ति उनका नेतृत्व कर रहा था मगर तोपखाने से लगभग दस कदम की दूरी पर वह रुका, बन्दूक दागी और फिर आगे की तरफ दौड़ा । क्षण भर तक वोलिदिया सन्न सा खड़ा रह गया । उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ । जब उसने पुनः होश सम्हाला और चारों तरफ देखा तो उसे अपने सामने दीवाल पर नीले कोट दिखाई पड़े । उनमें से एक व्यक्ति पहले ही नीचे कूद पड़ा था और तोप में कील ठोक रहा था । मेल्नीकोव के सिवाय उसके पास और भी नही था । मेल्नीकोव उसकी बगल में एक गोली लगने से मरा पड़ा था । इसके अलावा उसके पास व्लांग और था जिसने एकाएक एक लम्बी सी छड़ उठा ली थी । वह चेहरे को भयानक बनाये आँखें नचाता आगे की तरफ झपटा । "मेरे साथ आओ, व्लादीमीर सेमियोनिच ! मेरे साथ आओ ! हम लोग मारे गए !" व्लांग अपने पीछे वाले फ्रांसीसी की तरफ उस छड़ को बुरी तरह चलाते हुए हताश होकर चीखने लगा । वोलोदिया व्लांग के उस भयंकर रूप को देखकर स्तम्भित हो उठा । व्लांग ने अपने सामने वाले आदमी की खोपड़ी पर चोट की तो दूसरे अपने आप आगे बढ़ने से रुक गए । बार बार मुड़कर पीछे देखता हुआ व्लांग, बुरी तरह चीखता हुआ : "मेरे साथ आओ, व्लादीमीर सेमियोनिच ! वहाँ

क्यों खड़े हो ? भागो !" खाई की तरफ झपटा जहाँ से हमारी फौज फ्रांसीसियों पर गोलियाँ बरसा रही थी। जैसे ही वह खाई में कूदा कि उसका सिर फौरन ही यह देखने के लिए ऊपर उठा कि उसका प्यारा पताकावाहक क्या कर रहा था। जिस जगह वोलोदिया खड़ा था, वहीं जमीन पर ओवरकोट पहने कोई सीधा पड़ा हुआ था और पूरी जगह पर फ्रांसीसियों ने कब्जा कर लिया था और वे इस समय हमारे आदमियों पर गोलियाँ चला रहे थे।

## २७

व्लांग ने अपने तोपखाने को रक्षा की दूसरी पंक्ति में पाया। उस तोपखाने के बीस आदमियों में से सिर्फ आठ जिन्दा बचे थे।

शाम को आठ और नौ बजे के बीच व्लांग और उसका तोपखाना सिपाहियों, तोपों, घोड़ों और घायल आदमियों से भरे एक स्टीमर पर सवार हो गया जो सेवेरनाया साईड की तरफ जा रहा था। गोलाबारी की आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। तारे उसी तरह स्वच्छता के साथ आकाश में चमक रहे थे जैसे कि पिछली रात को चमके थे लेकिन तेज हवा समुद्र को मथे डाल रही थी। पहले और दूसरे बुर्जों की जमीन पर बिजली का प्रकाश चमक उठता था। धड़ाकों से हवा काँप उठती थी और उनकी चमक में अजीब सी काली चीजें दिखाई पड़ने लगतीं थीं। पत्थरों के टुकड़े आकाश की तरफ उड़ रहे थे। घाट के किनारे कोई चीज जल रही थी और पानी में लाल लपटों का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ रहा था। निकोलाव्स्की तोपखाने पर जलती हुई तेज आँच की रोशनी में आदमियों से भरा हुआ पुल प्रकाशित हो रहा था। एलेक्जेन्ड्रोव तोपखाने के पास, काफी दूर स्थित एक अन्तरीप पर आग की एक ऊँची लौ पानी के ऊपर स्थिर खड़ी सी दिखाई पड़ रही थी। और उसके ऊपर छाया हुआ धुंए का बादल उसके प्रकाश में चमक रहा था। पिछली

रात की तरह समुद्र में दूर खड़े दुश्मन के जहाजी बेड़े के जहाजों पर वैसी ही शान्त, चुनौती सी देती हुई रोशनियाँ चमक रहीं थीं। ताजी हवा के झोंके खाड़ी के पानी में लहरें उत्पन्न कर रहे थे। गोला लगने से डूबते हुए रूसी जहाजों के मस्तूल उस तीव्र प्रकाश में चमक रहे थे जो धीरे-धीरे पानी में डूबते चले जा रहे थे। उनके डैक निस्तब्ध थे। लौटती हुई लहरों और भाप निकलने की आवाज के साथ-साथ घोड़ों के हिनहिनाने और डैकों पर पैर पटकने की, कप्तान द्वारा आज्ञायें देने की और घायल आदमियों के कराहने की आवाजें आ रहीं थीं। व्लांग ने जो दिन भर का भूखा था अपनी जेब से रोटी का एक टुकड़ा निकाला और चबाने लगा मगर एकाएक उसे वोलोदिया की याद आ गई और वह इतनी जोर से रोने लगा कि पास खड़े सिपाहियों ने भी सुन लिया।

"देखो ! हमारा 'व्लांगा' खा रहा है और रो रहा है," वासिन ने कहा।

"अजीब बात है !" दूसरा बोला।

"उन्होंने हमारी बैरकों में आग लगा दी है !' उसनेआह भरते हुए फिर कहा, "हमारे कितने सिपाही मारे गए मगर फ्रांसीसियों ने तो उन पर न कुछ में ही कब्जा कर लिया।"

"कम से कम हम लोग सही-सलामत तो निकल आये। भगवान को इसके लिए धन्यवाद है," वासिन ने कहा।

"फिर भी, बड़े दुख की बात है।"

"दुख की क्या बात है ?" तुम समझते हो कि वे लोग यहाँ आसानी से रह लेंगे ? इसकी सम्भावना नहीं। तुम देखना हम दुबारा कब्जा कर लेंगे। इसकी कोई कीमत नहीं कि हमारे कितने आदमी मारे गए, मगर यह तय है कि सम्राट हमारा नेतृत्व करेंगे और हम लोग इसे वापस ले लेंगे। तुम ससझते हो कि हम उन्हें कब्जा जमाये रखने देंगे ? नहीं, कभी नहीं !" और वह फ्राँसीसियों

को सम्बोधन करता हुआ सा आगे कहने लगा : "तुम खाली दीवालों पर कब्जा कर सकते हो, मगर हमने सारी खाइयाँ उड़ा दी हैं...... तुम कुरगान पर अपना झण्डा फहरा सकते हो मगर शहर में घुसने की हिम्मत मत करना ! जरा ठहरे रहो, अभी तो हमें तुमसे सारा हिसाब किताब समझना है—जरा दम तो ले लेने दो ।"

'हम लोग जरूर कब्जा कर लेंगे !' एक दूसरे ने जोर देते हुए कहा ।

सेवास्तोपोल के सारे बुर्ज और मोर्चे जो इतने महीनों से उत्साह से ओतप्रोत हो रहे थे, जिन्होंने इतने महीनों से योद्धाओं को आते और जाते देखा था, एक के बाद एक उन्हें मौत के मुँह में समाते देखा था, और जो इतने महीनों से दुश्मन के प्रति भय, घृणा और अन्त में प्रशंसा की भावना उत्पन्न करते रहे थे—वे सेवास्तोपोल के बुर्ज और मोर्चे इस समय निर्जन दिखाई दे रहे थे । चारों तरफ मौत, निर्जनता और भयानकता का साम्राज्य था—लेकिन शान्ति नहीं थी । हर चीज अब भी नष्ट की जा रही थी । ताजे विस्फोटों से खुदी हुई धरती टूटी हुई तोपों की चरखियों से जो लाशों—रूसी और दुश्मन दोनों की—को दबाए पड़ी थीं, हमेशा के लिए शान्त हो गई भारी लोहे की तोपों से जो भयंकर बल लगा कर गड्ढों में फेंक दी गई थीं और मिट्टी से आधी दबी थी, तथा बमों, तोप के गोलों, और अनगिन्ती लाशों, गड्ढों, टूटी हुई लकड़ी की शहतीरों, सुरक्षा गृहों और भूरे और नीले कोट वाली लाशों से पटी पड़ी थी । और यह सारा वातावरण विस्फोटों की भयंकर चमक में जो काफी देर तक हवा में गूंजते रहते थे, कभी-कभी अशान्ति से भर उठता था और दिखाई देने लगता था ।

दुश्मन ने देखा कि भयानक सेवास्तोपोल में कुछ षडयन्त्र रचा जा रहा था । विस्फोटों और बुर्जों पर छाई हुई मौत की सी शान्ति को देख कर वे काँप उठते थे । मगर उस भयंकर और शान्त

प्रतिरोध को याद कर जिसका उन्हें उस दिन सामना करना पड़ा था वे उस बात का विश्वास करने का साहस नहीं कर सके कि उनका निडर दुश्मन भाग गया है और वे लोग व्यग्रता और असमंजस में उस भयानक रात के बीतने का काँपते हुए इन्तजार करने लगे।

सेवास्तोपोल की सेना, तूफानी अंधेरी रात में गरजते और उफनते हुए समुद्र की भाँति, बिखरती और सिकुड़ती हुई और पूरी की पूरी चौकन्नी होकर काँपती हुई, खाड़ी के किनारे पर, पुल और सेवेरनाया साईड पर हिलती डुलती इकट्ठी होकर धीरे धीरे उस स्थान से दूर हटती चली जा रही थी जहाँ उसने अपने अनेक बहादुर भाई छोड़ दिये थे, उस स्थान से दूर जो जिसका जर्रा छर्रा उसके खून से लथपथ हो रहा था, उस स्थान से दूर जिसे उसने ग्यारह महीनों तक अपने से दूनी ताकत वाले दुश्मन से मोर्चा लेते हुए बचाए रखा था और अब उसे हुक्म मिला था कि बिना लड़े उसे छोड़ दे।

इस आज्ञा की जो पहली प्रतिक्रिया प्रत्येक सिपाही पर हुई वह आश्चर्य और दुख से भरी हुई थी। दूसरी प्रतिक्रिया पीछा किए जाने के भय की थी। जैसे ही उन लोगों ने वह स्थान छोड़ा, जहाँ वे लड़ने के आदी हो चुके थे तो उन्होंने अपने को असुरक्षित अनुभव किया और भयभीत होकर पुल के नीचे वाले अन्धकार में एक दूसरे के ऊपर गिरते पड़ते इकट्ठे होने लगे। पुल तेज हवा के कारण हिल रहा था। एक दूसरे से सटने के प्रयत्न में अपनी संगीनों को आपस में खड़खड़ाती हुई पैदल फ़ौजें, रेजीमेन्टें, गाड़ियां और रक्षक योद्धा आगे बढ़े। घोड़ों पर सवार अफसर अपने सन्देशे लिए उस उफनती हुई भीड़ में होकर आगे बढ़े। वहाँ के निवासी और अर्दली लोग सामान लिए निकल जाने देने के लिए प्रार्थना करने और रोने लगे। तोपखाना अपने पहियों को खड़खड़ाता हुआ तेजी से निकल

जाने के लिए किनारे की तरफ बढ़ा। अपने दूसरे सभी कामों को भूल, इस समय हरेक के दिमाग में स्वरक्षा की स्वाभाविक भावना और इस भयानक स्थान से जल्दी से जल्दी बाहर निकल भागने की भावना ही सर्वोपरि थी। यही भावना उसी तरह उस घायल सिपाही के हृदय में उठी जो अन्य पाँच सौ घायलों के साथ पावलोव्स्की क्यू के पत्थर के फर्श पर पड़ा हुआ था और भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि जल्दी से जल्दी यहाँ से उसका उद्धार कराये; यही भावना उस रक्षक योद्धा ने अनुभव की जो आदमियों की इस भयानक भीड़ में अपनी पूरी शक्ति लगा कर घोड़े पर सवार एक जनरल की तरफ बढ़ने का प्रयत्न कर रहा था; उस जनरल ने भी इसी भावना को अपने हृदय में उठते हुए अनुभव किया जो दृढ़ता के साथ सिपाहियों की जल्दबाजी को रोक रहा था; यही भावना उस मल्लाह ने अनुभव की जो एक आगे बढ़ती हुई बटालियन में फंस गया था और उस भीड़ में जिसकी दम निकली जा रही थी; यही भावना उस घायल अफसर ने अनुभव की जिसे चार सिपाही स्ट्रेचर पर ले जा रहे थे जिन्हें निकोलाएव्स्को तोपखाने के मैदान में रुकने और स्ट्रेचर को नीचे रखने के लिए बाध्य कर दिया गया था; यही भावना उस गोलन्दाज के मन में उठी जिसने अपनी तोप पर सोलह साल तक काम किया था और जो अब, ऊपर से आए हुए एक हुक्म की वजह से, जिसे वह समझ नहीं पाया था, अपने साथियों की मदद से खाड़ी पर खड़ी उस ऊँची चट्टान पर अपनी तोप को धकेले लिए जा रहा था; और उन मल्लाहों ने भी ऐसा ही अनुभव किया जो अपने जहाजों में छेद करने के उपरान्त अब अपनी लम्बी नावों में तेजी के साथ उनसे दूर हट जाने का प्रयत्न कर रहे थे। पुल के दूसरे किनारे पर कदम रखते ही लगभग प्रत्येक सैनिक ने अपनी टोपी उतारी और अपने ऊपर

पवित्र क्रॉस का निशान बनाया। लेकिन बच निकलने की इस भावना के पीछे एक और भावना छिपी हुई थी जो क्रूर, दुखद और अधिक गहरी थी तथा पश्चाताप, लज्जा और क्रोध से मिलती जुलती सी थी। लगभग प्रत्येक सैनिक ने सेवेरनाया साईड से, त्यागे हुए सेवास्तोपोल को मुड़ कर देखते हुए, एक भयानक गहरी साँस खींची और दुश्मन की तरफ घूंसे हिलाये।

दिसम्बर २७
सेन्ट पीतर्सबर्ग